अंक-विद्या (ज्योतिष)

(NUMEROLOGY)

लेखक
ज्योतिष कला-निधि
पण्डित गोपेश कुमार ओझा
एम. ए. एल एल बी.
("हस्तरेखा-विज्ञान", "वर्ष-फल" आदि पुस्तकों के रचयिता)

) ३२)
८)
(हंत) ४०)
५)

प्रकाशक
गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा,
दिल्ली-६
ल्ली ।

प्रकाशक:
गोयल एण्ड कम्पनी
दरीबा कलां,
दिल्ली-६ ।

नवम्बर १९५७
मूल्य तीन रुपया

मुद्रक :
इण्डिया प्रिंटर्स,
एस्पलेनेड रोड,
दिल्ली-६ ।

महाभारत आदि ग्रन्थों के भाष्यकार
आचार्य श्री पं० गंगाप्रसाद जी शास्त्री
तर्करत्न द्वारा प्रस्तुत

सनातन षोडश संस्कार विधि

[भाषा टीका सहित]

भारतीय जीवन में संस्कारों का महत्व किसी से छिपा नहीं है परन्तु प्राचीन परिपाटी के अध्ययन-अध्यापन की शिथिलता से संस्कारों का सम्यक् एवं प्रामाणिक विधि-विधान लुप्त होता जा रहा है। धर्मशास्त्र और कर्मकाण्ड के यशस्वी पंडित शास्त्री जी ने इस ग्रन्थ में संस्कारों से सम्बन्धित सम्पूर्ण विधि संग्रहीत कर दी है जिसके द्वारा साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी सामान्य पूजा एवं हवन आदि के साथ-साथ सोलह-संस्कार बड़ी आसानी के साथ करवा सकता है। सर्वसाधारण की सुविधा के लिए प्रत्येक संस्कार की पूजन सामग्री की पूरी सूची भी देदी गई है। संस्कार में प्रयुक्त होने वाले मंत्र आदि दूर से ही दीख जाने वाले स्पष्ट और मोटे अक्षरों में दिए गये हैं एवं पूजन विधि सरल हिन्दी में बताई गई है। कर्मकाण्ड में अनुराग रखने वाले महानुभावों ने पुस्तक का ऐसा आदर किया है कि अच्छी संख्या में छापने के बाद भी प्रथम संस्करण समाप्ति के निकट पहुँच गया है। उत्सुक सज्जन जल्दी करें नहीं तो दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

बड़े साइज के ३१० पृष्ठ - मूल्य केवल ४) डाक खर्च १)

श्रीमद्भागवत (चूर्णिका टी. सहित)	३४)	श्रीमद्भागवत (भा. टी. सहित)	३२)
निर्णय सिंधु (भा. टी. सहित)	१६)	व्रतार्क (भाषा टीका)	८)
देवी भागवत (भाषा टीका सहित)	४०)	हरिवंश पुराण (भा. टी. सहित)	४०)
हरिवंश पुराण (केवल हिन्दी में)	१६)	शुक्ल यजुर्वेद संहिता	५)

प्रकाशक—**गोयल एण्ड कम्पनी दरीबा, दिल्ली।**

ज्योतिष की कुछ पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य
मानसागरी भा. टी.	८)	बृहत्पाराशर होराशास्त्र भा. टी	१२,१५)
जातकाभरण भा. टी.	६), ४)	भृगुसंहिता महाशास्त्र ११ खण्डों में	५०)
बृहज्जातक भा. टी.	४), ३)	भृगु संहिता पद्धति	७)
ज्योतिषसार भा. टी.	४), ३)	त्रिकालज्ञ ज्योतिष	५)
ज्योतिष विज्ञान	६)	ज्योतिष तत्त्व सम्पूर्ण	५०)
भारतीय ज्योतिष	६)	विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियाँ	४)
केवल ज्ञान प्रश्न चूड़ामणि	४)	प्रत्यक्ष ज्योतिष शास्त्र	४)
जन्मपत्र दीपक	१।)	कर्म विपाकसंहिता	४)
जन्मपत्र व्यवस्था	।।।)	ज्योतिष रत्नाकर	५)
मुहूर्त चिन्तामणि भा. टी.	३), २।।)	दस वर्षीय पंचांग	
ताजक नीलकंठी भा. टी.	३।।), ३)	२०११ से २०२० तक	४)
रत्न धर्मालोक	२।।)	ज्योतिष शास्त्र	३)
कुण्डली दर्पण	१।।)	रमल दिवाकर	४।।)
ग्रह फल दर्पण	१।।)	ग्रहलाघव	३।।)
फलित संग्रह	१)	जैमिनि सूत्र	१।।,२)
जातकालंकार	।।।)	लीलावती	२।।)
लघुपाराशरी	१।), ।।।)	अखंड भाग्यदर्पण	३)
भुवन दीपक	२।), १)	रमलशास्त्र	२)
सूर्यसिद्धान्त	५)	सारावली	८)
फलित प्रकाश	३)	स्त्रीजातक	१।)
जातक तत्त्व	६।।)	नक्षत्र फलदर्पण	३)

इनके अतिरिक्त वेद, पुराण, उपनिषद्, वैद्यक, वेदान्त, ज्योतिष, कर्म काण्ड धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत गीता, जन्म पत्री के फार्म रंगीन व सादा, लग्न पत्रिका इत्यादि भी मिलते हैं ।

पता:—गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली

प्राक्कथन

"वनं समाश्रिता येऽपि निर्ममा निष्परिग्रहाः ।
अपि ते परिपृच्छन्ति ज्योतिषां गति कोविदम् ॥"

जो सर्वसंग परित्याग कर वन का समाश्रय ले चुके हैं, ऐसे रागद्वेष शून्य, निष्परिग्रह मुनिजन–संत-महात्मा भी ज्योतिष शास्त्र वेत्ताओं से भविष्य ज्ञात करने के लिये उत्सुक रहते हैं; तव साधारण संसारी प्राणी की तो चर्चा ही क्या ?

प्रायः इस भविष्य ज्ञान की प्राप्ति ज्योतिष शास्त्र के द्वारा होती है । ज्योतिष शास्त्र अथाह सागर है । जन्म-कुण्डली निर्माण के लिये, जन्म का स्थान, ठीक समय का ज्ञान आदि परमावश्यक हैं । शुद्ध लग्न, भाव स्पष्ट, ग्रह स्पष्ट, मान्दि स्पष्ट मित्रामित्रचक्र, सप्तवर्गी चक्र, दशवर्ग, दशा, अन्तर्दशा, अष्टक वर्ग, सर्वाष्टक वर्ग आदि बनाने में बहुत गणित करना पड़ता है और परिश्रम साध्य है । फलादेश में भी अनेक विचारों का सामञ्जस्य करना पड़ता है । वृहत् ज्योतिष शास्त्र की परिक्रमा लगाना वैसा ही कठिन है जैसा पृथ्वी की परिक्रमा लगाना ।

पृथ्वी की परिक्रमा के सम्बन्ध में पुराणों में एक कथा[1] है कि एक बार स्वामी कार्तिक तथा गणेश जी दोनों ने आग्रह किया कि उनका विवाह हो । स्वामी कार्तिक चाहते थे पहिले उनका विवाह हो तथा गणेश जी चाहते थे पहिले उनका विवाह । तब उनके माता-पिता ने कहा कि जो पहिले पृथ्वी की परिक्रमा पूर्ण कर

---

१. देखिये शिव पुराण (रुद्र संहिता), कुमार खण्ड १९ वाँ अध्याय ।

आवेगा उसी का विवाह पहिले किया जावेगा। स्वामी कार्तिक अपने वाहन मयूर पर चढ़ कर द्रुतगति से चले और देखते-देखते आँखों से ओझल हो गये। गणेश जी का शरीर भारी और वाहन छोटा-सा 'मूषक'। सो विचार में पड़ गये कि कैसे परिक्रमा पूर्ण करूँ? उन्होंने अपने माता-पिता को बैठाया, उनके चरणों का पूजन कर ७ बार माता-पिता की परिक्रमा की और प्रणाम कर कहा कि "मैंने पृथ्वी की परिक्रमा कर ली--भाई एक बार भी परिक्रमा करके नहीं आये। अब पहिले मेरा विवाह कीजिये"। शास्त्रों में माता-पिता का पूजन और परिक्रमा पृथ्वी-परिक्रमा के समान है। इस युक्ति से गणेश जी का विवाह हो गया और उन्हें ऋद्धि, बुद्धि-यह दोनों विश्वरूप प्रजापति की दो सुन्दरी कन्याएँ--पत्नी रूप में प्राप्त हुईं।

कहने का तात्पर्य यह है कि जो सज्जन ज्योतिष शास्त्र की बृहत्परिक्रमा में अक्षम हैं, वह गणेश जी के उपर्युक्त उदाहरण को लेकर "अंक विद्या" का अभ्यास करें तो थोड़े परिश्रम से--केवल अंगरेज़ी की जन्म तारीख, नाम, किंवा प्रश्न से भविष्य का बहुत कुछ शुभाशुभ जान सकते हैं। अंगरेज़ी में Numerology की अनेक पुस्तकें हैं किन्तु हिन्दी में अंक-विद्या (ज्योतिष) की कोई पुस्तक मेरे देखने में नहीं आई। अनेक ग्रन्थों का अध्ययन तथा अनुशीलन कर यह पुस्तक पाठकों के सम्मुख रखी जा रही है।

"शरणं करवाणि कामदं ते चरणं वाणि चराचरोपजीव्यम्।
करुणामसृणैः कटाक्षपातैः कुरुमामम्ब कृतार्थसार्थवाहम्॥

विजया दशमी २०१४
६३ दरियागंज, दिल्ली
टेलीफोन नं०--२३७२८

विनीत
गोपेशकुमार ओझा

विषय सूची

पहला प्रकरण

दूसरा प्रकरण

पांचवां प्रकरण

छठा प्रकरण

सातवाँ प्रकरण

अंक-विद्या (ज्योतिष)

पहला प्रकरण

अंक-विद्या रहस्य

संसार में हम जो भिन्न्-भिन्न वस्तुएँ देखते हैं, उनके अनेक रूप हैं। विविध रंगों के मिलने से नये रंग बन जाते हैं। लाल और पीला मिलाने से नारंगी का रंग बन जाता है। पीला और नीला मिलाने से हरा। इस प्रकार सैकड़ों, हज़ारों रंग बन सकते हैं, परन्तु इनके मूल में वही सात रंग हैं जो इन्द्र धनुष में दिखाई देते है। इन सात रंगों के मूल में भी एक ही रंग रह जाता है जो सफ़ेद, किंवा रंगरहित शुद्ध प्रकाश है। सूर्य की प्रकाश रेखा को 'प्रिज़्म' में पार करने से सात रंग स्पष्ट दिखाई देते हैं। वैसे, सूर्य की किरण शुद्ध उज्ज्वल विनारंग के प्रतीत होती है।

इसी प्रकार संसार की जो विविध वस्तुएँ हमें दिखाई देती हैं उनमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तत्त्व हैं। उनमें तत्वों का सम्मिश्रण भिन्न-भिन्न अनुपात और भिन्न-भिन्न प्रकार से है। किसी में कोई तत्व कम है, किसी में कोई अधिक। परन्तु यह समस्त जगत् केवल पांच तत्वों का प्रपंच है। यह पांच तत्व भी केवल आकाश से उत्पन्न हुए हैं। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी। पृथ्वी का गुण 'गन्ध', जल का

१. त्रिकोण धरातलों का एक घन क्षेत्र।

'रस', अग्नि का 'तेज' (रूप), वायु का 'स्पर्श' और आकाश का गुण 'शब्द' है। जैसे संसार के सभी पदार्थों के मूल में आकाश तत्व है उसी प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि संसार के सभी पदार्थों का मूल गुण 'शब्द' है। इसी कारण शब्द को 'शब्द-ब्रह्म'—अर्थात् परम प्रभु परमेश्वर का प्रतीक माना गया है।

परिणामतः तो सब शब्द ब्रह्म के रूप ही हैं किन्तु भिन्न-भिन्न शब्दों का गुण और प्रभाव भी भिन्न-भिन्न है और प्रत्येक शब्द को अंक या संख्या में परिवर्तित कर उसकी माप की जा सकती है। कोई शब्द (या शब्दावली) ७००० बार आवृत्ति करने पर पूर्णता को प्राप्त होता है तो किसी का १७००० बार आवृत्ति करने पर परिपाक होता है। 'संख्या' और 'शब्द' के सम्बन्ध से हमारे ऋषि-महर्षि पूर्ण परिचित थे, इसी कारण सूर्य के मंत्र का जप ७०००, चन्द्रमा का ११०००, मंगल का १००००, बुध का ९०००, बृहस्पति का १९०००, शुक्र का १६०००, शनि का २३०००, राहु का १८००० और केतु का १७००० जप निर्धारित किया है। किसी देवता के मंत्र में २२ अक्षर[१] होते हैं तो किसी के मंत्र में ३६। 'शब्द' और 'संख्या' का घनिष्ठ वैज्ञानिक सम्बन्ध है।

इसी प्रकार संख्या और क्रिया का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शून्य संख्या (०), निष्क्रिय, निराकार, निर्विकार 'ब्रह्म' का द्योतक है और '१' पूर्ण ब्रह्म की उस स्थिति का द्योतक है, जब वह अद्वैत रूप से रहता है। कहने का तात्पर्य यह कि 'शब्द' और 'संख्या (अंक) में सम्बन्ध होने के कारण—समस्त पदार्थों के मूल में जैसे 'शब्द' है—

१. देखिये 'मंत्र महोदधि' तृतीय तथा एकादशतरंग; पुरश्चर्यार्णव तृतीय भाग

वैसे ही 'अंक' भी। शब्द के मूल—आकाश को—'शून्य' कहते हैं और अंक के मूल को भी 'शून्य'। 'शून्य' से ही शब्द और अंक का प्रादुर्भाव होता है। यदि 'अंक' (संख्या) का किसी वस्तु या क्रिया से सम्बन्ध नहीं होता तो हमारे शास्त्र १०८ मणियों की माला बनाने का विधान नहीं करते। प्रत्येक संख्या का एक महत्व है। २५ मणियों की माला पर जप करने से मोक्ष, ३० की माला से धन सिद्धि, २७ की माला से सर्वार्थ सिद्धि, ५४ से सर्वकामावाप्ति और १०८ से सर्व प्रकार की सिद्धियाँ हो सकती हैं। किन्तु अभिचार कर्म में १५ मणियों की माला प्रशस्त है।[1]

१०८ की संख्या का क्या रहस्य है? सूर्य राशिभ्रमण में जब एक पूरा चक्र लगा लेता है तो एक वृत्त पूरा करता है। एक वृत्त में ३६० अंश होते हैं। इस प्रकार सूर्य की एक प्रदक्षिणा के अंशों की यदि कला बनाई जावे तो ३६०×६०=२१६०० कला हुईं। सूर्य छः मास उत्तर अयन में रहता है और छः मास दक्षिण अयन में। इस हिसाव से २१६०० को दो भागों में विभक्त करने से १०८०० संख्या प्राप्त हुई।

अब दूसरे प्रकार से विचार कीजिये। प्रत्येक दिन में सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक 'काल' का परिमाण ६० घड़ी माना है। १ घड़ी के ६० पल और १ पल के ६० विपल। इस प्रकार एक अहोरात्र में ६०×६०×६०=२१६००० विपल हुए। इसके आधे दिन में १०८००० और इतने ही रात्रि में।

जैसे आजकल की नवीन वैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार रुपये,

---

१. देखिये शारदातिलक का २३वाँ पटल—राघवभट्ट कृत पदार्थादर्श व्याख्या।

पैसे, तोल, माप, थर्मामीटर आदि एक ही दशमलव के आधार पर बनाये जा रहे हैं, वैसे ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने 'काल' और 'संख्या' का समन्वय किया था। इसी के समीकरण और सामञ्जस्य स्वरूप १०८००० की संख्या उपलब्ध हुई और दशमलव की प्रणाली के अनुसार बिन्दु छोड़ देने से १०८ की संख्या प्राप्त हुई। हमारे प्राचीन ऋषियों ने 'शव्द', काल, संख्या आदि सभी का इस प्रकार सामञ्जस्य कर दिया था कि प्रत्येक नामका—नाम के अक्षरों का संख्या पिंड, बनाने से उसके सब गुण उस संख्या से प्रकट हो जाते थे। इसी आधार पर जय-पराजय चक्र आगे ९ वें प्रकरण में दिये गये हैं। ऋणि और धनी—कौन किसका कर्ज़दार है अंक-विद्या, मंत्र-विद्या, आदि से सम्बन्ध रखता है, क्योंकि देना-पावना संख्या में ही होता है।[1]

नाम को 'संख्या में परिवर्तित करना—एक बहुत गंभीर विद्या है। आजकल के वैज्ञानिक प्रत्येक भोज्य पदार्थ को "कैलोरी" में परिवर्तित कर यह बताते हैं कि किस भोजन में कितना शक्ति-वर्धक साधन है। इसी प्रकार किसी नाम को संख्या में परिवर्तित करके यह बताया जा सकता है कि कौन से नाम का व्यक्ति, किससे अधिक शक्तिशाली होगा। प्रत्येक व्यक्ति [illegible] नाम उस व्यक्ति का प्रतीक है। विद्वानों के मत से मनुष्य जब [illegible] हुआ रहता है—तब भी उसके चैतन्य की एक कला जगी हुई रहती है। और उसे सावधान या सतर्क किये [illegible] है। यदि २० मनुष्य एक ही स्थान पर सोये [illegible] .यः जिसका नाम लेकर आवाज़ दी

१. देखिये "तंत्रसार" तथा "चंडी" अंक ४-वर्ष १२-पृष्ठ ११४

जाती है—वही जग जाता है। 'नरपति जय-चर्चा'[1] नामक ग्रंथ में लिखा है कि मनुष्य के उसी नाम का विचार करना चाहिये जिस से उसे, आवाज़ दी जावे तो वह सोता हुआ जग जावे। 'नाम' और नाम की प्रतीक 'संख्या' अनादिकाल से, फलादेश में उपयुक्त होते रहे हैं।

जिस प्रकार रेडियो की सूई जिस 'संख्या' पर स्थिर कर दीजिये उसी 'संख्या' पर प्रवाहित शब्द रेडियो पर सुनाई देने लगते हैं—उसी प्रकार 'संख्या' विशेष और उस 'संख्या' के प्रतीक 'वस्तु' या व्यक्ति में आकर्षण होता है।

अमेरिका में नवीन अनुसंधान द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि बहुत-से प्रकार के कीड़े, अपने सजातीय कीड़ों को सन्देश या संवाद भेज सकते हैं—इसका कारण यह है कि जिस प्रकार एक खास संख्या पर सूई स्थिर करने से रेडियो में आवाज़ आने लगती हैं उसी प्रकार यह कीड़े भी जो संवाद प्रेषित करते हैं उनको उनके सजातीय कीड़े ग्रहण कर सकते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के कीड़ों को एक वड़े बाग़ के अलग-अलग कोनों पर छोड़ा गया है—वह एक ही केन्द्र स्थल पर जाकर मिल जाते हैं। एक खास प्रकार की मक्खी के झुंड को दो स्थानों पर—परस्पर एक दूसरे से कई मील दूर—छोड़ कर देखा गया है कि वे एक [illegible] स्थान पर आकर मिल जाती हैं।[2]

या जुगनू को लीजिये [illegible] जुगनू के पर नहीं होते, नर के होते हैं। दोनों के शरीर से प्रकाश निकलता है किन्तु मादा जुगनू के शरीर से अधिक तेज़ रोशनी [illegible]ती है और इस चमक से

---

१. नरपति चर्चा अध्याय २ पृ० १५
जन्म-पत्रिका विधान पृ० २२५

2. "Number Please" by Dr. United Cross पृ० १४. १५

आकृष्ट होकर नर-जुगनू उसके पास आता है। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में परस्पर क्यों आकर्षण या घृणा का प्रादुर्भाव होता है—यह स्थूल दृष्टि से नहीं जाना जा सकता। किन्तु सब के मूल में वैज्ञानिक रहस्य है।

जंगल में दाना डाल दीजिये। चिड़िया और कबूतर आजावेंगे। चीनी फैला दीजिये; चींटियाँ इकट्ठी हो जावेंगी। मरा हुआ जानवर डाल दीजिये, गृद्ध और चील आकाश को आच्छादित कर लेंगी। और कहीं रात्रि में बकरा, या पाड़ा बाँध दीजिये तो शेर, शिकार के लिये आजावेगा। चीनी पर शेर नहीं आता। बँधे हुए बकरे की खुशबू से चिड़ियां नहीं आतीं। इसी प्रकार '१' द्योतक की संख्या या वस्तु की ओर उसके सहधर्मी आकृष्ट होते हैं। '६' द्योतक संख्या या वस्तु या व्यक्ति की ओर '६' के सहधर्मी आकृष्ट होंगे; अन्य वर्ग के नहीं। जिन व्यक्तियों या वस्तुओं में साधर्म्य होता है उनमें परस्पर आकर्षण भी होता है, यह सामान्य नियम है। एक बच्चा यह नहीं समझता कि भिन्न-भिन्न ऋतुओं का भिन्न-भिन्न वस्तुओं और व्यक्तियों से क्या सम्बन्ध है, परन्तु जानने वाले जानते ही हैं कि आम गर्मी में पकते हैं और संतरे जाड़े में।

कम उम्र का बच्चा, चिड़िया, कमेड़ी, कबूतर सब को 'चिड़िया' कहता है; परन्तु चिड़िया चिड़े के साथ ही जाकर रहेगी, कबूतर कबूतरी के साथ ही। इसी प्रकार अंक-ज्यौतिष से अनभिज्ञ सब अंकों को एक-सा समझते हैं; परन्तु इस विद्या को जानने वाले यह जानते हैं कि '१' मूल-अंक वाले व्यक्ति को '१' मूल-अंक शुभ जावेगा और उसकी विशेष मित्रता भी '१' मूल अंक वाले व्यक्ति से होगी तथा '६' मूल अंक वाले व्यक्ति को '६'

मूल-अंक की संख्या शुभ जावेगी और उसकी विशेष मित्रता भी '६' मूल-अंक वाले व्यक्ति से होगी।

नाम और 'संख्या'—नाम और 'जन्म-तारीख' या यह कहिये कि व्यक्ति, वस्तु और संख्या में जो सामञ्जस्य है उसी कारण किसी व्यक्ति के जीवन में या यों कहिये किसी राष्ट्र के जीवन में किसी 'संख्या' विशेष का महत्व हो जाता है। इसको हम केवल 'कल्पना' या 'संयोग' कह कर नहीं टाल सकते। आगे के प्रकरणों में इसके अनेक उदाहरण दिये गये हैं।

मकड़ी जाला बुनती है—बुनते समय कोई क्रम दिखाई नहीं देता, परन्तु वनने पर क्रम नज़र आता है। मधु मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं; बाहर से कोई क्रम नज़र नहीं आता परन्तु भीतर कितना अधिक और सूक्ष्म क्रम रहता है, यह केवल इस विषय की पुस्तकों को पढ़ने से ही मनुष्य जान सकता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे एक बच्चे की दृष्टि में—डाकिये के हाथ की सब चिठ्ठियाँ एक सी मालूम होती हैं, परन्तु डाकिया उन्हें मकान के नम्बर और नाम के क्रम से बाँट देता है, उसी प्रकार हमारा जीवन—प्रत्येक का भिन्न-भिन्न 'अंकों' के क्रम से चलता है और जब वह 'संख्या'—उस 'संख्या' का द्योतक वर्ष या दिन आता है, तो हमारे जीवन में महत्त्व पूर्ण घटना होती है। इस अंक-विद्या का पूरी तरह उद्घाटन करना संभव नहीं। भगवत् गीता में १८ अध्याय ही क्यों हैं ? महाभारत में १८ पर्व ही क्यों ? १८ पुराणों की संख्या का वैज्ञानिक आधार क्या है ? इस '१८' की योग संख्या १+८=९ है। यह क्यों ? हमारे ऋषि मुनि दिव्य ज्ञान और ऋतम्भरा प्रज्ञा के कारण जो पद-चिह्न छोड़ गये हैं, हम तो केवल

उनका अनुसरण मात्र ही कर सकते हैं। श्रीमद् भागवत में १२ स्कन्ध ही क्यों हैं ? दशम स्कन्ध इतना बड़ा होगया कि उसे 'पूर्वार्ध' और 'उत्तरार्ध—इन दो खंडों में विभाजित करना पड़ा। ऐसा न करके १३ स्कन्ध ही क्यों न कर दिये ? रामायण का नवाह (९ दिन में पारायण) तथा भागवत का सप्ताह (७ दिन में पारायण) क्यों ? गायत्री में २४ अक्षर ही क्यों हैं ? विवाह के समय 'सप्त-पदी' ही क्यों होती है। गणेश की चतुर्थी, दुर्गा की अष्टमी, सूर्य की सप्तमी, विष्णु की एकादशी तथा रुद्र की प्रदोष-व्यापिनी त्रयोदशी ही क्यों ?—आदि अनेक ऐसे अंक-विद्या सम्बधी वैज्ञानिक विषय हैं जिनका विवेचन करना, इस छोटी सी पुस्तक में संभव नहीं। अंक-विद्या का रहस्य इतना गंभीर है कि इसमें जितना अधिक नीचे उतरेंगे उतने ही बहुमूल्य रत्न हाथ लगेंगे। यदि आप इसके नियमों का अध्ययन कर, अपने स्वयं की जीवन की घटनाओं से यह नतीजा निकाल सकें कि कौन से दिन, और तारीख़ आप को 'शुभ' या 'अशुभ' जाती हैं तो केवल इस ज्ञान से आप अपने को बहुत लाभ पहुँचा सकते हैं। हाँ, यह कह देना आवश्यक है कि जिस प्रकार एक साधारण नियम होता है और उसका अपवाद होता है; उसी प्रकार अंक-विद्या के जो साधारण नियम बताये गये हैं उनके अप-वाद भी होते हैं। कभी-कभी उस अंक वाले दिन या वर्ष में, वह 'अंक' तो शुभ फल दिखाने की चेष्टा करता है किन्तु किसी अन्य ग्रह के प्रभाव के कारण फल ठीक नहीं बैठता। इससे अनुत्साहित नहीं होना चाहिये। गंभीर अध्ययन तथा धैर्य पूर्वक लम्बे समय तक फल मिलाने से—कौनसा 'अंक' शुभ है कौन सा अशुभ—यह अनुभवसिद्ध हो जाता है।

दूसरा प्रकरण

क्या अंक-विद्या में कुछ सत्यता है ?

बहुत से लोग इस बात में विश्वास नहीं करते कि कुछ समय के बाद एक-सी घटना घटित होती है। परन्तु बहुत बार ऐसा देखा गया है कि आज जो घटना घटित हुई ठीक वैसी ही कुछ वर्ष पूर्व हुई थी। बहुत से लोग यह तर्क करते हैं कि ऐसा केवल संयोगवश हो गया। परन्तु बहुत बार जब उतने ही वर्ष के फासले पर वारंबार एक-सी घटना घटित हो तो उसे हम केवल 'संयोगवश' कह कर नहीं टाल सकते। नीचे इसी प्रकार के एक घटनाचक्र की कुछ प्रधान-प्रधान घटनाओं का विवरण दिया जाता है। इसको देखने से विदित होगा कि एक या दो नहीं परन्तु एक के बाद दूसरी—दसों घटनाएँ ५३९ वर्ष के अन्तर पर घटित हुईं।

(क) सेंट लूई का जन्म (२३ अप्रैल २+३=५) सन् १२१५
५३९
लूई XVI का जन्म (२३ अगस्त २+३=५) सन् १७५४

(ख) सेंट लूई की बहिन 'ईसा बेला' का जन्म सन् १२२५
५३९
लूई XVI की बहिन 'ईसा बेला' का जन्म सन् १७६४

(ग) सेंट लूई के पिता की मृत्यु सन् १२२६
५३९
लूई XVI के पिता 'डाफ़िन' की मृत्यु सन् १७६५

(घ) सेंट लूई की बादशाहत का प्रारंभिक काल	सन् १२२६
	५३९
लूई XVI की बादशाहत का प्रारंभिक काल	सन् १७६५
(ङ) सेंट लूई का विवाह	सन् १२३१
	५३९
लूई XVI का विवाह	सन् १७७०
(च) सेंट लूई को वयस्काधिकार प्राप्त हुए	सन् १२३५
	५३९
लूई XVI गद्दी नशीन हुए	सन् १७७४
(छ) विजेता सेंट लूई और इंग्लैण्ड के बादशाह हेनरी III में परस्पर युद्ध के बाद सन्धि	सन् १२४३
	५३९
विजेता लूई और इंग्लैण्ड के बादशाह जार्ज III में सन्धि	सन् १७८२
(ज) एक पूर्व देशीय राजकुमार ईसाई बनने के लिये सेंट लूई के पास आया	सन् १२४९
	५३९
एक पूर्व देशीय राजकुमार ने उपर्युक्त कार्य के लिये अपना राजदूत लूई XVI के पास भेजा।	सन् १७८८
(झ) सेंट लूई की हार। उसके साथियों का उसे छोड़ देना और उसका बन्दी होना	सन् १२५०
	५३९
लूई XVI का उसके दल ने परित्याग कर	सन् १७८९

दिया; वह स्वयं भागा किन्तु गिरफ़्तार कर लिया गया।

(ञ) नवीन धर्मवादियों द्वारा क्रान्ति सन् १२५०
५३९
'जेकब' धर्मवादियों द्वारा धार्मिक क्रांति सन् १७८९

(ट) सेंट लूई की माता (राजमाता) का देहान्त सन् १२५३
५३९
फ्रांस से 'सफेद लिली' का अंत सन् १७९२

(ठ) सेंट लूई ने 'जेकोबियन' (मत-परिवर्तन) कर विश्राम चाहा सन् १२५४
५३९
'जेकोबियन' लोगों द्वारा लूई XVI का अंत सन् १७९३

उपर्युक्त विवरण अंग्रेजी की पुस्तक से लिया गया है * और यह स्पष्टतया प्रतिपादित करता है कि फ्रांस के दो बादशाहों के जीवन में—५३९ वर्ष के अन्तर पर बिल्कुल एक सी घटनाएँ घटित हुईं।

सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक विक्टर ह्यूगो ने इस ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया है कि कई बार एक सा घटनाक्रम कुछ वर्षों के बाद दोहराया जाता है और अपने इस कथन की पुष्टि में उसने निम्नलिखित वृत्त लिखा है :—

(क) ड्यूक दी बेरी चार्ल्स दशम का पुत्र था। इसने एक विदेश की राजकुमारी से विवाह किया और १३ फरवरी सन्

* Complete Book of the Occult and Fortune Telling by M. C. Poinsot, पृष्ठ ४१४-४१५।

१८२० को ड्यूक का कत्ल हुआ (इसी फ़रवरी महीने में लूई फ़िलिप का पतन हुआ था)। ड्यूक दी बेरी ने यह चाहा था कि वह सिंहासन छोड़ दे और उसका पौत्र, जिसकी १० वर्ष की अवस्था थी, बादशाह मान लिया जाय। परन्तु उसने यह निर्णय इतनी देर से किया कि वह कामयाब न हो सका। सन् १८३० की रक्त-क्रान्ति ३ दिन तक रही। इसका पिता चार्ल्स दशम ७४ वर्ष की अवस्था में सिंहासन च्युत हुआ—इंग्लैण्ड चला गया और वहाँ देश निकाले की हालत में मारा गया।

(ख) ड्यूक दी ओरलिअन्स, लूई फ़िलिप का लड़का था। उसने एक विदेश की राजकुमारी से विवाह किया और १३ फरवरी १८५२ को दुर्घटना से मरा। इसी फरवरी महीने में लूई फिलिप का पतन हुआ था। ड्यूक ऑफ़ ऑरलियन्स ने चाहा कि वह सिंहासन छोड़ दे और उसका पौत्र, जिसकी आयु १० वर्ष की थी, बादशाह मान लिया जाय। परन्तु उसने यह निर्णय इतनी देर से किया कि वह कामयाब न हो सका। सन् १८४८ की रक्त क्रान्ति ३ दिन तक रही। इसके पिता लूई फ़िलिप ७४ वर्ष की अवस्था में सिंहासनच्युत हुआ—इंगलैंड चला गया और वहाँ देश निकाले की हालत में मारा गया।

ऊपर के विवरण से स्पष्ट है कि ३२ वर्ष के अन्तर पर बिल्कुल एक-सा घटना क्रम हुआ। यहूदियों के प्रारम्भिक इतिहास का आधार '७' की संख्या मानी गई है। उनके धार्मिक इतिहास में ७, तथा ७×७ (=४९) तथा, ७×७० (=४९०) इन संख्याओं का विशेष महत्व है। 'वेबीलोन' में इनकी परतंत्र स्थिति ७० वर्ष रहेगी—यह घटना से बहुत पूर्व ही भविष्यवाणी कर दी गई थी।

और 'जेरूसेलम' का ध्वंस तथा उनके वहाँ पुनः जमने में ७×७०=४९० वर्ष लगेंगे इसकी भविष्यवाणी भी डेनियल ने कर दी थी। हेब्रू जाति के जन्म से 'कनान देश' प्रवेश में उन्हें ४९० वर्ष लगे। जोशुआ ने जब 'कनान देश' पर विजय की, उसके ४९० वर्ष बाद 'सॉल' के अधीन प्रथम यहूदी राज्य स्थापित हुआ। 'सॉल' इनका प्रथम बादशाह था। इसके समय से ठीक ४९० वर्ष बाद, नेबूचद्नेज़ार ने जेरुसेलम पर विजय प्राप्त की। और इस तिथि के ठीक ४९० वर्ष बाद रोमवासियों ने जेरुसेलम को नष्ट किया। '४९०' वर्ष के 'काल चक्र' के आधार पर—यह घटना कब घटित होंगी। इनकी भविष्यवाणी बहुत पूर्व की जा चुकी थी।

सन् ७० ईस्वी में टिटस ने इनका मन्दिर नष्ट किया। ७० वर्ष बाद रोमवासियों के विरुद्ध इनका द्वितीय विप्लव हुआ। यहूदी जाति छिन्न-भिन्न हो गई। ७०×७=४९० वर्ष तक यह लोग मारे मारे फिरते रहे। दूसरे ४९० वर्ष का 'काल चक्र' भी इनके लिये प्रतिकूल रहा और इन पर जगह जगह अत्याचार ही होता रहा। ९८० वर्ष (४९०+४९०=९८०) व्यतीत हो जाने पर मुस्लिम सत्ता और शक्ति ह्रासोन्मुख हुई और यहूदियों का प्रभुत्व मध्य एशिया में बढ़ने लगा। इसके ४९० वर्ष बाद 'अमेरिका का पता लगा। अमेरिका का पता सन् १४९२ में लगा और इस तारीख से अग्रिम ४९० वर्ष में अर्थात् सन् १९८० तक यहूदी लोग पुनः अपना राज्य स्थापित कर पुनः अत्यन्त शक्तिशाली हो जावेंगे यह भविष्यवाणी 'कीरो' ने की थी। 'कीरो' की भविष्यवाणी के आधार पर पेलिस्टाइन (फिलिस्तीन) तथा मिश्र देश दोनों में आर्थिक उन्नति और औद्योगिक तथा व्यावसायिक समृद्धि—यहूदियों तथा

उनके सहयोगियों द्वारा होगी। 'कीरो' ने यह भी भविष्यवाणी की है कि जर्मनी और इंगलैण्ड एक दूसरे के मित्र हो जावेंगे और फिलिस्तीन तथा मिश्र में बहुत अधिक तादाद में अपनी अपनी फौजें भेजेंगे। रूस, चीनी तथा तारतारी फौजों को काम में लावेगा और सब मुस्लिम जातियाँ इस संघर्ष में सम्मिलित होंगी। अस्तु[१]

यहाँ हमारा मुख्य विषय है 'काल चक्र'। जिस प्रकार सूर्योदय के बाद बारह घण्टे दिन रहता है और फिर बारह घण्टे रात्रि; इसके बाद पुनः दिन और रात्रि। उसी प्रकार देशों तथा जातियों के विकास अभ्युदय, उत्थान और पतन में भी कभी कभी हम 'काल चक्र' का पता लगा सकते हैं और उसके आधार पर भविष्य में होने वाली घटनाओं का पता लगा सकते हैं—प्रस्तुत पुस्तक का प्रधान विषय यही है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में—इस क्रम का—"अंकों" या संख्या द्वारा पता कैसे लगाया जावे।

कभी-कभी यह देखा गया है कि कोई संख्याविशेष या अंक-विशेष, किसी व्यक्ति या राष्ट्र-विशेष के जीवन से इतना सम्बद्ध रहता है कि उसे केवल 'संयोग' कह कर नहीं टाल सकते। बहुत से लोग १३ को अशुभ अंक मानते हैं। इसका कारण यह है कि ईसा मसीह की मृत्यु के पहले जो खाना हुआ उसमें १३ व्यक्ति थे। ईसाइयों में यह बहम बहुत प्रचलित है। बहुत से होटल के मालिक अपने होटल के कमरों पर नं० डालते समय १२ के बाद

---

१. विशेष विवरण के लिए देखिये Hebrew Astrolojy by Sepharial, पृष्ठ ६२-६३।

१. Cheiro's World Predictions Future of Jews foreshadowed पृष्ठ १६१

१२ A फिर १४, १५—इस क्रम से आगे के कमरों पर नम्बर डालते हैं। १३ का नम्बर इस कारण नहीं डालते कि बहुत से मेहमान १३ नं० के कमरे से घबराते हैं।

आगे के प्रकरण में (देखिये प्रकरण ३) बताया गया है कि अंक-विद्या में यदि कोई अंक ६ से अधिक हो तो उसके विविध अंकों को जोड़ कर जो अंक बने वह मूल-अंक कहलाता है। इस पद्धति के अनुसार अमेरिका का मूल-अंक १३=१+३=४ प्रतीत होता है क्योंकि '१३' की संख्या का अमेरिका से घनिष्ठ सम्बन्ध है। '१३' के दोनों अंक '१' तथा '३' को जोड़ने से १+३=४ चार बनता है। ४ का सम्बन्ध आधुनिक वैज्ञानिकों ने 'हर्शल' ग्रह से माना है। 'हर्शल' का बिजली, नवीन आविष्कारों तथा द्रुत प्रगति से विशेष सम्बन्ध है और अमेरिका इन बातों के लिए प्रसिद्ध है ही। यह भी आगे तीसरे प्रकरण में बतलाया गया है कि १ तथा ४ अंकों की '२' तथा '७' अंकों से भी सहानुभूति है।

(क) वाशिंगटन प्रथम अमेरिकन प्रेसीडेन्ट का जन्म दिवस	२२	फरवरी	(२+२=४)
(ख) स्वतन्त्रता का ऐलान	४	जुलाई	=४
(ग) जार्ज तृतीय (जिसके राज्य काल में अमेरिका से युद्ध हुआ) का जन्म दिन	४	जून	=४
(घ) कॉन्टिनेन्टल कांग्रेस	१०	मई	=१
(ङ) सिविल महायुद्ध की प्रथम आज्ञा	१३	अप्रैल	=४
(च) समतर किले का पतन	१३	अप्रैल	=४

(छ)	डोनाल्डसन किले का युद्ध	१३	फरवरी	=४
(ज)	फ्रेडरिक्सवर्ग का युद्ध	१३	दिसम्बर	=४
(झ)	एडमिरल डेवी का मनीला खाड़ी में प्रवेश	१	मई	=१
(ञ)	'मनीला' पर विजय और कब्ज़ा	१३	अगस्त	=४
(ट)	प्रेसीडेन्ट वुडरो विल्सन का जन्म दिन	२८	दिसम्वर	=१
(ठ)	प्रेसीडेंट विलसन का फ्राँस में आगमन	१३	दिसम्बर	=४
(ड)	प्रथम महायुद्ध के समय जहाज़ी बेड़े की प्रारम्भिक यात्रा	१३	जून	=४
(ढ)	जनरल पार्शिंग का जन्म दिन	१३	सितम्बर	=४
(ण)	सेंट मितेल का निर्णयात्मक युद्ध	१३	सितम्बर	=४
(त)	'स्वतन्त्रता' ऐलान करने वाले नेता जोसेफ़ जेफ़रसन का जन्म	२	अप्रैल	=२
(थ)	जोसेफ जेरफ़सन की निधन तिथि	४	जुलाई	=४
(द)	प्रेसीडेन्ट मेक्किनले का जन्म दिन	२९	जनवरी	=२
(ध)	स्पेन से महायुद्ध की घोषणा	२०	अप्रैल	=२

(न) प्रेसीडेन्ट मोनरो (जिसके नाम से 'मोनरो-
सिद्धान्त' सुविख्यात है) का जन्म दिन २८ अप्रैल =१

(प) प्रेसोडेन्ट मोनरो की निधन तिथि ४ जुलाई=४

'१३' की संख्या 'नवीनता' की प्रतीक है। अमेरिका 'नई दुनिया' नाम से ही नहीं--कार्य क्रम से भी नवीन प्रगति वाला है। इसका आदर्श वाक्य भी नवीनता का प्रतिपादक 'Novus Ordo Seclorum' है।[१]

जॉर्ज वाशिंगटन का प्रारम्भिक सत्कार १३ तोपों की सलामी से किया गया। अमेरिका की जो राष्ट्रीय ध्वजा है उसमें १३ पत्तियाँ हैं, १३ बाण हैं, 'ईगल' के ऊपर १३ सितारे हैं और 'ईगल' के प्रत्येक डैने में १३ पंख हैं। जब अमेरिका सर्वप्रथम राष्ट्र हुआ, तब उसमें १३ राज्य थे और १३ प्रतिनिधियों ने स्वतन्त्रता-घोषणा के राज्य-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। अमेरिकन झंडे में १३ ही धारियाँ हैं।

'कीरो' विश्व-विख्यात ज्योतिषी, हस्तरेखा विशारद तथा अंक-विद्या का पारंगत विद्वान् था। उसने श्री एच. सी. शेर्मन नामक व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि श्री शेर्मन की अपनी भावी पत्नी मिस वीक्स से प्रारम्भिक मुलाकात १३ तारीख़ को हुई, उसने विवाह का प्रस्ताव १३ तारीख को किया और मिस वीक्स ने विवाह की स्वीकृति भी १३ तारीख को ही दी। १३ जून सन् १९१३ को दिन के दस बजकर १३ मिनट पर वे विवाह-वेदी पर बैठे। पति-पत्नी दोनों की जन्म तारीखें भी १३ ही थीं। विवाह में १३ मेहमान आये और वधू के हाथ में जो गुलदस्ता था, उसमें १३ गुलाब के फूल थे।

---

१. Cheiro's World Predictions, पृष्ठ ११२।

एक अन्य सज्जन सेमुअल स्टोरे ने लिखा है कि उसके जीवन में '१३' की संख्या का बहुत महत्व रहा। वह १३ जनवरी १८४० (१+८+४+०=१३) को पैदा हुआ। वह १३ वर्ष की आयु से कमाने लगा और उसने प्रथम बार २६ जनवरी (१३×२) को राजनैतिक भाषण दिया। राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने के १३ वर्ष बाद वह पार्लियामेण्ट का सदस्य चुना गया। १३ वर्ष तक प्रथम पत्नी के साथ वैवाहिक जीवन रहा। उसकी पत्नी २६ तारीख (१३×२) को मरी। वह ३ वर्ष तक 'मेयर' पद पर तथा १० वर्ष 'चेअरमैन' पद पर—इस प्रकार कुल १३ वर्ष पदाधिकारी रहा। ५८ वर्ष की अवस्था में (५+८=१३) उसने द्वितीय विवाह किया। विवाह के समय सन् भी १८९८=(१+८+९+८=२६ =१३×२) था। वह लिवरल दल का सदस्य १३×३=३९ वर्ष तक रहा। सन्डरलैण्ड के चुनाव में उसे १२३३४ वोट (१+२+३ +३+४=१३) प्राप्त हुई। उसके जीवन में महत्वपूर्ण वर्ष वही थे जिनमें १३ का भाग पूरा पूरा लग सके (अर्थात् १३, १३×२=२६ १३×३= ३९, १३×४=५२)।

इस प्रकार '१३' की संख्या के अनेक उदाहरण अनेक पुस्तकों में भरे पड़े हैं। सुप्रसिद्ध लेखक एम. सी. पोइनसोट[१] ने लिखा है कि Paul Des Chanel १३ तारीख को पैदा हुआ। उसका विवाह १३ तारीख शुक्रवार को हुआ। १३ तारीख को चेम्बर ने इन्हें प्रेसीडेन्ट के पद के लिए चुना। इनके नाम में १३ ही अक्षर थे।[१]

हेनरी क्रिस्टेमे कर्स के नाम में अंग्रेज़ी वर्णमाला के १३ अक्षर थे। वह १३ अक्तूबर को पैदा हुए और उन्हें विश्व-विद्यालय से साहित्य

१. The Complete Book of the Occult पृष्ठ ४१२।

की उपाधि १३ तारीख़ को प्राप्त हुई। उनकी कृति 'मार्था' १३ तारीख़ को स्वीकृत हुई और उसका रिहर्सल भी १३ तारीख़ को हुआ। उनकी एक अन्य कृति १३ तारीख़ को पेरिस में दिखाई गई और पुनः ब्रूसेल्स नामक नगर में उसकी पुनरावृत्ति १३ तारीख़ को की गई। उनकी अन्य कृतियां भी--प्रत्येक—१३ तारीख़ को ही स्वीकृत हुईं और १३ तारीख़ को ही उन्हें विशिष्ट सम्मान की उपाधि से विभूषित किया गया।

अब १३ तारीख़ के सम्बन्ध में एक उदाहरण ऐसा दिया जाता है जहाँ १३ ने अशुभ प्रभाव दिखाया हो। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो ने लिखा है कि जब सन् १८७१ में वह फ्राँस की राष्ट्रीय असेम्बली के लिये रवाना हुए तो १३ (फरवरी) तारीख़ थी। जिस डब्बे में वह गये उसमें १३ व्यक्ति थे और जब वह 'वोरदू' नगर में पहुँचे तब नं० १३ के मकान में उन्हें ठहराया गया। १३ मार्च की रात्रि को उन्हें बिलकुल नींद नहीं आयी। वह बेचैनी से करवटें बदलते रहे और विचार करते रहे कि जनवरी से---लगातार--'१३' की संख्या उनका पीछा कर रही है। उसी समय उन्हें होटल के अध्यक्ष ने बुलाया और विक्टर ह्यूगोसे कहा कि "दिल को कड़ा कर लीजिये। जिस चार्ल्स ह्यूगो की प्रतीक्षा में आप ठहरे हैं, उसकी मृत्यु का समाचार आया है !"

कहने का तात्पर्य यह है कि कोई संख्या सर्वथा शुभ या सर्वथा अशुभ नहीं होती—

किसी का कन्दे नगीने में नाम होता है
किसी की उम्र का लबरेज़ जाम होता है।

इस दुनिया में शामो सहर
किसी का कूच किसी का कयाम होता है।

किसी व्यक्ति के लिये कोई दिन बहुत शुभ होता है—वह शासन सत्तारूढ़ होता है, परन्तु उसी दिन उसके प्रतिद्वन्द्वी को फाँसी लगाई जाती है। जो किसी एक के लिये 'शुभ' वही किसी दूसरे के लिये 'अशुभ' अंक हो जाता है। अंग्रेजी इतिहासकारों ने तारीख़ की 'संख्या' पर बहुत गवेषणात्मक अध्ययन किया है। हमारे भारतीय इतिहास तथा महापुरुषों की जीवनी में इस प्रकार की गवेषणा नहीं की गई है। अस्तु कोई वैज्ञानिक सिद्धान्त चाहे यूरुप में प्रतिपादित किया जावे चाहे भारत में, उसकी वैज्ञानिकता में अन्तर नहीं आता। यूरुप के इतिहास से, १४ की संख्या की पुनरावृत्ति का एक घटना-क्रम संक्षेप में यहाँ दिया जाता है :—[१]

(क) फ्राँस के प्रथम बादशाह का राज्याभिषेक १४ मई सन् १०२९ को हुआ और फ्राँस का अन्तिम बादशाह हेनरी १४ मई १६१० को मारा गया। फ्राँस तथा नवारे के १४ वें बादशाह Henri de Bourbon के नाम में १४ अक्षर थे। फ्राँस का बादशाह हेनरी १४ दिसम्बर सन् १५५३ को पैदा हुआ। ईसामसीह के जन्म के १४००+१४ दशक (१४०)+१४ वें साल में :

$$
\begin{aligned}
१४ \times १०० &= १४०० \\
१४ \times १० &= १४० \\
१४ \times १ &= \underline{१४} \\
& \quad १५५४
\end{aligned}
$$

1. "Research in the Efficiency of Dates and Names in the Annals of Nations"

अर्थात् १५५३ वर्ष पूरे हो गये थे और १५५४ वां वर्ष चल रहा था।

१५५३ वर्ष का मूल अंक भी १४ ही होता है : १+५+५+३=१४।

१४ मई १५५४ को बादशाह हेनरी ने एक आज्ञापत्र निकाला। इसी कारण-परम्परा से १४×४=५६ वें वर्ष में वह वह क़त्ल किया गया।

(स्थानाभाव के कारण इस विषय का पूर्ण विवरण यहाँ नहीं दिया जा रहा है।)

१४ मई १५५२ को हेनरी चतुर्थ की प्रथम पत्नी पैदा हुई थी। १४ मई १५८८ को ड्यूक आव गाइज़ ने हैनरी तृतीय के विरुद्ध बग़ावत की। १४ मार्च १५६० को हैनरी ने ईवरी के प्रसिद्ध युद्ध में विजय प्राप्त की। १४ मई १५६० को हेनरी चतुर्थ पेरिस की लड़ाई में हारा। १४ नवम्बर १५६२ को फ्रेंच पार्लियामेंट ने कानून पास किया। इसके अनुसार भविष्य के लिये उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार हेनरी चतुर्थ से लेकर रोम के पादरियों को दे दिया गया। १४ दिसम्बर को ड्यूक आव सेवोय ने हेनरी चतुर्थ को आत्म समपर्ण किया। १४ सितम्बर को डाफिन (जो बाद में लूई XIII के नाम से प्रसिद्ध हुआ) का ईसाई मतानुसार नामकरण संस्कार किया गया। १४ मई १६१० को बादशाह का क़त्ल किया गया।[१]

इस प्रकार और बहुत सी घटनाएँ दी गई हैं जिनमें १४ की संख्या बारंबार आती हैं। वास्तव में जो फ्रेंच इतिहास से जानकारी रखते हैं वही उपर्युक्त घटनाओं के महत्व का असली मूल्यांकन कर

१. Complete Book of the Occult, पृष्ठ ४१३।

सकते हैं। उन समस्त घटनाओं के महत्व पर प्रकाश डालना इस छोटीसी पुस्तक में सम्भव नहीं। पुस्तकों में अंक-विद्या के प्रमाणमें सैकड़ों उदाहरण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के जीवन से संकलित कर अंग्रेज़ ज्योतिषियों ने दिये हैं। यहाँ केवल बानगी के तौर पर कुछ उदाहरण दिये गये हैं।

इस विषय में कहना केवल यह है कि बहुत बार किसी-किसी के जीवन में किसी तारीख़-विशेष या अंक-विशेष का महत्व पाया जाता है। यदि हम अपने-अपने जीवन की गत घटनाओं का अध्ययन कर, उस अनुभव तथा अंकविद्या के मूल नियमों के आधार पर अपने भविष्य के विषय में कुछ जान सकें तो हमें कितना लाभ हो ?

साधारण जनता ज्यौतिष-शास्त्र पारंगत नहीं हो सकती परन्तु अंक-विद्या के नियम इतने सरल हैं कि साधारण पढ़ा लिखा मनुष्य भी इसे अपने जीवन में लागू कर लाभ उठा सकता है। बहुत बार जन्म-कुण्डली के अन्य ग्रहों के प्रभाव के कारण अंक-विद्या के नियम सर्वथा लागू न हों—या किसी-किसी के जीवन में अनेक ग्रहों के प्रबल प्रभाव के कारण—कई अंकों की प्रधानता हो और किसी 'अंक'-विशेष का नियम दिखाई न दे, किंतु इससे अंक-विद्या के मूल सिद्धान्त में कोई त्रुटि नहीं होती। नियम होते हैं और उनके अपवाद भी होते हैं। इस पुस्तक को पढ़ कर इसके नियमों को अपने तथा अपने परिचित व्यक्तियों के जीवन में लागू कर देखिये कि कितनी अधिक मात्रा में यह अंक-विद्या आपको लाभ पहुँचाती है।

---

१. Curious Myths of the Middle Ages by Sabine Baring Gould.

३ रा प्रकरण

'मूल अंक' बनाने की विधि और उनका प्रभाव

अब अंग्रेजी ज्योतिष के आधार पर यह बताया जाता है कि यदि किसी तारीख में एक से अधिक अंक हों तो उनको जोड़ कर मूल अंक कैसे बनाया जाए। १ से लेकर ९ तक तो मूल अंक कहलाते हैं। इसके बाद के अंकों को निम्नलिखित प्रकार से जोड़कर मूल अंक बनाने चाहिएँ :—

१० = १ + ० = १	२० = २ + ० = २
११ = १ + १ = २	२१ = २ + १ = ३
१२ = १ + २ = ३	२२ = २ + २ = ४
१३ = १ + ३ = ४	२३ = २ + ३ = ५
१४ = १ + ४ = ५	२४ = २ + ४ = ६
१५ = १ + ५ = ६	२५ = २ + ५ = ७
१६ = १ + ६ = ७	२६ = २ + ६ = ८
१७ = १ + ७ = ८	२७ = २ + ७ = ९
१८ = १ + ८ = ९	२८ = २ + ८ = १०
१९ = १ + ९ = १०	

यदि हमें २९ का मूल अंक निकालना हो तो २९=२+९=११ इस प्रकार दो अंकों की संख्या ११ आ जाती है। इसे उपर्युक्त क्रम से फिर जोड़ना चाहिए, १+१=२; इस प्रकार २९ का मूल अंक २

हुआ । ३० का ३+०=३ तथा ३१ का ३+१=४ हुआ । किसी भी तारीख़ का या किसी भी संख्या का मूल अंक ज्ञात करने का तरीका यह है कि उसमें ९ का भाग दीजिए । जो शेष बचे वही मूल अंक है । यदि शेष ० बचे तो मूल अंक ९ होगा ।

अंक १

किसी भी महीने में ३१ से अधिक तारीख़ नहीं होती, इस कारण ३१ तक की संख्या के मूल अंक बनाना यहाँ बता दिया गया है । अब सब से पहले '१' मूल अंक के विषय में बताया जाता है । जिसकी जन्म-तारीख का मूल अंक १ होता है वह व्यक्ति क्रियात्मक, अपनी विचार-धारा में स्थिर तथा निश्चित स्वभाव का होता है । अर्थात् उसकी प्रकृति में अस्थिरता नहीं होती । जिस बात पर अपनी राय कायम कर लेता है उस पर स्थिर रहता है । ऊपर जो १ से लेकर ३१ तारीख तक के मूल अंक दिए गए हैं उनको देखने से पता चलेगा कि १०, १९ तथा २८ तारीख़ को जो व्यक्ति उत्पन्न हुये हैं उनका मूल अंक १ है । ऐसे व्यक्तियों को किसी भी महीने की निम्नलिखित तारीख़ें महत्व-पूर्ण जावेगीं:—

१, १०, १९, २८

इन तारीख़ों के अतिरिक्त उनके जीवन के निम्नलिखित वर्ष भी महत्वपूर्ण होंगे ।

१ ला वर्ष, १० वाँ वर्ष, १९ वाँ वर्ष, २८ वाँ वर्ष, ३७ वाँ वर्ष, ४६ वाँ वर्ष, ५५ वाँ वर्ष, ६४ वाँ वर्ष, ७३ वाँ वर्ष, इत्यादि । इसका कारण यह है कि ऊपर जो-जो वर्ष गिनाये गए हैं उनको

---

१. देखिये "The Magic of Numbers by Leo Markun.

जोड़ने से मूल अंक १ ही बन जाता है। यथा ६४=६+४=१०=१+०=१। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये। '१' संख्या पर सूर्य का प्रभाव विशेष माना गया है और अंगरेज़ ज्योतिषियों के मतानुसार जो व्यक्ति २१ जुलाई से २८ अगस्त तक के समय में पैदा होते हैं उन पर सूर्य का प्रभाव विशेष होने के कारण यदि कोई मनुष्य उपर्युक्त समय में भी पैदा हुआ हो और १, १०, १९ या २८ तारीख को पैदा हो तो, उस पर सूर्य का प्रभाव और भी अधिक होगा।

जिन लोगों की जन्म-तारीख़ का मूल अंक १ होता है, वह अनुशासन पसन्द नहीं करते। वह स्वयं अपनी संस्था के संचालक या अपने विभाग के अध्यक्ष होना चाहते हैं। इन लोगों को चाहिये कि अपने किसी भी नए काम की बुनियाद १, १०, १९ या २८ तारीख को डालें। यदि साथ ही २१ जुलाई से २८ अगस्त के बीच वाले काल में वह कोई नया कार्य करें तो इन्हें विशेष सफ़लता होगी। '१' अंक तो इनका अपना अंक हुआ, इस कारण शुभ होगा ही; किन्तु १ के अतिरिक्त २, ४ तथा ७ का अंक भी इन्हें शुभ होता है।

इस कारण २, ११ (१+१=२), २० (२+०=२) तथा २९ (२+९=११=१+१=२) तारीख़ भी इन्हें अच्छी जावेगी। ४, १३ (१+३=४), २२ (२+२=४), तथा ३१ (३+१=४) तारीख़ें भी शुभ जावेंगी। ७, १६ (१+६=७), तथा २५ (२+५=७) तारीख़ भी इन्हें शुभ होंगी।

ऊपर साधारण नियम बताया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के वर्षों में यह विचार करना चाहिये कि १, २, ४

तथा ७ अंक वाले वर्ष उसे कैसे गये। उदाहरण के लिए यदि कोई मनुष्य अपने गत जीवन के अनुभव से इस नतीजे पर पहुँचे कि, १, १०, १९, २८, ३७, वर्ष तो अच्छे गये किन्तु ७, १६, २५, ३४ या ४३ वाँ वर्ष अच्छा नहीं गया और महीने की ७, १६ या २५ वीं तारीख़ उसे अच्छी नहीं जाती तो भविष्य में किसी महत्वपूर्ण काम के लिये उसे ७, १६ या २५ वीं तारीख़ नहीं चुननी चाहिए।

'१' अंक वाले मनुष्य को रविवार तथा सोमवार शुभ होता है। इसलिए यदि १ ता० को या १० ता०को या १९ ता० को या २८ ता० को रविवार पड़े तो उसे विशेष अच्छा जावेगा। इसी प्रकार यदि ४ या १३ या २२ तारीख को रविवार पड़े तो भी उसे विशेष शुभ होगा। गहरा या हल्का भूरा रंग या पीला अथवा सुनहरी रंग इनके लिये विशेष अनुकूल होता है। पुरुष गहरे या हल्के भूरे रंग के कपड़े पहिनें तो उन्हें शुभ प्रभाव दिखावेंगे। कपड़े का रंग पसन्द करते समय हमें लोक-रुचि का भी ध्यान रखना पड़ता है। पुरुष गहरे पीले या सुनहरी रंग के कपड़े नहीं पहन सकते किन्तु जिन स्त्रियों की जन्म तारीख का मूल अंक १ हो वे पीली या सुनहरी रंग की साड़ी या ब्लाउज़ पहन सकती हैं।[1]

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

१ मूल अंक वालों के जीवन के निम्नलिखित वर्ष महत्व पूर्ण होंगे ?

(क) १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४।

(ख) ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७।

१. देखिये Harmony in Number, Name & Colour by Prof. Kelland.

(ग) २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५।

(घ) ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१।[१]

अंक २

'२' अंक का अधिष्ठाता चन्द्रमा है। सूर्य और चन्द्रमा मित्र हैं। इस कारण '१' अंक वाले व्यक्तियों को २ का अंक भी शुभ बताया गया है। परन्तु सूर्य में तेज होता है, चन्द्रमा में शीतलता। इस कारण जिनका मूल अंक २ हो, वे व्यक्ति कल्पनाशक्ति वाले, कलाप्रिय तथा प्रेमी होते हैं। शारीरिक शक्ति उनमें उतनी अधिक नहीं होती किन्तु मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य में बाज़ी मार ले जाते हैं।

महीने की निम्नलिखित किसी भी तारीख़ को जिनका जन्म हुआ हो, उन सब का मूल अंक २ होगा।

२

११=१+१=२

२०=२+०=२

२९=२+९=११=१+१=२

अंगरेज़ ज्योतिषियों[२] के मतानुसार जिनका जन्म २० जून से २५ जुलाई तक हुआ हो उन पर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव रहता हैं। इस कारण जिन व्यक्तियों का जन्म उपर्युक्त काल में हुआ हो और जन्म-तारीख का मूल अंक भी २ हो तो उन पर चन्द्रमा

---

१. इस विषय के विशेष जिज्ञासु कृपया देखें :—

"The Science of Numerology: What Numbers Mean to You" by Walter B. Gibson. तथा

२. Numerlogy: Its Practical Application to Life by Clifford W. Cheasley.

का विशेष प्रभाव रहेगा। जिनका मूल अंक २ हो उन्हें कोई भी महत्वपूर्ण कार्य महीने की २ री, ११ वीं, २० वीं या २९वीं तारीख़ को करना चाहिए। यदि यह लोग नवीन कार्य २० जून से लेकर २५ जुलाई तक—इस बीच में करें और नवीन कार्य का प्रारंभ भी २ अंक वाली तारीख़ को हो तो विशेष सफलता की संभावना है।

जिन व्यक्तियों का मूल अंक २ है, उन्हें १,४ तथा ७ की संख्या भी शुभ होती है। इस कारण २ अंक वाले व्यक्तियों को उचित है कि अपने गत जीवन की घटनाओं से यह नतीजा निकालें कि जीवन का १ ला, १० वाँ, १९ वाँ तथा २८ वाँ वर्ष उन्हें कैसा गया और प्रत्येक महीने की १ अंक वाली तारीख़ें इन्हें कैसी जाती हैं। यदि यह शुभ जाती हों तो इन तारीख़ों को भी वह नवीन कार्य प्रारंभ कर सकते हैं, तथा ३७, ४६, ५५, ६४ वाँ वर्ष भी अच्छा जावेगा। इसी प्रकार ४ अंक की परीक्षा करनी चाहिए कि जीवन का ४ था, १३ वाँ २२ वाँ तथा ३१ वाँ वर्ष कैसा गया और महीने की यह तारीख़ें कैसी जाती हैं। ७ का अंक, २ का मित्र समझा जाता है। इस कारण जिन व्यक्तियों की जन्म-तारीख़ का मूल अंक २ हो उन्हें प्रत्येक महीने की ७, १६ तथा २५ वीं तारीख़ भी उत्तम जानी चाहिए। और इनके जीवन का ७ वाँ, १६ वाँ, २५ वाँ, ३४ वाँ, ४३ वां, ५२ वाँ, ६१ वाँ तथा ७० वाँ वर्ष भी महत्वपूर्ण होगा।

जिनका मूल अंक २ है, उनके लिये रविवार, सोमवार तथा शुक्रवार शुभ होता है। इसलिये यदि २ या ११ या २० या २९ तारीख़ को सोमवार भी हो तो इन्हें विशेष शुभ होगा।

जिनकी जन्म-तारीख़ का मूल अंक २ हो उन्हें इस बात के

लिए प्रयत्नशील होना चाहिए कि अपने मस्तिष्क की बेचैनी और उलझन को कम कर, जिस बात का विचार पक्का किया हो उसे कार्यान्वित करने में जी-जान से जुट जावें। यह लोग प्रायः मुस्तकिल मिजाज़ नहीं होते, एक बात के विषय में विचार पक्का करते है और फिर उसमें तब्दीली या तरमीम करते रहते हैं और फिर दूसरी कोई नई योजना बनाने लगते हैं। धैर्य और अध्यवसाय की कमी के कारण जिस बात का विचार करते हैं उसे पूरा नहीं करते। अपने स्वभाव की इस कमज़ोरी के कारण इन्हें सफलता में बाधा होती है। इनमें आत्म-विश्वास की कमी होती है; थोड़ी सी निराशा से उदासीन हो जाते हैं। यदि अपनी इस भावुकता पर विजय पा लें तो बहुत सी बातों में सफल हो सकते हैं।

इन्हें सफ़ेद, काफ़ूरी (चन्द्रमा के रंग का), हरा या अंगूरी रंग विशेष शुभ है। इस लिए इस रंग की पोशाक पहनना चाहिए। काला, लाल या गहरा रंग इनके लिये अनुकूल नहीं है।

अंक ३

इस अंक का अधिष्ठाता बृहस्पति है। जिन व्यक्तियों का जन्म निम्नलिखित किसी भी तारीख़ को हुआ हो उनका मूल अंक ३ होगा :—

३ = ३
१२ = १ + २ = ३
२१ = २ + १ = ३
३० = ३ + ० = ३

अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार[१] १९ फ़रवरी से २१ मार्च

१ देखिए The Science of Nnmerology : What Numbers Mean to you; by Walter B. Gibson.

अपनी सम्मिलित योजना के कारण परास्त कर सके। मेरा विचार है कि यदि स्तालिन, चर्चिल तथा प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट तीनों की ही जन्म तारीख़ का मूल अंक ३ नहीं होता तो यहतीनों एक स्थान पर सौमनस्यपूर्ण विचार-विनिमय के लिये एकत्रित नहीं होते।

३ मूल अंक वाले व्यक्तियों को चमकीला गुलाबी रंग, या हल्का जामुनीरंग विशेष शुभ होता है। स्त्रियाँ इस रंग की पोशाक पहिनें तो उन्हें विशेष अनुकूल होगी। पुरुष वर्ग अपने कमरे की दीवालों पर यह रंग करावें या इस रंग का फ़रनीचर, परदे आदि अपने कमरे में लगावें तो शुभ होगा।

अंक ४

अंगरेज़ी ज्योतिष के अनुसार '४' का मुख्य अधिष्ठाता हर्शल नामक ग्रह है। 'हर्शल' नामक अंगरेज़ वैज्ञानिक ने सर्व प्रथम इसका पता लगाया। उसी के नाम से इसे 'हर्शल' कहा जाता है। हर्शल का मुख्य प्रभाव है सहसा प्रगति, विस्फ़ोट, आश्चर्यजनक कार्य, असंभावित घटनाएँ आदि। इसलिए जिस व्यक्ति की जन्म-तारीख का मूल अंक ४ होता है वह प्रायः औरों से संघर्ष करता है। जो अन्य लोगों की राय या विचारधारा होगी उसके विरुद्ध '४' अंक वाला व्यक्ति अपना विचार प्रदर्शन करेगा; इस कारण उसके बहुत से विरोधी और शत्रु हो जाते हैं। किसी भी महीने में निम्नलिखित किसी भी तारीख को जिन व्यक्तियों का जन्म हुआ होगा, उनका मूल अंक '४' होगा :—

४=४

१३=१+३=४

२२=२+२=४

३१=३+१=४

अंगरेज़ ज्योतिषियों का मत है कि यदि जन्म की तारीख का मूल अंक '४' हो और यदि जातक का जन्म भी २१ जून से ३१ अगस्त तक के काल में हुआ हो तो उस पर '४' का प्रभाव विशेष मात्रा में रहेगा। यह लोग सुधारक, पुरानी प्रथा के उन्मूलक और नवीन प्रथा के संस्थापक होते हैं। सामाजिक या राजनीतिक क्षेत्र-किसी में भी पुरानी पद्धति को हटा कर नवीन पद्धति बैठाना इनके स्वभाव के अनुकूल होता है। यह लोग आसानी से औरों से मित्रता स्थापित नहीं करते। तथापि जिन व्यक्तियों की जन्म तारीख़ का मूल अंक, १, २, ७ या ८ हो उनसे इनका सौहार्द हो सकता है।

'४' अंक वाले व्यक्ति रुपये जोड़ने पर इतना ज़ोर नहीं देते जितना मौज उड़ाने पर। इन व्यक्तियों को उचित है कि संग्रहशीलता की ओर विशेष ध्यान दें। इन लोगों को रविवार, सोमवार तथा शनिवार शुभ होते हैं। यदि कोई नवीन या महत्वपूर्ण कार्य करना हो तो किसी भी महीने की अंग्रेज़ी ता० ४ या १३ या २२ या ३१ को करें तो सफलता होगी। यदि २१ जून से ३१ अगस्त के बीच में नवीन कार्य की बुनियाद डालें और साथ ही तारीख़ भी ४, १३, २२ या ३१ हो तो विशेष सफलता की आशा है। यदि '४' मूल अंक वाली तारीख़ को रविवार भी हो तो और भी शुभ होगा। यदि २, ११, २० या २९ तारीख़ हो और उस दिन सोमवार भी हो तो यह '२' का मूल अंक तथा सोमवार दोनों '४' अंक वालों के लिए शुभद होने के कारण और भी सत्प्रभाव दिखावेंगे।

यदि '४' अंक वाले व्यक्ति सहिष्णु बनने के अभ्यासी बनें और अन्य व्यक्तियों से व्यर्थ संघर्ष कर अपने प्रतिद्वन्द्वी और शत्रु न

बनावें तो विशेष सफल हो सकते हैं। 'धूप-छाँह' का रंग, नीला तथा खाकी (भूरा) रंग इन्हें विशेष अनुकूल होगा। 'धूप-छाँह' से तात्पर्य है दो प्रकार के रंगों का सम्मिश्रण—कहीं गहरा मालूम हो कहीं हल्का—ऐसा वस्त्र या कमरे, फरनीचर और परदों आदि का रंग इनके लिए शुभ है।

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

४ अंक वाले व्यक्तियों को ४ था, १३ वाँ, २२ वाँ, ३१ वाँ ४० वाँ, ४९ वाँ ५८ वाँ और ६७ वाँ वर्ष महत्व पूर्ण जावेगा। साथ ही १ ला, १० वाँ, १९ वाँ, २८ वाँ, ३७ वाँ, ४६ वाँ ५५ वाँ तथा ६४ वाँ वर्ष भी महत्व पूर्ण होगा। ४ अंक वाले व्यक्ति को यदि २, ११, २०, २९ तारीख़ें शुभ जाती हैं तो, २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५ और ७४ वाँ वर्ष भी शुभ जावेगा तथा '७' का मूल अंक अनुभव से शुभ सिद्ध हुआ हो तो ७ मूल अंक वाले जीवन के वर्ष भी शुभ जावेंगे।

अंक ५

इस अंक का अधिष्ठाता 'बुध' ग्रह है। जिन लोगों का जन्म नीचे लिखी किसी भी तारीख़ को हुआ हो उनका मूल अंक ५ होगा।

टिप्पणी—इस सम्बन्ध में २२ वें वर्ष के विषय में यह स्मरण रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के जीवन के २२ वें वर्ष का अधिष्ठात सूर्य होता है—इस कारण जिन लोगों की जन्म कुण्डली में सूर्य बलवान् शुभ राशि तथा शुभ भाव में शुभ ग्रहों से युक्त वीक्षित है उन्हें २२ वाँ वर्ष अवश्य अच्छा जावेगा और जिनकी जन्म कुण्डली में सूर्य अनिष्ट स्थान में स्थित है या नीच राशि या शत्रु गृह में है उन्हें २२ वाँ वर्ष अनिष्ट जावेगा। इसी प्रकार २८ वें वर्ष के विचार में—भारतीय ज्योतिष के अनुसार मंगल की प्रधानता है।

५=५

१४=१+४=५

२३=२+३=५

अंगरेज़ ज्योतिषियों के मतानुसार २१ मई से २३ जून तक और २१ अगस्त से २३ सितम्बर तक प्रति वर्ष, बुध का प्रभाव विशेष रहता है। इस कारण यदि कोई व्यक्ति इस अन्तर में पैदा हुआ हो और उसके जन्म की तारीख़ का मूल अंक भी '५' हो तो उस पर बुध का प्रभाव विशेष होगा। यह लोग बहुत मिलनसार होते हैं और किसी भी व्यक्ति से शीघ्र मैत्रीभाव कर लेते हैं, इस कारण किसी भी अंगरेज़ी तारीख को कोई व्यक्ति पैदा हुआ हो इनका मित्र हो सकता है। परन्तु यदि किसी व्यक्ति की जन्म तारीख का मूल अंक ५ हो तो (अर्थात् वह ता० ५, १४ या २३ को पैदा हुआ हो), अपने समान ही मूल अंक होने से, इनकी उससे हार्दिक घनिष्ठता हो जावेगी।[१]

बुध का प्रभाव व्यापार क्षेत्र में विशेष है। इस कारण यह लोग व्यापार—ख़ास कर सट्टे या शीघ्र लाभ होने वाले व्यापार-की ओर विशेष आकृष्ट होते हैं। इनका स्नायुमंडल बहुत फुर्ती से कार्य करता है, इस कारण ये जल्दबाज होते हैं। इनकी प्रकृति में यह विशेषता होती है कि अधिक दिन तक किसी बात पर चिंता, शोक या पश्चात्ताप नहीं करते। किसी ने मानसिक आघात पहुँचाया—तो थोड़े काल में ही उसे भूल गए, और पूर्ववत् अपने कार्य में लग गए।

---

1. "Number Please" पृष्ठ ६०

इन लोगों के लिए बुधवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार विशेष शुभ होते हैं। यदि यह किसी कार्य की नवीन आयोजना का प्रारंभ ५, १४ वा २३ ता० को करें तो विशेष सफलता होगी। यदि साथ ही उस दिन वार भी बुध हो तो और भी शुभ होगा। यदि २१ मई से २३ जून तक अथवा २१ अगस्त से २३ सितम्बर के बीच के काल में इनके लिए अनुकूल वार को ५,१४ या २३ ता० पड़े तो, उस दिन नवीन कार्य की बुनियाद डालने से अवश्य अधिक सफलता की आशा होगी। बुध का प्रभाव इन लोगों पर विशेष रहता है। बुध स्नायुमंडल का अधिष्ठाता है। यह लोग अपनी स्नायविक शक्ति इतनी अधिक व्यय करते हैं कि अधिक अवस्था में स्नायुमंडल की कमज़ोरी से (Nervous break down) मूर्छा आदि की आशंका होगी। इसी कारण इनके मिज़ाज़ में ज़ल्दबाज़ी, चिड़चिड़ापन, शीघ्र क्रोध आने की प्रवृत्ति आदि के लक्षण पाये जाते हैं।

हल्का ख़ाकी, सफ़ेद, चमकीला उज्ज्वल रंग इनकी प्रकृति के विशेष अनुकूल होता है। अथवा किसी भी रंग का हल्का रंग इन्हें शुभ होगा। गहरा रंग नहीं पहनना चाहिए।

जीवन के महत्त्वपूर्ण वर्ष

इनके जीवन का ५ वाँ, १४ वाँ, २३ वाँ, ३२ वाँ, ४१ वाँ, ५० वाँ, ५९ वाँ, ६८ वाँ तथा ७७ वाँ वर्ष महत्वपूर्ण होगा। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ३२ वें वर्ष में बुध अपना पूर्ण प्रभाव दिखाता है। इस कारण जिनकी जन्म-कुण्डली में बुध शुभ भाव में तथा बलवान् होगा उनको उस भावसम्बन्धी शुभ फल

करेगा। जिनकी जन्म-कुण्डली में अशुभ भाव में बलहीन बैठा होगा उनको ३२ वें वर्ष में उस भाव सम्बन्धी अनिष्ट फल देगा—

अंक ६

इस अंक का अधिष्ठाता शुक्र है। जिन व्यक्तियों का जन्म निम्नलिखित किसी तारीख़ को हुआ हो उनका मूल अंक ६ है :—

६=६

१५=१+५=६

२४=२+४=६

अंगरेज़ ज्योतिषियों के मतानुसार २० अप्रैल से २४ मई तक और २१ सितम्बर से २४ अक्तूबर तक शुक्र का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि उपर्युक्त काल में किसी का जन्म हुआ हो और साथ ही जन्म की तारीख भी ६, १५ या २४ हो तो ऐसे व्यक्तियों पर शुक्र का प्रभाव विशेष मात्रा में होगा। ६ अंक वाले व्यक्ति वहुधा लोक-प्रिय होते हैं। उनमें आकर्षण शक्ति और मिलनसारी होती है और इस कारण उनके सम्पर्क में आनेवाले लोग उन्हें प्रेम करते हैं। इनमें सोन्दर्योपासना भी विशेष मात्रा में होती है। सुन्दर व्यक्ति, कला, चित्र, सुन्दर वस्त्र आदि इन्हें विशेष प्रिय होते हैं। यह अपनी सुरुचि सम्पन्नता के कारण आतिथ्य आदि में विशेष सत्कार करते हैं तथा ललित कलाओं को प्रोत्साहन देते हैं। परन्तु स्वभाव के हठी होते हैं और अपनी बात को अन्त तक निभाते हैं। किसी दूसरे की प्रतियोगिता सहन नहीं कर सकते और ईर्ष्या की मात्रा भी विशेष होती है।[१]

---

१ Raphael's Guide to Astrolojy

यह सहसा लोगों को मित्र बना लेते हैं या यह कहिये कि दूसरे के मित्र बन जाने का स्वभाव जितना ६ मूल अंक वालों में पाया जाता है, उतना, ५ मूल अंक को छोड़ कर, अन्य मूल अंक वालों में नहीं होता।

मूल अंक ६ की अंक ३ तथा ९ से भी सहानुभूति है। इस कारण ६ अंक वाले लोगों की मित्रता निम्नलिखित तारीखों में उत्पन्न होने वाले लोगों से विशेष होती है :

६, १५, २४

३, १२, २१, ३०

९, १८, २७

६ अंक वाले व्यक्तियों को मंगलवार, बृहस्पति तथा शुक्रवार विशेष शुभ होते हैं—इसलिए यदि ६, १५, २४—इन तारीखों में से किसी पर शुक्रवार पड़े और उस दिन नवीन कार्य प्रारंभ या सम्पादन किया जावे तो विशेष सफलता की आशा है। यदि २० अप्रैल से २४ मई अथवा २१ सितम्बर से २४ अक्टूबर के बीच शुक्रवार और ६, १५ या २४ ता० का योग प्राप्त हो सके तो विशेष कार्य के लिए यह दिन और भी उपयुक्त होगा।

इन व्यक्तियों को हल्का नीला या आसमानी या गहरा नीला रंग शुभ होगा। हल्का गुलाबी रंग भी उपयुक्त है किन्तु काला या गहरा लाल, ककरेज़ी आदि रंग अशुभ हैं।

जीवन के महत्त्वपूर्ण वर्ष

यदि आप का मूल अंक ६ है तो आप के जीवन का ६ ठा,

१५ वाँ, २४ वाँ[१] ३३ वाँ, ४२[२] वाँ, ५१ वाँ, ६० वाँ तथा ६९ वाँ वर्ष महत्त्वपूर्ण होगा।

६ मूल अंक की ३ तथा ९ से भी सहानुभूति होने के कारण :—

(क) अपने गत जीवन के ३ रे, १२ वें २१ वें ३० वें वर्ष में कैसी घटना घटित हुई यह विचार कीजिए। यदि यह वर्ष शुभ गए तो आगे के ३९ वाँ, ४८[३] वाँ, ५७ वाँ तथा ६६ वाँ वर्ष भी शुभ जावेगा।

(ख) यदि आप के गत जीवन का ९ वाँ, १८ वाँ, २७ वाँ, ३६[४] वाँ वर्ष अच्छा गया है तो आगे का ४५ वाँ, ५४ वाँ तथा ६३ वाँ वर्ष भी अच्छा जावेगा।

अंक ७

७ अंक का अधिष्ठाता नेपचून ग्रह है। भारतीय ज्योतिष में 'नेपचून' का नाम या इसके सदृश गुणवाले किसी ग्रह का ज़िक्र

---

१. स्मरण रहे कि अंक ज्योतिष के हिसाब से नहीं, किन्तु भारतीय ज्योतिष के मतानुसार यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा, शुभ राशि और शुभ गृह में पड़ा हो और शुभ ग्रह से युत, वीक्षित हो तो, २४ वाँ वर्ष बड़ा अच्छा जाता है और जिस भवन का स्वामी चन्द्रमा हो या जहाँ बैठा हो उस भाव का शुभ फल करेगा। अनिष्ट चन्द्रमा अनिष्ट फल करेगा।

२. इसी प्रकार राहु अपरा प्रभाव ४२ वें वर्ष में दिखाता है।

३. ४८ वाँ वर्ष भारतीय ज्योतिष के अनुसार केतु का होता है। आप की जन्म कुण्डली में केतु केन्द्र में स्थित होकर त्रिकोणेश से सम्वन्ध करता है या त्रिकोण में स्थित होकर केन्द्रेश से सम्वन्ध करता है तो विशेष भाग्योदय करेगा। यह वास्तव में ज्योतिष का विषय है।

४. इसी प्रकार भारतीय ज्योतिष के अनुसार ३६ वाँ वर्ष शनि का है।

नहीं है। बहुत से ज्योतिषी 'नेपचून' को 'वरुण' कहते हैं। परन्तु वास्तव में यह नाम भ्रान्तिकारक है। जिन व्यक्तियों का जन्म नीचे लिखी किसी भी अंगरेज़ी तारीख़ को हो उनका मूल अंक ७ होगा।

७=७

१६=१+६=७

२५=२+५=७

प्राय: चन्द्रमा की भाँति नेपचून भी जल प्रधान ग्रह है। इस कारण चन्द्रमा के अंक '२' तथा नेपचून के अंक '७' में परस्पर सहानुभूति है। इस कारण ७ मूल अंक वाले व्यक्तियों की ७,१६, तथा २५ तारीख को उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त, २, ११, २० या २९ तारीख को पैदा होने वाले व्यक्तियों से विशेष मित्रता तथा सौहार्द होने की सम्भावना होगी।

७ मूल अंक वाले व्यक्ति सदैव परिवर्तन पसन्द किया करते हैं। यात्रा करना, तथा नवीन स्थान देखने का शौक उन्हें बहुत होता है। इनमें कल्पनाशक्ति विशेष होने के कारण यह लोग विशेष भावुक होते हैं। चित्रकला तथा कविता में यह लोग विशेष सफलता प्राप्त कर सकते है। द्रव्य के विषय में भाग्य इनका उतना सहायक नहीं जितना अन्य मूल अंक वालों का; इस कारण इन्हें आर्थिक सफलता विशेष प्राप्त नहीं होती। अधिक धन संग्रह करने पर धन नष्ट हो जाने का योग भी होता है। परन्तु ७ मूल अंक वाली स्त्रियों का विवाह धनी घरों में होता है। ७ अंक वाले व्यक्तियों के धार्मिक विचार भी कुछ असाधारण होते हैं। धार्मिक मामलों में यह रूढ़ि-वादी नहीं होते। प्रचलित परम्परा से भिन्न अपना धार्मिक मत रखते हैं। इन व्यक्तियों में अतीन्द्रिय ज्ञान (दूसरे की मन की बात

बिना बताये हुए समझ जाना) विशेष मात्रा में होता है, तथा इन्हें स्वप्न भी अद्भुत प्रकार के आते हैं।

'नेपचून' का जल तत्व से विशेष सम्बन्ध होने के कारण समुद्र पार की यात्रा—या विदेशों से माल मँगवाने या भेजने आदि के व्यापार में या जहाज़ सम्बन्धी कार्य में इन्हें विशेष सफलता हो सकती है।

कुछ अंगरेज़ ज्यौतिषियों के मतानुसार २१ जून से २५ जुलाई तक नेपचून का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि कोई व्यक्ति ७, १६, या २५ तारीख़ को पैदा हुआ हो और उपर्युक्त काल में उसकी जन्म तारीख़ पड़े तो उसमें ऊपर वर्णित नेपचून के गुण विशेष मात्रा में मिलेंगे। रविवार तथा सोमवार इन्हें शुभ होते हैं। किसी भी महीने की निम्नलिखित तारीख़ें इन्हें विशेष अनुकूल होंगी :—

(क) १, १०, १९, २८
(ख) २, ११, २०, २९
(ग) ४, १३, २२, ३१
(घ) ७, १६, २५

अपने अनुभव से यदि यह ज्ञात हो कि ऊपर (क) या (ग) के अन्तर्गत दी हुई तारीख़ें प्रतिकूल पड़ती हैं—तो उन तारीखों को मुख्य या नवीन कार्य करने के लिये न चुनें।

७ अंक वाले व्यक्तियों को हरा, काफ़ूरी (हलका पीला), सफ़ेद आदि रंग विशेष शुभ होते हैं; गहरे रंग अशुभ होते हैं।

जीवन के विशेष महत्त्वपूर्ण वर्ष

ऊपर बताया जा चुका है कि ७ मूल अंक वालों को कौन-कौनसी अंगरेज़ी तारीखें अच्छी जावेंगी। (क) वर्ग में नं० १ मूल

अंक वाली तारीखें हैं (ख) वर्ग में नं० २ मूल अंक वाली, (ग) वर्ग में नं० ४ मूल अंक वाली तथा (घ) वर्ग में नं० ७ मूल अंक वाली।

अब अपने गत जीवन के घटनाओं पर विचार कीजिये।

(क) आपके जीवन का १ ला, १० वाँ १९ वाँ वर्ष कैसा गया? यदि अच्छा—कोई शुभ घटना हुई तो आगे का २८ वां, ३७ वाँ, ४६ वाँ, ५५ वाँ आदि वर्ष भी अच्छे जावेंगे।

(ख) २ तथा ७ के अंक में विशेष सहानुभूति होने के कारण, यदि आपका मूल अंक ७ है तो २, ११, २०, २९, ३८, ४७ आदि वर्ष भी आपके जीवन में महत्वपूर्ण होंगे।

(ग) इसी प्रकार अपने गत जीवन के ४ थे, १३ वें, २२ वें वर्ष का सिंहावलोकन करके देखिये कि इन्होंने कैसा प्रभाव दिखाया। भावी जीवन का ३१ वाँ, ४० वाँ, ४९ वाँ, ५८ वाँ, ६७ वाँ वर्ष भी उसी प्रकार का प्रभाव दिखावेगा।

(घ) ७ वाँ, १६ वाँ, २५ वाँ, ३४ वाँ, ४३ वाँ, ५२ वां और ६१ वाँ वर्ष आपके जीवन में अवश्य असामान्य होंगे।

अंक ८

इस अंक का अधिष्ठाता शनि है। जो लोग निम्नलिखित किसी भी अंगरेज़ी तारीख़ को उत्पन्न हुए हैं, उनका मूल अंक ८ होगा।

८=८

१७=१+७=८

२६=२+६=८

अंगरेज़ ज्यौतिषियों के मतानुसार प्रत्येक वर्ष २१ दिसम्बर से १९ फ़रवरी तक शनि का विशेष प्रभाव रहता है। इसलिये जो लोग उपर्युक्त काल में पैदा हों और उनकी जन्म की तारीख़ का

मूल अंक भी ८ हो तो उन पर शनि का प्रभाव विशेष मात्रा में होगा।

८ मूल अंक वाले व्यक्ति बहुत महत्वपूर्ण कार्य करते हैं किन्तु अन्य लोग इनके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार नहीं करते, इस कारण इनके चित्त में उदासी और अकेलापन रहता है। इन लोगों में बाहरी प्रेम प्रदर्शन की आदत नहीं होती, इस कारण बहुत से लोग इन्हें शुष्क और कठोर समझते हैं, परन्तु वास्तव में यह ऐसे नहीं होते। अपने कार्य की पूर्णता की ओर इनका विशेष ध्यान रहता है और यदि ऐसा करने में इन्हें किसी से शत्रुता भी उत्पन्न करनी पड़े तो उसकी परवाह नहीं करते। यह लोग उच्च महत्वाकांक्षी होते है और उच्च सरकारी नौकरी या अन्य महत्वपूर्ण पद प्राप्त करने में यदि कष्ट उठाना पड़े या अन्य बलिदान करना पड़े तो उसके लिए भी उद्यत रहते हैं।

८ मूल अंक वालों को जीवन में प्रायः बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं—इस कारण ८ को अच्छा अंक नहीं मानते हैं।

इस अंक वाले व्यक्तियों का सबसे मुख्य दिन शनिवार होता है, परन्तु रविवार और सोमवार भी शुभ जाना चाहिये। इन लोगों को अपना नवीन या अन्य कोई महत्वपूर्ण कार्य ८, १७ या २६ ता० को प्रारंभ करना चाहिये। यदि साथ ही उस दिन शनिवार पड़े तो और भी अच्छा है।

एक मत यह भी है कि ४, १३, २२ तथा ३१ ता० भी ८ मूल अंक वालों को शुभ होती हैं। कीरो[1] के मतानुसार प्रत्येक वर्ष

---

१. Cheiros Book of Numbers पृष्ठ ८५।

में २१ दिसम्बर से २२ फरवरी तक शनि का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि ८ मूल अंक वाले इन दो महीनों में किसी ऐसे दिन कार्य प्रारंभ करें जिस दिन तारीख भी ८, १७ या २६ हो और वार भी शनि पड़े तो विशेष इष्टकर होगा। किन्तु एक दूसरा मत यह भी है कि ८ अंक वालों को ४ तथा ८ के अतिरिक्त नं० की संख्या (तारीख, मकान आदि) विशेष काम के लिये चुनना चाहिए।

८ मूल अंक वालों को गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेज़ी आदि गहरे रंग शुभ होते हैं। हल्के रंग शुभ नहीं हैं।

८ का मूल अंक सब से पृथक् है। इस मूल अंक वाले की किन तारीखों में पैदा हुए व्यक्तियों से मित्रता होगी, यह कहना भी बहुत कठिन है। अपने जीवन की गत घटनाओं से ही ८ मूल अंक वाले यह सही नतीजा निकाल सकते हैं कि कौन सा अंक उन्हें कैसा गया। अगर उनके मित्रों में से अधिकांश का मूल अंक ४ है, और मूल अंक ८ वाले व्यक्ति के जीवन में ४ था, १३ वाँ, २२ वाँ आदि ४ मूल अंक वाले वर्ष विशेष महत्वपूर्ण गये तो भविष्य में ३१ वाँ, ४० वाँ, ४९ वाँ, ५८ वाँ, ६७ वाँ वर्ष जीवन में महत्वपूर्ण जावेगा। यह तो निश्चय है कि ८ मूल अंक वाले व्यक्ति को ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० आदि वर्ष महत्वपूर्ण जाते हैं।

किन्तु '८' के अतिरिक्त अन्य कौन से अंक महत्वपूर्ण हैं, यह केवल जीवन की गत घटनाओं से ही जाना जा सकता है।

बहुत से लोग ८ के अंक को शनि का अंक होने के कारण अशुभ मानते हैं। परन्तु वास्तव में सब के लिए कोई अंक शुभ या

अशुभ नहीं होता। अपनी-अपनी जन्म तारीख़ तथा ग्रह स्थिति वश भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न अंक शुभ या अशुभ होते हैं।

अंक ९

इस अंक का अधिष्ठाता मंगल है। निम्नलिखित किसी भी अंगरेज़ी तारीख़ को पैदा होने वाले व्यक्ति का मूल अंक ९ होगा।

९=९
१८=१+८=९
२७=२+७=९

कीरो[1] के मतानुसार प्रतिवर्ष २१ मार्च से २७ अप्रैल तक और २१ अक्तूबर से २७ नवम्बर तक मंगल का विशेष प्रभाव रहता है। इसलिये इस काल में जो व्यक्ति पैदा होते हैं, उनकी जन्म तारीख़ भी ९, १८ या २७ हो तो उन पर मंगल का प्रभाव विशेष मात्रा में होगा :—

"मंगल करावे दंगल" यह प्रचलित लोकोक्ति है। इस कारण ९ मूल अंक वाले व्यक्ति साहसी तथा संघर्षशील होते हैं और कठिनाइयों से जूझ कर सफलता प्राप्त करते हैं। परन्तु उनके स्वभाव में उग्रता तथा जल्दबाज़ी होती है। यदि उन्हे ९ मूल अंक वाली तारीखें, या ९ मूल अंक वाले जीवन के वर्ष (९, १८, २७ आदि) विशेष महत्त्वपूर्ण जावें तो समझिये कि उनका जीवन काफ़ी संघर्षमय रहेगा और उनके आवश्यकता से अधिक शत्रु रहेंगे। ऐसे व्यक्ति पुलिस, फौज आदि साहस के कार्य में विशेष सफल होते हैं। इन्हें सब प्रकार की दुर्घटनाओं (सवारी से टक्कर लगना, आग लग

---

1 You & Your Birth Star by Cheiro
अंग्रेज़ी की यह पुस्तक बहुत विस्तृत और पढ़ने योग्य है।

जाना, चोट लगना आदि) से विशेष सतर्क रहना चाहिये। अपने घर में तथा बाहर भी झगड़े से वचना चाहिये—क्योंकि ९ मूल अंक वाले को शीघ्र क्रोध आजाने से वह झगड़ा करने पर आमादा हो जाता है। यह लोग असहिष्णु होते हैं और अपनी आलोचना बर्दाश्त नहीं कर सकते।

इन लोगों में प्रवन्ध शक्ति अच्छी होती है। प्रेम-पात्र के लिये यह सब कुछ बलिदान कर सकते हैं। यदि कोई स्त्री इनसे प्रेम का अभिनय करे तो इन्हें काफी बेवक़ूफ़ बना सकती है—इस कारण इन्हें इस ओर से सावधान रहना चाहिये।

'९' मूल अंक वाले व्यक्ति यदि अपने स्वभाव पर संयम रक्खें तो काफ़ी भाग्यशाली हो सकते हैं। इन्हें ९ के अतिरिक्त ३ तथा ६ का अंक भी शुभ होता है। और मंगल, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार शुभ होते हैं। इसलिये सर्वप्रथम तो इन्हें किसी भी महीने की ९ या १८ या २७ वीं तारीख़ महत्वपूर्ण कार्य के लिये चुननी चाहिये। यदि उस दिन मंगलवार का दिन पड़े तो और भी अच्छा है। विशेष कर यदि २१ मार्च से २७ अप्रैल तक या २१ अक्तूबर से २७ नवम्बर तक—इस बीच में ९, १८, या २७ ता० और मंगलवार का योग हो तो विशेष श्रेयस्कर है।

९ मूल अंक के अतिरिक्त, इन्हें ३ तथा ६ के अंक भी शुभ जाते हैं—इस कारण किसी भी महीने की ३, १२, २१, ३० तथा ६, १५ एवं २४ तारीखों की भी परीक्षा करनी चाहिये कि कैसी जाती हैं। ३ या ६ के अंकों में जो (दोनों) अच्छे जावें उन्हें विशेष व्यवहार में लाना चाहिये। गुलाबी तथा गहरे लाल रंग इन्हें विशेष शुभ होंगे।

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

९ मूल अंक वाले व्यक्तियों के जीवन में ९ वाँ, १८ वाँ, २७ वाँ, ३६ वाँ, ४५ वाँ, ५४ वाँ, ६३ वाँ तथा ७२ वाँ वर्ष अवश्य महत्वपूर्ण जावेगा। इसके अतिरिक्त जिनको ३ की संख्या अनुभव से शुभ हो उन्हें ३ रा, १२ वाँ, २१ वाँ, ३० वाँ ३९ वाँ ४८ वाँ, ५७ वाँ तथा ६६ वाँ वर्ष भी महत्वपूर्ण होगा। तथा जिनको ६ का अंक शुभ जाता हो, उन्हें जीवन का ६ ठा, १५ वाँ, २४ वां, ३३ वाँ, ४२ वाँ ५१ वाँ ६० वाँ तथा ६९ वां वर्ष भी शुभ जावेगा।[१]

---

१. २४ वें, ३६ वें, ४२ वें एवं ४८ वें वर्ष पर क्रमशः चन्द्र, शनि, राहु एवं केतु का विशेष प्रभाव रहता है। अतः जिनकी जन्म कुण्डलियों में इन चारों में से जो ग्रह अच्छे पड़े हैं उन्हें वह वर्ष अच्छा जावेगा—तथा जिनकी जन्म कुण्डलियों में यह ग्रह अनिष्ट राशि या भाव में हैं उन्हें यह वर्ष अच्छे नहीं जावेंगे। यह भारतीय ज्योतिष का मत है।

४ था प्रकरण

संयुक्त-अंक

पिछले प्रकरण में जन्म तारीख से मूल-अंक निकालने की विधि बताई गई है—और इस प्रकार जन्म की अंग्रेजी तारीख के आधार पर, शुभ वर्ष, शुभ दिन, शुभ मास, शुभ तारीखें तथा किन तारीखों को उत्पन्न मनुष्यों से विशेष मैत्री या सद्भाव होगा, इसका निर्णय करना बताया गया है।

अब एक कदम आगे चलिये। कुछ प्रसिद्ध अंग्रेज़ ज्यौतिषियों का यह निष्कर्ष है कि केवल जन्म की तारीख से जो मूल अंक बनाया जाता है उससे उतना सही पता नहीं लगता जितना संयुक्त 'अंक' से। संयुक्त का अर्थ होता है संयोग करना, जोड़ना—अर्थात् जन्म की अंग्रेजी ता० अंग्रेज़ी महीना तथा अंग्रेज़ी सन् तीनों की विविध संख्याओं को जोड़ कर 'संयुक्त' अंक बनाया जाता है।

इसको डा० यूनाइट क्रॉस द्वारा दिये हुए उदाहरण से स्पष्ट किया जाता है :—

मान लीजिये कोई व्यक्ति २९ दिसम्बर सन् १८८८ को पैदा हुआ।

इनकी 'Numver तथाPease 'The Psyohology of Fate' दोनों पुस्तकें पढ़ने योग्य हैं। दोनों में अंक ज्योतिष से सम्बन्धित अनेक विषय हैं।

तारीख	२६=२+६	=११=१+१=२	
महीना	१२=१+२	= ३	=३
सन्	१८८८=१+८+८+८	=२५=२+५=७	
			१२=१+२=३

तारीख़, महीने तथा सन् की संख्याओं को जोड़ने से १२ की संख्या आई। इसकी दोनों संख्याओं को जोड़ने से ३ की संख्या आई।

डा० यूनाइट क्रॉस के मतानुसार इस संयुक्त अंक का बहुत महत्त्व है। वह तो इसको इतना अधिक महत्व देते हैं कि उन्होने इस अंक का नाम 'भाग्य का चामत्कारिक अंक' रक्खा है। उनके अनुसार इस अंक का जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। उन्हीं के शब्दों में सुनिये : "एक युवती का जन्म २० मई १८६० को हुआ। २०-५-१८६० के अंकों को जोड़ने से २+०+५+१+८+६+०=२५=२+५=७ भाग्यांक आया। बचपन में प्रायः जीवन सम्बन्धी विशेष घटनाएँ नहीं घटित होतीं—इस कारण स्कूल में अध्ययन पूरा करने के बाद की घटनाओं का सिंहावलोकन किया जाता है :

भाग्यांक ७

स्कूल छोड़ा १६०६ (७) — जब उम्र थी १६ (७) ७

उसी वर्ष अपने भाई के साथ जुलाई (७) में आस्ट्रेलिया गई ७

उसका भाई सिडनी में, सड़क पर, दुर्घटना ग्रस्त हुआ २८-८-१६०६ (२+८+८+१+६+०+६)=७ ....७

आग लगने से २२-१२-१९०८ को सम्पत्ति नष्ट हुई
(२+२+१+२+१+९+०+८=२५=२+५=७) ७

१७-४-१९१२ को विवाह हुआ
(१+७+४+१+९+१+२=२५=२+५=७) ७

ता० ७-४-१९१३ को पुत्र उत्पन्न हुआ
(७+४+१+९+१+३=२५=२+५=७) ७

पति १०-८-१९१५ को फौज के हवाई बेड़े में मारा गया
(१+०+८+१+९+१+५=२५=२+५=७) ७

उसी वर्ष की जुलाई (७) में चाचा
के मरने पर बहुत धन प्राप्त हुआ ७

जुलाई (७) १९२४ (७) को ३४ (७)
वर्ष की उम्र में इंग्लैण्ड वापिस आई ७

भाग्यांक ५ का उदाहरण

स्वर्गीय डब्ल्यू० ई० ग्लेड्स्टन (जो इंगलैण्ड के प्रधान मंत्री थे) का
जन्म दिन २९-१२-१८०९
(२+९+१+२+१+८+०+९=३२=३+२=५) ५

१८३२ में प्रथमबार पार्लियामेंट में चुने गये
(१+८+३+२=१४=१+४=५) ५

उनकी उम्र उस समय २३ साल की थी
(२+३=५) ५

प्रथमवार ५० मिनिट तक भाषण दिया
(५+०=५) ५

८८७ वोट प्राप्त हुए

(८+८+७=२३=२+३=५) ५

मा की मृत्यु २३ ता० को हुई

(२+३=५) ५

२३ वीं तारीख़ को चान्सलर ग्राव् दि एक्सचेकर हुए ५

२३ 'वीं' तारीख़ को उपनिवेश-सचिव हुए ५

फ्रीडम ग्राव् ग्लासगो १-११-१८६५ को प्राप्त हुई

(१+१+१+१+८+६+५=२३=२+३=५) ५

फ्रीडम ग्राव् डब्लिन ७-११-१८७७ को प्राप्त हुई

(७+१+१+१+८+७+७)=३२

=३+२=५ ५

१८६८ में इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री हुए

(१+८+६+८=२३=२+३=५) ५

उनकी ग्रायु उस समय ५९ थी

(५+९=१४=१+४=५) ५

२-७-१८८६ को मिडलोथियन तथा लीथ को वापिस ग्राये

(२+७+१+८+८+६=३२=३+२=५) ५

२०-७-१८८६ को त्याग पत्र दिया

(२+०+७+१+८+८+६=३२=३+२=५) ५

१९ — ५ — १८९८ को मृत्यु हुई

(१+९+५+१+८+९+८=४१=४+१=५) ५

२८ — ५ — १८९८ को दफनाये गये

(२+८+५+१+८+९+८=४१=४+१=५) ५

यूरोप के मध्ययुगीय इतिहास में भी इस प्रकार के उदाहरण उपलब्ध होते हैं। जिन्हें अभिरुचि हो वे कृपया निम्नलिखित पुस्तकों का अवलोकन करें[१] :

प्रोफ़ेसर केल्लैण्ड ने अपनी पुस्तक[२] में सर एडवर्ड क्लार्क के जीवन की घटनाओं से एक अन्य उदाहरण संकलित किया है। इसमें बारंबार '४' तथा '८' की संख्याएँ आती हैं।

भाग्यांक ४

जन्म की तारीख़ १५-२-१८४१
(१+५+२+१+८+४+१=२२=२+२=४) ४
१३ वर्ष की उम्र में स्कूल छोड़ा (१+३=४) ४
अपने पिता के पास ४ वर्ष काम किया ४
स्वयं अपना काम स्वतन्त्र रूप से सन् १८५८ में प्रारम्भ किया (१+८+५+८=२२=२+२=४) ४
१७ वर्ष की उम्र में (१+७=८) ८
प्रारम्भिक वेतन हुआ ८० पौंड (८+०=८) ८
जब १७-११-१८६४ को वह बैरिस्टर हुए तो उनकी चिरकांक्षित इच्छा की पूर्ति हुई (१+७+१+१+१+८+६+४=२९=२+९=११=१+१)=२ ....२

---

1. "Research in the Efficiency of Dates and Names in the Annals of Nations." तथा Curious Myths of Middle Ages.

2. Harmony in Number, Name and Colour.

विवाह २६-१२-१८६६ को हुआ
(२+६+१+२+१+८+६+६=३५
=३+५=८) ………८
जब उनकी अवस्था २६ साल की थी। ………८
३१ वर्ष की अवस्था में वे मेसन हुए ………४
केलिडोनिया लौज नं० १३४ में प्रविष्ट हुए
(१+३+४=८) ………८
साउथवर्क क्षेत्र से पार्लिमेण्ट का चुनाव लड़ने के लिये
टिकट मिला १३-२-१८७६
(१+३+२+१+८+७+६=३१=३+१=४) ………४
सन् १८८० में चुने गये
(१+८+८+०=१७=१+७=८) ………८
पार्लियामेण्ट में शपथ ग्रहण की
ता० १६-२-१८८० =(१+६+२+१+८+८+०
=२६=२+६=८) ………८
ता० २-११-१६०८ को प्रिवीकौंसिल के मेम्बर बनाये गए
(२+१+१+१+६+०+८=२२=२+२=४) ………४
इनके दो बच्चे थे ………२
इनके दो पत्नियाँ थीं ………२

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होगा कि सर एडवर्ड क्लार्क के जीवन में उनका भाग्यांक (संयुक्त-अंक) ४ वारंवार अपना प्रभाव दिखाता था किन्तु '२' तथा '८' की संख्या भी उनके जीवन से सम्बद्ध थीं। डा० यूनाइट क्रौस के मतानुसार अंक ४ की २ तथा

८ से सहानुभूति है - Richard Wagner नामक एक अन्य व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित '१३' एवं '४' के अंक की प्रधानता निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट होगी :—

नाम के अंग्रेजी अक्षरों की संख्या = १३
१३ = १ + ३ = ४ = ४
सन् १८१३ में पैदा हुआ =
(१ + ८ + १ + ३ = १३ = १ + ३ = ४) = ४
१३ वर्ष की अवस्था में स्कूल छोड़ा = १३ = ४
१३ दुःखान्त संगीतमय नाटक लिखे = १३ = ४
१३ स्त्रियों से अपने जीवन में प्रेम किया = १३ = ४
इसका टाइटिल Kapellmeister था जिसमें १३ अक्षर हैं = १३ = ४
१३ फ़रवरी १८८३ को मृत्यु हुई
(१ + ३ + २ + १ + ८ + ८ + ३) = १३ + १३ = २६ = ८
उसकी पत्नी की १९३० में मृत्यु हुई
(१ + ९ + ३ + ० = १३) = १३ = ४
उसके श्वसुर का नाम था
Franz Von Liszt (१३ अक्षर) = १३ = ४
उसके दो नाटक १३ को प्रारम्भ हुए
और १३ को ही समाप्त हुए = १३ = ४
तीन नाटकों का प्रथम अभिनय
१३ तारीख़ को प्रारंभ हुआ } = १३ = ४
उसके ग्रन्थों का सम्मिलित संस्करण (१९१२)
में प्रथम वार प्रकाशित हुआ
(१ + ९ + १ + २ = १३) = १३ = ४

ग्रन्थों का सम्मिलित संस्करण

प्रकाशित होना १६३० में समाप्त हुआ	=१३	=४
माता का नाम Johanna Wagner		
था, इसमें १३ अक्षर हैं)	=१३	=४

डा० यूनाइट क्रौस के मतानुसार निम्नलिखित भाग्यांकों (संयुक्त-अंकों) की सहानुभूति उनके सामने लिखे अंकों से है :—

भाग्यांक	सहानुभूतिवाले अंक
१	३, ५ तथा ७
२	४ तथा ८
३	१, ५, और ७, ६ तथा ९
४	२ तथा ८
५	१, ३ तथा ७ (और १०)
६	३ तथा ९
७	१, ३, तथा ५
८	२ तथा ४
९	३ तथा ६

डा० यूनाइट क्रौस के मतानुसार भिन्न-भिन्न भाग्यांक (या संयुक्त-अंक) वाले व्यक्तियों को निम्नलिखित ईसवी वर्ष महत्वपूर्ण गए होंगे या जावेंगे :—

भाग्य वर्ष

भाग्यांक १ को	भाग्यांक २ को	भाग्यांक ३ को
१६०६	१६१०	१६११
१६१८	१६१६	१६२०
१६२७	१६२८	१६२६
१६३६	१६३७	१६३८
१६४५	१६४६	१६४७
१६५४	१६५५	१६५६
१६६३	१६६४	१६६५
१६७२	१६७३	१६७४
१६८१	१६८२	१६८३

भाग्य वर्ष

भाग्यांक ४ को	भाग्यांक ५ को	भाग्यांक ६ को
१६१२	१६१३	१६१४
१६२१	१६२२	१६२३
१६३०	१६३१	१६३२
१६३६	१६४०	१६४१
१६४८	१६४६	१६५०
१६५७	१६५८	१६५६
१६६६	१६६७	१६६८
१६७५	१६७६	१६७७
१६८४	१६८५	१६८६

भाग्य वर्ष

भाग्यांक ७ को	भाग्यांक ८ का	भाग्यांक ९ को
१९०६	१९०७	१९०८
१९१५	१९१६	१९१७
१९२४	१९२५	१९२६
१९३३	१९३४	१९३५
१९४२	१९४३	१९४४
१९५१	१९५२	१९५३
१९६०	१९६१	१९६२
१९६९	१९७०	१९७१
१९७८	१९७९	१९८०

यह स्मरण रखना चाहिए इस परिच्छेद में जिस भाग्यांक के अनुसार शुभाशुभ के लिए उपर्युक्त वर्ष महत्वपूर्ण बताए हैं वह "भाग्यांक"—जन्म तारीख, महीना तथा सन् की संख्या के सब अंकों को जोड़ कर निकाला जाता है।

उदाहरण के लिये महात्मा गांधी का जन्म २-१०-१८६९ को हुआ था।

जन्म तारीख =२
जन्म मास अक्तूबर =१०=१+०=१
जन्म वर्ष १८६९
(१+८+६+९=२४=२+४=६) =६
योग ९

इस पद्धति से महात्मा गांधी जी का संयुक्तांक ९ आया। इसी प्रकार अन्य व्यक्तियों की जन्म तारीख, जन्म मास तथा ईसवी सन् की संख्या जोड़कर संयुक्तांक बनाया जा सकता है।

डा० यूनाइट क्रॉस के मतानुसार भिन्न भिन्न भाग्यांकवालों को शुभ दिन, शुभ मास तथा शुभ तारीखों का कोष्ठ चित्र

भाग्यांक	शुभ वार	शुभ मास	शुभ तारीख
१	रविवार, बृहस्पतिवार	जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, और अक्तूबर	१, १०, १९, २८
२	सोमवार, बुधवार	फ़रवरी, अप्रेल, अगस्त, और नवम्बर	२, ४, ८, ११, १६, २०, २२, २६, २९, ३१
३	मंगलवार, शुक्रवार	मार्च, मई, जुलाई, जून, सितम्बर और दिसम्बर	३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०
४	बुधवार, सोमवार	अप्रेल, फरवरी और अगस्त	२, ४, ८, १३, १६, २०, २२, २६, ३१
५	बृहस्पतिवार, शनिवार	मई, जनवरी, मार्च, जुलाई	५, १०, १४, १९, २३, २५, २८
६	शुक्रवार, मंगलवार	जून, सितम्बर	६, ९, १५, १८, २४
७	शनिवार, बृहस्पतिवार	जुलाई, जनवरी, मार्च और मई	७, १४, १६, २५, २८
८	सोमवार, बुधवार	अगस्त, फरवरी, अप्रैल,	४, ८, १६, १७, २६
९	मंगलवार, शुक्रवार	सितम्बर, मार्च, जून	९, १५, १८, २४, २७

पृष्ठ ६६ पर कोष्ठचित्र अंगरेज़ी[1] की पुस्तक से दिया गया है।

जो तारीख़ें रेखांकित हैं उन्हें विशेषतया अनुकूल समझना चाहिये। इसके अतिरिक्त किस भाग्यांक की किस अंक से सहानुभूति है यह पहिले बताया जा चुका है (देखिये पृष्ठ ६३), उसके अनुसार भी गत जीवन की घटनाओं से अनुमान लगाना चाहिये कि कौन सा अंक विशेष शुभ जाता है।

श्री हेलिन हिचकौक ने भाग्यांक से शुभाशुभ वर्ष, मास तथा दिन निकालने का, तथा कौन सा दिन किस कार्य के लिये विशेष उपयुक्त होगा इसका विशद वर्णन किया है। इस विषय में विशेष अभिरुचि रखने वाले उनकी पुस्तक[2] के पृष्ठ ९९ से १२१ पढ़ें तो ज्ञानवृद्धि होगी। किन्तु इन पंक्तियों के लेखक के मतानुसार अंक ज्यौतिष-विद्या के मूल सिद्धान्तों को इतनी सरल रीति से कार्य में लाना चाहिये कि हम लोग उसका दैनिक व्यवहार में उपयोग लाकर लाभ उठा सकें। इसलिये हमारे मतानुसार सर्व प्रथम जन्म की तारीख़ के अनुसार तृतीय प्रकरण में जो नियम बताये गये हैं, उनका अनुशीलन और व्यवहार विशेष उपयोगी होगा।

अंक विद्या और यंत्र

यह बात नहीं है कि केवल पाश्चात्य ज्यौतिषियों ने ही अंकों को शुभ या अशुभ माना है। कुछ अंकों को या अंकों के समूहों को

---

1. "Psychology of Fate" Published by Herbert Jenkins Ltd. 3 York Street, St. James, London S. W. 1

2. "Your Number, Please" by Helyn Hitchcock A. B. Published by W. H. Allen & Co: Ltd. 43 Esse Street Strand London W.C. 2.

अनादि काल से शुभ मानने की परम्परा भारतवर्ष में भी चली आई है। सेफ़ेरियल नामक अंगरेज़ ज्योतिषी[१] ने लिखा है कि ९ वर्गों को ९ कोष्ठों में निम्नलिखित प्रकार से लिखना 'पूर्णता' का प्रतीक है देखिये (क) तथा (ख) :—

(क)

४	९	२
३	५	७
८	१	६

(ख)

३	१	९
६	७	५
२	८	४

(ग)

८	१	६
३	५	७
४	९	२

उनके विचार से यह 'पूर्णता अथवा ईश्वर' का प्रतीक है। परन्तु हम भारतीय इसे—देखिये (ग)—इस प्रकार लिखने के सदैव से अभ्यासी रहे हैं और प्रायः इस प्रकार का अंक-कोष्ठ चित्र दुकानों के मुख्यद्वार के पास भी ऋद्धि, सिद्धि तथा धन की पूर्णता के लिये बना दिया जाता है। यद्यपि अंगरेज़ ज्योतिषी इसे 'शनि' से सम्बन्धित मानते हैं किन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार यह १५ का यंत्र (इसकी संख्याओं को किसी ओर से जोड़िये योग १५ ही होगा) ग्रहराज 'सूर्य' का प्रतीक है। भारतीय ज्योतिष तथा मंत्रशास्त्र में इन 'यंत्रों' का उपयोग अनेक काम्य तथा आपत्ति-निवारक प्रयोगों में किया जाता है और विधि पूर्वक केसर आदि सुगंधित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिखकर—सोने, चाँदी या ताँवे के तावीज में वन्द कर शरीर पर धारण करने से शुभ प्रभाव दिखाता

१. The Kabala of Numbers पृ० ९३—९५

है। इसके विस्तृत विवरण के लिये 'यंत्र चिन्तामणि' तथा अन्य मंत्रशास्त्र के ग्रन्थ देखने चाहियें। पीछे (क) या (ख) में जो यंत्र दिया गया है, उससे भिन्न भारतीय शास्त्रानुसार १५ का यंत्र होता है।[१] नीचे नवों ग्रहों के यंत्र दिये जाते हैं :—

सूर्य का यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र का यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल का यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

शास्त्रकार इन्हें बनाने की पद्धति—किस अंक को कहाँ लिखना यह बताकर लिखते हैं "रसेन्दुनागा···विलिख्य धार्यं गद-नाशनाय वदन्ति गर्गादि महामुनीन्द्राः" अर्थात् इसको धारण करने से रोगादि उत्पात शांत होते हैं, ऐसा गर्ग आदि महा मुनीन्द्रोंका कथन है। 'नगद्विनन्दा ······चन्द्रकृतारिष्ट विनाशनाय धार्यं मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम्' अर्थात् चन्द्रमा जनित पीड़ा को दूर करने के लिये इस चन्द्रमा के यंत्र को धारण करना चाहिये। 'गजाग्निदिश्याथ······भौमस्य यंत्रं क्रमतो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः। अर्थात् जब गोचर से या अनिष्ट राशि या स्थान में होने से मंगल अपनी दशा, अन्तर्दशा में पीड़ा करे या सन्तानकष्ट, रक्त विकार आदि मंगल जनित दुष्प्रभाव हो तो इस यंत्र के धारण से लाभ होता है।

१. देखिये बृहद्दैवज्ञरंजन पृ० ६६।

बुध का यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बृहस्पति का यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र का यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

'नवाब्धि रुद्रा······विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे वदन्ति यंत्रं शशिजस्य धीराः।' यदि बुध जनित—रोग, पित्त प्रकोप, चर्मरोग, व्यापार में हानि, मित्रों से विरोध आदि दुष्ट फल घटित हो रहे हों और उनका कारण बुध ग्रह का अनिष्ट प्रभाव हो तो इस यंत्र को धारण करे। "दिग्वाणसूर्या शिव······विलिख्य धार्यं गुरुयंत्रमीरितं रुजा विनाशाय वदन्ति तद्बुधाः"। अर्थात् गुरु गोचरवश या महा-दशावश रोग आदि कष्ट कर रहे हों तो इस यंत्र को धारण करने से शांति होती है। 'गुरु' बृहस्पति को कहते हैं। 'रुद्रांग विश्वा··· भृगोः कृतारि विनाशनाय धार्यं हि यंत्र मुनिना प्रकीर्तिता 'अर्थात् शुक्र जनित पीड़ा (विशेषकर वीर्य सम्बन्धी रोग, लक्ष्मी की हानि, स्त्री सुख हानि) को दूर करने के लिये यह यंत्र बहुत उपकारी है।

शनि का यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु का यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु का यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

"अर्काद्रि......विलिख्य भूर्जोपरिद्धार्य विद्वत् शनेः कृतारिष्ट-निवारणाय"। भोज पत्र पर लिखकर इसे धारण करना चाहिये। शनि के महाप्रकोप से कौन त्रस्त नहीं होता ? 'साढ़ेसाती शनि' किसे परेशान नहीं करती ? अनिष्ट शनि की दशा, अन्तर्दशा तो मानहानि, द्रव्यहानि, शारीरिक क्लेश, मानसिक त्रास, अनेक व्याधि उत्पन्न करती है। उसको शांत करने के लिये अंक-विद्या, यंत्र विद्या का आश्रय लेना उचित है। राहु के लिये लिखते हैं 'विश्वाष्ट तिथ्या......विलिख्य यंत्रं सततं विधार्यं राहोः कृतारिष्ट निवारणाय।" राहुजनित पीड़ा को दूर करने के लिये इसे सदैव धारण करना चाहिये। 'मनुखेचर भूपा......दुःखनाशकराः" यह केतु का यंत्र बनाने और धारण करने का विधान बताया है।

उधर अंगरेज़ ज्यौतिषी जिस यंत्र को बहुत थोड़े से शब्दों में बताते हैं—वही बात हमारे आर्ष ग्रन्थों में सुस्पष्ट और विस्तृत रूप से मिलती है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने कैसे यह ज्ञात किया कि इन अंकों को इस क्रम से लिखने से विशेष शक्ति या प्रभाव उत्पन्न होता है इसका रहस्य हमारी समझ से बाहर है। उनकी यौगिक शक्ति और ऋतंभरा प्रज्ञा से इस प्रकार का ज्ञान संभव था। हम तो केवल उनके चरण चिह्नों का अनुसरण कर सकते हैं और अंक-विद्या से लाभ उठा सकते हैं।

५वाँ प्रकरण

'नाम' और अंक विद्या का सम्बन्ध

सभी देशों में मनुष्य के नाम का विशेष महत्व माना गया है। कुछ देशों में सम्राट् या राजा के नाम के लिये कुछ नाम विशेष निर्धारित कर दिये जाते हैं और बारंवार उन्हीं नामों की पुनरावृत्ति होती रहती है। यथा जार्ज प्रथम, जार्ज द्वितीय आदि। जयपुर राज्य में भी यही क्रम था; माधव सिंह जी प्रथम, माधव सिंह जी द्वितीय आदि। दक्षिणी भारत में कुछ कुटुम्वों में प्रथा है कि जो नाम बाबा का होता है वही ज्येष्ठ पौत्र का। भारत के कुछ भागों में यह प्रथा प्रचलित है कि विवाह के उपरान्त कन्या के वैयक्तिक नाम का भी परिवर्तन कर दिया जाता है। पत्नी का कौटुम्बिक नाम (सरनेम) तो पाश्चात्य देशों तथा पूर्वी देशों में बदला ही जाता है किन्तु जैसा ऊपर बताया गया है कुछ प्रान्तों में कन्या का पितृ गृह का नाम सर्वथा परिवर्तित कर उसका नवीन नाम रख दिया जाता है। इस नवीन नाम की योजना का अन्तर्गत भाव यह होता है कि नवीन नाम, पति के नाम के अनुकूल हो। इस कारण यदि पति का नाम हुआ हर्ष सिंह तो पत्नी का नाम करण किया जायेगा हर्षप्रिया, हर्षलता या अन्य इसी प्रकार का नाम।

भारतीय पद्धति के अनुसार नाम के प्रथम अक्षर का विशेष महत्व है। इससे राशि तथा नक्षत्र का निर्णय किया जाता है। नाम का प्रथम अक्षर ही "वर्ण स्वर" आदि का आधार है। इस

कारण पत्नी के नवीन नाम का प्रथम शब्द भी—यदि वही हो जो पति के नाम में प्रथम शब्द है—तो दोनों में प्रेम रहेगा। पत्नी के नवीन-नाम-करण का यही सिद्धान्त है।

यहूदियों में प्रथा है कि जब मनुष्य मरने लगता है तो उसके सम्बन्धी दौड़कर मन्दिर में जाते हैं और रोगी के नाम का परिवर्तन कर दिया जाता है—इस आशा से कि शायद नाम बदलने से—प्राचीन नामजनित दुष्प्रभावों का अन्त हो जावे और बीमार बच जावे।

संभवतः सन्यास लेते समय जो नाम बदलने की प्रथा है उसमें भी यह सिद्धान्त निहित है कि गार्हस्थ्य जीवन के नाम से संश्लिष्ट सब संस्कार और वासनाएँ सदा के लिये छूट जावें। भारत में दो नामों की प्रधानता है। एक राशि नाम की; दूसरे प्रचलित नाम की। राशि का नाम जन्म नक्षत्र के चरण के अनुसार रक्खा जाता है और प्रचलित नाम वह है जो लोकव्यवहार में प्रचलित रहता है। इस पुस्तक में बारँबार जहाँ 'नाम' की चर्चा आती है वहाँ कौन सा नाम समझा जावे यह शंका होना स्वभाविक है। इस सम्बन्ध में शास्त्रीय मत निम्नलिखित है[१] :—

> विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे
> जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।
> देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके
> नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।

अर्थात् सर्व मंगलकार्यों में, यात्रा में, ग्रहगोचर विचार में जन्म

१. ज्योतिर्निबन्ध (आनन्दाश्रम पूना से प्रकाशित) पृ० ६६

राशि की प्रधानता है 'नाम' की राशि का विचार न करे। देश, ग्राम, गृह, युद्ध, सेवा (नौकरी), व्यवहार (मुकदमा या व्यापार) में प्रचलित नाम से ही राशि का विचार करे—जन्म 'राशि' का विचार न करे। "राजमार्तण्ड" के अनुसार—जिसकी जन्म राशि मालूम न हो उसके सब विचार में प्रचलित नाम से ही राशि का विचार करे। "दीपिका" का भी यही मत है। **"जन्म न ज्ञायते येषां तेषां नाम्नो गवेष्यते।"**[१]

सिद्धान्त यह है कि जहाँ 'जन्मनाम', यह विशेष निर्देश किया हो वहाँ जन्म कुंडली का 'नाम' समझना चाहिये अन्यथा प्रसिद्ध नाम ग्रहण करना चाहिये। किसी मनुष्य के कई प्रसिद्ध नाम हों तो किसका ग्रहण करना—इसके सम्बन्ध में शास्त्रीय व्यवस्था यह है कि सोता हुआ मनुष्य जिस नाम से जग जावे वह प्रधान है।

प्रसुप्तो येन जागर्ति, येनागच्छति शब्दितः।
तन्नाम्नश्चादिमो वर्णो ग्राह्यस्तस्माद् भ निर्णयः॥[१]

राशि, वर्ण स्वर आदि में नाम का प्रथम अक्षर ही लिया जाता है (जैसे किसी का नाम है "राम कृष्ण" तो 'नाम का प्रथम अक्षर 'रा' होने से उसकी राशि तुला, वर्ण स्वर 'ए', आदि) किन्तु अब नीचे पाश्चात्य अंक-विद्या के जिस सिद्धान्त[२] से परिचय कराया जाता है उसके अनुसार सम्पूर्ण नाम की संख्या बना कर शुभाशुभ

---

१. देखिए नरपति जयचर्या अध्याय २ (पृ० १५)

२. देखिये Your Number, Please by Helyn Hitchcock A.B. पृ० ११ तथा Numerology for Every body by Montrose पृ० ४

विचार किया जाता है। अंगरेज़ी वर्णमाला में २६ वर्ण हैं। नीचे प्रत्येक वर्ण तथा उसका "अंक" (संख्या में मान) दिया जाता है :—

कीरो का मत

वर्ण	अंक	वर्ण	अंक	वर्ण	अंक
A	१	J	१	S	३
B	२	K	२	T	४
C	३	L	३	U	६
D	४	M	४	V	६
E	५	N	५	W	६
F	८	O	७	X	५
G	३	P	८	Y	१
H	५	Q	१	Z	७
I	१	R	२		

क्षेप में

कुछ अंग्रेज़ी, अंक-विद्या के विद्वानों को ऊपर जो 'की ... । इस अंक
मत दिया गया है वह मान्य नहीं है। उनके मत या भलाई के लिये
भिन्न हैं। जिन्हें इस विषय में विशेष गवेषणा होते हैं।
टिप्पणी में दिये गये मतों का अवलोकन यक्ति को अन्य लोगों से भय,
उदाहरण है। असंभावित स्थानों से

मान लीजिये हमें 'जवाहर लाल ...
अंक-विद्या के अनुसार संयुक्त संख्या तथा कष्ट का द्योतक है और
बनाइये : ये—अपनी स्वार्थ की वेदी पर
ने चढ़ाते हैं।

१. Cheiro's Book of Numbers पृ० तिक है कि इरादों और कार्य
२. देखिये "Your Number Please"
The Kabala of Numbers पृ० ७८

क्रमों में सदैव परिवर्तन होता रहेगा। स्थान-परिवर्तन भी द्योतित होता है। बहुत से लोगों की यह धारणा है कि यह अशुभ अंक है, किन्तु वास्तव में यह अशुभ है नहीं। १३ ऐसी शक्ति का प्रतीक है—जो उचित रूप से प्रयुक्त न होने पर ध्वंसकारी होती है।

१४. इस अंक से गति, तथा जन एवं वस्तु की समुदायात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है। आँधी, पानी, तूफ़ान, अग्नि, भूकम्प आदि भय की आशंका होती है। कार्य-परिवर्तन, धन अथ सट्टे के लिये यह अंक शुभ है। किन्तु जातक के अतिरिक्त अ मनुष्यों की गलती से कुछ भय की आशंका रहती है।

१५. यह मन्त्र-शास्त्र किंवा रहस्य से सम्ब क है। यदि किसी के नाम के एक शब्द (जिससे वह पुकारा ज है) अंकों का योग '१५' आवे तो भाग्य का द्योतक है। किन्तु यदि ४ अथवा ८ का अंक-नाम के अन्य शब्दों का योग हो तो यह शुभ न हीं होता।

दूसरों से धन की प्राप्ति के लिये यह अंक शुभ है। इस अंक वाले व्यक्ति संगीत तथा कला के प्रेमी और अच्छे र वक्ता होते हैं।

१६. इस अंक से यह प्रकट होता है कि रग नुष्य बहुत ऊँचा उठेगा किन्तु बाद में उसका अधःपतन होगा। (संयुक्त: इस अंक वालों को दुर्घटना से बचना चाहिये। यदि किसी । अर्थात् इस पद्ध के संयुक्ताक्षरों का अंक १६ हो तो समझिये कि ाक्षाओं के चूर्ण होने का भय है।

१७. यह अंक आत्मिक श विशेष सम्बन्ध रखता है। ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों तथा विपत्त विचारों ? कराओं को पार कर, नाम कमाने में समर्थ होता है और उसके जीवन के बाद भी उसकी कीर्ति रहती है। यह शुभ अंक है।

फल है य, न

१८. इस अंक से कलह और शत्रुता प्रकट होती है। अर्थात् जिसके नाम के संयुक्ताक्षरों का योगांक १८ हो वह कौटुम्बिक कलह तथा अन्य जनों की शत्रुता से पीड़ित रहता है। प्राय: ऐसे व्यक्ति शत्रुता किंवा ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों द्वारा भी धन संग्रह करने में प्रवृत्त होते हैं। यदि किसी तारीख़ का संयुक्तांक १८ हो तो उसे भी सहसा किसी शुभ कार्य के लिये नहीं चुनना चाहिये; यथा १ जनवरी १९६०=१+१+१+९+६+०=१८

१९. यह शुभ अंक है। यह सूर्य का प्रतीक है। इससे हर्ष, सफलता, प्रतिष्ठा तथा मानवृद्धि प्रकट होती है।

२०. इस अंक को भी शुभ माना गया है। "जागृति" तथा 'न्याय' का प्रतीक यह अंक है। इससे नवीन योजना व नई महत्त्वाकांक्षाएें प्रकट होती हैं। किन्तु निश्चय ही सांसारिक सफलता होगी, यह इस अंक से नहीं कहा जा सकता। यदि भविष्य विषयक प्रश्न में यह अंक प्रयुक्त किया जावे तो इससे विलम्ब तथा कार्य में कठिनाइयाँ या अड़चनें प्रकट होती हैं।

२१. इससे उन्नति, प्रतिष्ठा, पद वृद्धि आदि प्रकट होती हैं। प्रश्न में यदि यह अंक प्रयुक्त हो तो कार्य की सफलता प्रकट होती है।

२२. यह इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति तो अच्छा है किन्तु वह अपने स्वप्न की दुनिया में रहता है—मिथ्या आशा में अपना समय व्यतीत करता रहता है और जब विपत्ति बिल्कुल सिर पर आ जाती है तब चौकन्ना होता है। इससे यह भी प्रकट होता है जो धारणा बना रक्खी है वह मिथ्या है। प्रश्न में यह अंक प्रयुक्त हो तो भी यही अर्थ लगाना चाहिए।

व्यक्ति घबराया हुआ, बेचैन सा रहता है। आत्मसंयम का उद्योग करना चाहिए।

५७. यह अंक कार्य या व्यवसाय में सफलता का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति खुश मिजाज तथा क्रियाशील होता है।

५८. इस संख्या वाले अच्छे चिकित्सक हो सकते हैं। ऐसे व्यक्ति स्पष्ट व्यवहार वाले होते हैं तथा दूसरों से स्नेह करते हैं।

५९. इस अंक वाले व्यक्ति की भय और विपत्तियों से सदैव रक्षा होती है। ऐसा व्यक्ति वहुत प्रकार के कारबार करता है और यात्रा भी बहुत करता है। जलयात्रा विशेष सफलताद्योतक है। यदि बैंक या दलाली का कार्य करे तो पूर्ण सफलता हो किन्तु बेई-मानी की प्रवृत्ति भी होगी। ऐसा व्यक्ति प्रायः विजय प्राप्त करता है और दीर्घजीवी होता है। केवल दोष यही है कि ऐसे मनुष्य की सट्टे तथा बेईमानी की ओर प्रवृत्ति होती है।

६०. इस अंक वाला व्यक्ति खुशमिजाज़ होता है और उसे डाक्टर, नर्स, आदि के कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है।

६१. इस अंक वाला व्यक्ति यात्रा का शौकीन, ा। प्रिय तथा आत्म संयमी होता है। ा

६२. इसका प्रभाव वही है जो ५३ का है।

६३. इस अंक वाले व्यक्ति स्वस्थ, और दूसरों की उन्नती उपकार के लिए कार्य करने वाले होते हैं। प्राचीन सामाजिक ओं के संशोधन की ओर उनका विशेष ध्यान रहता है। व्यापार में भी सफल होते हैं किन्तु अपव्यय की ओर भी प्रवृत्त होते हैं। हानि या लाभ के विषय में निर्णायकता से कुछ नहीं कहा जा सकता।

६४. इस अंक वाले व्यक्ति को व्यापार की अपेक्षा नौकरी या

अपना पेशा (डाक्टरी, वकालत आदि) विशेष लाभ प्रद होगा। साहित्यिक प्रवृत्ति होती है। वैवाहिक जीवन के वन्धन से अरुचि रहती है।

६५. इस अंक वाले व्यक्ति को वड़ों का आश्रय प्राप्त होता है वैवाहिक जीवन भी सुखमय रहता है किन्तु चोट लगने या दुर्घटना का भय रहता है।

६६. इसका वही प्रभाव है जो ५७ का है।

६७. इसका वही प्रभाव है जो ५८ का है।

६८. इसका वही प्रभाव है जो ५९ का है।

६९. इस अंक से सम्मान, प्रतिष्ठा, सौभाग्य तथा कीर्ति सूचित होते हैं।

७०. यह सौभाग्यसूचक अंक है किन्तु उतना शक्तिशाली नहीं।

अब नाम का संयुक्त अनाकर किस प्रकार विचार करना यह वताया जाता है :—

नाम शुभ है या नहीं

किसी नाम की शुभता या अशुभता इस वात पर निर्भर है कि उस नाम का 'संयुक्तांक' क्या वनता है ? इस संख्या का क्या गुण और प्रभाव पिछले पृष्ठों पर दिया गया है।

नाम का 'संयुक्तांक' जन्म तारीख के मूल अंक से सहानुभूति रखता है या विरोध।

ऊपर श्री जवाहरलाल नेहरू जी के नाम का 'संयुक्तांक' वना कर वताया गया है कि अंगरेजी वर्णमाला के अनुसार "जवाहर लाल" का संयुक्तांक '२४', 'नेहरू' का २३ तथा दोनों नामों का (व्यक्तिगत तथा कुल-नाम) सम्मिलित—संयुक्तांक ४७ वनता है। अव आप

पिछले पृष्ठों में देखिए कि २४ का क्या प्रभाव है; '२३' का क्या तथा '४७' का क्या ? यदि नाम के 'संयुक्तांक' का शुभ प्रभाव दिया है तो नाम को शुभ समझना चाहिए । बहुत से विज्ञ पाठकों को यहाँ यह शंकाहोना स्वाभाविक है कि नाम के 'संयुक्ताँक' पर विचार करते समय' जवाहरलाल' इस पद पर विचार किया जाये या 'नेहरू' या 'जवाहर लाल नेहरू' पर । इस सम्बन्ध में यह निर्णय है कि जिसके जिस नाम से वह अधिक विख्यात हो वही नाम उसका—उपर्युक्त विचार में, ग्रहण करना चाहिए । हमारे ख़याल से माननीय पंडित जी का 'नेहरू' नाम विश्व विख्यात है । भारतीय तो 'पंडित जी' या 'जवाहर लाल जी' इन नामों का भी—आपस की बातचीत में प्रयोग करते हैं । परन्तु विश्व में 'नेहरू' नाम ही विशेष प्रसिद्ध है । अतः कुछ गुण तो '२४' (जवाहर लाल) का और कुछ '४७' का (जवाहरलाल नेहरू) भी मिलेगा। परन्तु मुख्य प्रभाव '२३' (नेहरू) का माना जावेगा ।

अब एक दूसरे नाम का उदाहरण दिया जाता है :—

महात्मा गांधी का नाम यद्यपि मोहनदास था तथापि इस काप्रयोग जनता ने नहीं किया । उनका गांधी नाम ही विख्यात हुआ ।

G=३
A=१
N=५
D=४
H=५
I=१

१९

देखिए इस '१९' अंक का प्रभाव वहुत उत्तम दिया गया है। कहते हैं कि 'नेपोलियन' जब तक अपना नाम Napolean Bounaparte लिखता रहा तब तक उसके नाम के 'संयुक्तांक' का शुभ प्रभाव रहा। किन्तु दैव दुर्विपाक से उसने अपने नाम की हिज्जे बदल लिये और नवीन हिज्जे (अंगरेज़ीं वर्णमाला के प्रयुक्त अक्षरों) Bonapart का प्रभाव वड़ा अशुभ रहा।[1]

हमें कई भुक्तभोगी सज्जनों ने बताया कि जब तक वह अपना नाम प्राचीन प्रकार से लिखते रहे तब तक उनकी उन्नति या भाग्य वृद्धि नहीं हुई। किन्तु जब उन्होंने नाम के हिज्जे वदललिये तो संयुक्तांक भिन्न हो जाने से जो नयी संख्या बनी उसका शुभ प्रभाव होने के कारण भाग्यवृद्धि हुई।

प्राय: 'नाम' वदलना आसान नहीं है। परन्तु नाम की हिज्जे वदलना सुगम है। उदाहरण के लिए किसी सज्जन का नाम "कैलास चन्द्र" गोयल है।

K=२	C=३	G=३
A=१	H=५	O=७
I=१	A=१	Y=१
L=३	N=५	A=१
A=१	D=४	L=३
S=३	R=२	
	A=१	
११	२१	१५

१. देखिये Cheiros Book of Numbers पृष्ठ १४९ तथा Numerology for Every body पृष्ठ ५६, ५७।

अंगरेजी वर्णमाला के प्रतिवर्ण के योग के अनुसार कैलास चन्द्र गोयल नाम का संयुक्तांक ४७ हुआ। '४७' का वही प्रभाव होता है जो '२६' का (देखिए पृष्ठ ८१ तथा ८३)। '२६' का शुभ प्रभाव नहीं है। इसलिए यदि यह सज्जन अपना नाम नहीं बदलें (क्योंकि नाम बदलने में अनेकानेक झंझट हैं) किन्तु अपना नाम 'कैलास चन्द्र गोयल' के स्थान में केवल "कैलासचन्द्र" लिखें तो भाग्योदय कारक होगा क्योंकि इस नाम का संयुक्तांक ३२ होगा जो बहुत शुभ है।

'नाम' और जन्म तारीख का सामञ्जस्य

यह एक विचार है। दूसरा यह भी विचार है कि नाम का संयुक्तांक 'जन्म तारीख' के अनुकूल पड़ता है या नहीं। उदाहरण के लिए 'कैलासचन्द्र' इस नाम का संयुक्तांक '३२' हुआ यदि 'Kailas Chandra' के स्थान में 'Kailash Chandra' लिखा जाये ('s' के बाद एक 'h' और जोड़ दिया जावे—क्योंकि 'कैलास' और 'कैलाश' दोनों रूप भाषा की दृष्टि से शुद्ध हैं) तो 'h' का अंक ५ और सम्मिलित हो जाने से,

K=२	C=३
A=१	H=५
I=१	A=१
L=३	N=५
A=१	D=४
S=३	R=२
H=५	A=१
१६	२१

संयुक्तांक '३७' हुआ। इस अंक का भी शुभ फल है। (देखिए पृष्ठ ८२)। अब कैलासचन्द्र को '३२' तथा '३७' में से उस अंक को पसन्द करना चाहिए जो उनकी जन्म तारीख के अनुकूल हो :—

३२=३+२=५

३७=३+७=१०=१+०=१.

यदि इनकी जन्म तारीख ५, १४ या २३ हो तो इन्हें ३२ की संख्या विशेष शुभ होगी। यदि इनकी जन्म तारीख १, १०, १९, २८ या ४, १३, २२, ३१ हो तो इन्हें '३७' की संख्या शुभ होगी। यदि २, ११, २०, २९ अथवा ७, १६, २५ तारीख को जन्म हुआ हो तो भी '३७' की संख्या शुभ होगी।

इस सम्बन्ध में एक बात और उल्लेखनीय है।

(i) यदि जन्म-तारीख का मूल अंक '४' हो और नाम का संयुक्तांक '८' आता हो तो नाम के अक्षरों को इस प्रकार बदलिए कि नाम के संयुक्तांक ३, ६ या ९ बन जावें।

(ii) इसी प्रकार यदि जन्म-तारीख का मूल अंक ८ हो और नाम का संयुक्तांक '४' आवे तो नाम के अक्षरों को इस प्रकार बदलिए कि नाम का संयुक्तांक ३, ६ या ९ बन जावे।

कहने का तात्पर्य यह है कि जन्म-तारीख का मूल अंक तथा नाम का 'संयुक्तांक'—इन दोनों में से एक ४ और दूसरा ८ होना शुभ नहीं।

जिस प्रकार हमने पिछले पृष्ठों में यह विचार किया है कि जन्म-तारीख के 'मूल अंक' और नाम के संयुक्तांक में सामञ्जस्य होना शुभ है, उसी प्रकार यदि मनुष्य के जन्म-तारीख के मूल अंक, नामांक तथा जिस शहर में वह कारबार करता है उस शहर के

नामांक में भी सामञ्जस्य हो तो, उस शहर में उस मनुष्य की विशेष श्री-वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए कोई सज्जन पूछते हैं कि "मैं नई दिल्ली में कारबार कर रहा हूँ, यदि इलाहाबाद में दूकान खोलूं तो कैसा रहेगा ?"

पिछली प्रक्रिया के अनुसार नई दिल्ली तथा इलाहाबाद दोनों नामों के संयुक्तांक पृथक्-पृथक् बनाइये :—

N=५	A=१
E=५	L=३
W=६	L=३
D=४	A=१
E=५	H=५
L=३	A=१
H=५	B=२
I=१	A=१
	D=४
३४=३+४=७	२१=२+१=३

अब यदि उनके जन्म-तारीख के मूल अंक तथा नाम के 'संयुक्तांक' इन दोनों अंकों की '७' से विशेष सहानुभूति है तो नई दिल्ली ही उनके लिए विशेष शुभ रहेगी। यदि '३' से विशेष सहानुभूति है तो इलाहाबाद विशेष उपयुक्त होगा।[१] इसी प्रकार मोहल्ले आदि का विचार किया जा सकता है।

इसी प्रकार किराये का मकान लेते समय या अन्य अवसरों पर

१. Numerology For Every body by Montrose पृष्ठ ५

यह निर्णय करने में कि कौनसा मकान विशेष शुभ होगा, अंक-विद्या से लाभ उठाया जा सकता है। अथवा हम अपने मकान का ऐसा नाम रख सकते हैं जिसका 'संयुक्तांक' हमारे लिए अनुकूल हो। कीरो का मत है कि जिसका मूल अंक ४ या ८ हो उसे नवीन नाम रखते समय या मकान चुनते समय ४ या ८ वाला मकान नहीं चुनना चाहिए।

नाम के संयुक्तांक के अनुसार कौन सी तारीख महत्वपूर्ण कार्य के लिए उपयुक्त होगी ?

ऊपर जो नाम के संयुक्तांक बनाने के उपयोग दिये गये हैं, उनके अतिरिक्त 'संयुक्तांक' की एक उपयोगिता और है।

उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को यह देखना है कि वह वेतन-वृद्धि के लिए प्रार्थना पत्र किस दिन भेजे या अपने अफ़सर से किस दिन मिले। मान लीजिए उसकी जन्म-तारीख ११ अप्रैल है। जैसा कि तृतीय प्रकरण में बताया जा चुका है किसी भी महीने की तारीख २, ११, २०, २९ तथा ७, १६, २५ उसके लिए अनुकूल होंगी। इसके अतिरिक्त अंक १, १०, १९, २८ तथा ४, १३, २२, ३१ की भी मूल अंक '२' से सहानुभूति है। इस कारण ये तारीखें भी अनुकूल होंगी। किन्तु इस विचार में 'रामलाल', 'श्यामलाल', 'गोविन्द शरण', 'यज्ञदत्त' या 'देवदत्त'—सभी के लिए एक समान नियम लागू किया है; नाम के अलग-अलग होने पर भी क्या सब को एक ही तारीख समानरूप से अनुकूल होगी यह शंका होना स्वाभाविक है।

इस कारण निम्नलिखित पद्धति से यह निश्चित किया जाता है कि रामलाल को कौनसी तारीख वेतन-वृद्धि के लिए प्रार्थना पत्र

भेजने के लिए अनुकूल होगी ।

(क) रामलाल नाम का संयुक्तांक बनाइये :—

R = २
A = १
M = ४
L = ३
A = १
L = ३
———
१४

(ख) जन्म की तारीख़ का अंक ११ = १ + १ = २

(ग) मान लीजिए वह २१ जुलाई को प्रार्थनापत्र भेजना चाहते हैं तो, २१ = २ + १ = ३ ।

अब १४, २ तथा ३ को जोड़ने से योग हुआ १६। इस '१६' 'संयुक्तांक' का फल पिछले पृष्ठों में देखने से पता चलता है कि 'यह शुभ अंक है । यह सूर्य का प्रतीक है । इससे हर्ष, सफलता, प्रतिष्ठा तथा मानवृद्धि प्रकट होती है । (देखिये पृष्ठ ७६)

इस कारण 'रामलाल' को (जिसकी जन्म-तारीख़ ११ है) तारीख़ २१ शुभ होगी ।

इस प्रकार नाम के 'संयुक्तांक' और जन्म-तारीख़ के मूल अंक के सहयोग से निर्दिष्ट तारीख़ चुनने में भी 'नाम' का महत्व है ।

६ठा प्रकरण

मास, वार तथा घराटे का महत्व

इंग्लैण्ड के सम्राट् घराने का ज्योतिषियों और ज्योतिष सम्बन्धी फलादेशों से बहुत सम्बन्ध रहा है। इंग्लैण्ड के बादशाह जार्ज प्रथम का डचेज़ आफ ज़ैल से प्रेमसम्बन्ध हो गया और बादशाह ने उससे विवाह कर लिया। किन्तु बाद में इस महाराज्ञी का योरुप के काउन्ट कोनिग्समार्क से अनुचित सम्बन्ध हो गया और वह चाहती थी कि काउन्ट के साथ भाग जावे, किन्तु बादशाह ने महाराज्ञी को 'अह्लेन' के किले में बन्दी कर दिया और उससे अपना विवाह-विच्छेद कर लिया। तलाक दी हुई, इस डचेज़ ने बहुत उद्योग किया कि भाग निकले किन्तु वह असफल रही। अंत में उसने 'पार्ड ज़ेप्ल' नामक एक अंगरेज ज्यौतिषी की सहायता ली। इस ज्योतिषी ने जार्ज प्रथम की जन्म-कुण्डली बनाई—जो इंग्लैण्ड के राजकीय पत्रों में सुरक्षित रक्खी गई। इस जन्म-कुण्डली में उसने फलादेश किया था कि जिस दिन 'डचेज़' की मृत्यु होगी उसके ठीक एक वर्ष और एक दिन बाद बादशाह की मृत्यु होगी। हुआ भी ऐसा ही। 'डचेज़' की मृत्यु १० जून १७२६ को हुई और बादशाह की ११ जून सन् १७२७ को।

उपर्युक्त घटना का उल्लेख इसलिए किया गया है कि बहुत से लोग विशेष घटनाओं को केवल आकस्मिक संयोग कह कर टाल देते हैं। वास्तव में ऐसी घटनाएँ ज्योतिष के गंभीर सिद्धान्तों पर

अवलंबित हैं। कोई कोई महीने किसी देश, व्यक्ति या घराने के लिए बहुत महत्व पूर्ण होते हैं। नीचे जो ऐतिहासिक तिथियाँ दी गई हैं इनसे स्पष्ट होगा कि अप्रैल से लेकर जुलाई तक के मास इंग्लैण्ड के राज घराने के लिये बहुत महत्वपूर्ण हुए हैं।

"जार्ज प्रथम की मृत्यु	११ जून
जार्ज तृतीय का जन्म-दिन	४ जून
साम्राज्ञी विक्टोरिया का जन्मदिन	२४ मई
ड्यूक आफ यौर्क का जन्मदिन	३ जून
प्रिंसेज़ मेरी आफ तेक का जन्म दिन	२६ मई
एडवर्ड अष्टम (ड्यूक ऑफ विंडसर का जन्मदिन)	२३ जून
साम्राज्ञी विक्टोरिया सिंहासनारूढ़ हुई	२० जून
वाटरलू की प्रसिद्ध लड़ाई	१८ जून
जार्ज द्वितीय सिंहासन पर बैठे	११ जून
विलियम चतुर्थ गद्दी पर बैठे	२६ जून
सम्राट् सप्तम एडवर्ड की मृत्यु	६ मई
सम्राट् जार्ज पंचम की गद्दी नशीनी	६ मई
सम्राट् पंचमजार्ज की ताजपोशी	२२ जून
सम्राट् पंचम जार्ज का विवाह	६ जुलाई"

कीरो ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उसने यह सब विस्तार से अध्ययन किया था और इंगलैण्ड के राजघराने के सम्बन्ध में जो उसने 'अंक' विषयक या 'मास' विषयक निष्कर्ष निकाले थे वह उसने एडवर्ड सप्तम को स्वयं वताए थे।[१]

Cheiro's World Predictions page 82-83.

श्रनुभव से यह विदित होता है कि कोई कोई मास किसी किसी व्यक्ति को विशेष शुभ या श्रशुभ जाता है। किस तारीख़ में उत्पन्न व्यक्ति को कौन सा मास शुभ जावेगा ? इस सम्बन्ध में पाश्चात्य मत तृतीय प्रकरण में वताया जा चुका है।

भारतीय मत—श्रब भारतीय मत दिया जाता है। भारतीय मतानुसार ज्यौतिप के सिद्धान्तों से यह निकाला जा सकता है कि श्रमुक सौर मास (संक्रान्ति से संक्रान्ति तक) श्रमुक व्यक्ति को कैसा जावेगा। केवल श्रंक ज्योतिष से भारतीय मतानुसार शुभाशुभ मास निर्णन करना कठिन है। ज्यौतिष प्रेमियों की सुलभता के लिए नीचे की पंक्तियों में कुछ निर्देश मात्र किया जा रहा है :—

सर्वतोभद्र का विचार बहुत गहन, विस्तृत श्रौर सूक्ष्म ज्योतिष तथा नक्षत्र विद्या से सम्बन्ध रखता है; इस कारण इस छोटीसी श्रंक-विद्या में उसका परिचय देना सम्भव नहीं है। परन्तु पाठकों के लाभार्थ यह लिख देना श्रावश्यक है कि जब सूर्य राशि विशेष में रहता है तब कुछ दिशा 'श्रस्तमित' मानी जाती हैं। तीन-तीन मास तक-एक एक दिशा 'श्रस्त' रहती है :—

"नक्षत्राणि स्वरा वर्णा राशयस्तिथयो दिशः।
ते सर्वेऽस्तंगता ज्ञेया यत्र भानुस्त्रिमासिकः॥[1]

जिस मनुष्य के जन्म का नक्षत्र श्रस्त हो उसे रोग होता है, 'वर्ण' श्रस्त हो तो हानि होती है, 'स्वर' श्रस्त हो तो शोक होता है, राशि श्रस्त हो तो विघ्न होते हैं तथा जन्म-तिथि श्रस्त हो तो

१. विशेष विवरण के लिए देखिए 'नरपतिजयचर्या' पृष्ठ १००; फल-दीपिका पृष्ठ ३०३-३१५; जातक-सारदीप पृष्ठ ६०४ जातकादेशमार्ग श्र० ६ श्लोक १३।

भय होता है। 'पंचास्ते मरणं ध्रुवम्'। क्रूर दशा अन्तर्दशा के साथ पाँचों (नक्षत्र, वर्ण, स्वर, राशि तथा तिथि) अस्त हों तो निश्चय मरण होता है। प्रायः एक, दो या तीन के अस्त होने से भी काम-काज में उलझन और अड़चन पैदा हो जाती हैं। किसी किसी व्यक्ति के जन्म-नाम के प्रथम अक्षर, वर्ण, स्वर आदि सर्वतोभद्र चक्र की विविध दिशाओं में आ जाते है; इस कारण केवल अक्षर या स्वर आदि किसी एक के अस्त होने से उन्हें कोई ख़ास महीना अशुभ नहीं प्रतीत होता। किन्तु जिनके नाम के अक्षर, नक्षत्र, तिथि आदि कई, एक दिशा में पड़ जाते हैं—उनके यह सब एक साथ अस्त होने से विशेष कष्ट उत्पन्न करते हैं। इसलिए या तो सर्वतोभद्रचक्र सम्बन्धी पूर्व पृष्ठ में उल्लिखित पुस्तकों के आधार पर या अपने अपने गत जीवन के अनुभव से अपने लिए जो अशुभ मास हों उनमें विशेष सतर्क रहना चाहिए। भारतीय ज्योतिष के मतानुसार सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि में अधिक रेखा हों उस सौर मास में सब शुभ कर्म करने चाहिए और जिसमें कम रेखा हों उसमें यात्रा या अन्य महत्वपूर्ण कार्य न करे।

इस सम्बन्ध में पाश्चात्य मत तो पहले ही दिया जा चुका है कि कीरो के मतानुसार कौनसा मास किस अंक वाले को शुभ होगा।

वार का महत्व—मास के बाद मुख्यता होती है वार की। जिस प्रकार किसी तारीख़ या मूल अंक का किसी के जीवन में विशेष महत्व रहता है उसी प्रकार किसी वार की भी प्रधानता या महत्व किसी व्यक्ति या राष्ट्र के जीवन में देखा गया है।

प्रसिद्ध अन्वेषक कोलम्बस शुक्रवार में बहुत श्रद्धा रखता था। इसका कारण यह था कि उसके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ

शुक्रवार को ही हुई। और जब वारम्वार उसने अपने को शुक्रवार से प्रभावित पाया तो इस वार में उसकी श्रद्धा होना स्वाभाविक था। वह शुक्रवार ३ अगस्त १४९२ को अपनी लम्वी यात्रा के लिए रवाना हुआ। कोलम्वस ने शुक्रवार को ही एक द्वीप के आस-पास पक्षियों को देखा जिससे उसने अनुमान किया कि पास में कोई आवादी है। समुद्र में यात्रा करते करते जव भूमि का लक्षण दिखाई देता है तो कितना अपार हर्ष होता है यह केवल भुक्तभोगी ही अनुभव कर सकता है। ७० दिन लगातार चलने के वाद शुक्रवार को वह एक छोटे से अमेरिकन द्वीप पर उतरा। तदनन्तर शुक्रवार (१७ मई) को उसने वारसेलोना में विजय यात्रा की। शुक्रवार (३० नवम्वर) ही को उसने पियोरतोसान्तो में क्रास की स्थापना की और शुक्रवार (४ जनवरी) को ही वह स्पेन के लिए रवाना हुआ। वह जव विजयोल्लास के साथ पेलोस में प्रविष्ट हुआ तव शुक्रवार ही था। इस प्रकार हम देखते हैं कि कोई कोई वार भी है विशेष जीवन में वहुत महत्वपूर्ण होता है।

पाश्चात्य मत पहले दिया जा चुका है कि किस तारीख में उत्पन्न व्यक्ति को कौनसा वार विशेष शुभ होगा। भारतीय मतानुसार जिसकी जन्म कुण्डली में जो ग्रह वलवान् होगा तथा लग्नेश और चन्द्रराशीश का मित्र होगा वह शुभ होगा। किन्तु उपर्युक्त निर्णय के लिए जन्म कुण्डली की आवश्यकता होती है। इस कारण अपने अनुभव के आधार पर यह निश्चय करना चाहिए कि कौनसा वार शुभ तथा कौनसा अशुभ जाता है। जो वार शुभ जाते हों उन्हें महत्वपूर्ण कार्यों के लिए चुनना चाहिए—जो अनिष्ट जाते हों उन वारों में कोई वड़ा कार्य न करे। वहुत से अनुभवशील पाठकों

ने यह भी देखा होगा कि कुछ बरसों तक कोई वार अशुभ गया—लेकिन बाद में उसने अशुभता दिखाना छोड़ दिया। इसका कारण यह है कि यदि जन्म-कुण्डली के अनुसार किसी अनिष्ट ग्रह की दशा रहती है तो वह अशुभ प्रभाव दिखाता है। उसकी दशा समाप्त हो जाने पर या गोचरवश उसकी अशुभस्थिति न रहने पर वह अशुभता नहीं दिखाता।

बहुत से लोग प्राय: मंगल या शनि को—क्रूर वार समझने के कारण—अशुभ समझते हैं। परन्तु सर्वत्र ऐसा नहीं होता। यदि कोई वार अशुभ जाता हो तो उस दिन नमक नहीं खाना चाहिए। नमक नहीं खाने से शरीर में रक्तचाप कम रहता है। इस कारण मनुष्य के मस्तिष्क को विशेष उत्तेजित नहीं करता।

दिन का कौन सा घंटा अनुकूल (माफ़िक) रहेगा ?

पिछले प्रकरणों में यह बताया जा चुका है कि कौनसी तारीख़ किस व्यक्ति के लिए विशेष अनुकूल होगी। अब इस प्रकरण में यह विचार किया जाता है कि—किस दिन, कौनसा घण्टा विशेष माफ़िक रहेगा। इस विषय में पहिले भारतीय मत और उसके बाद पाश्चात्य मत बताया जावेगा।

घण्टे का विचार, एक बजे से दो बजे तक, दो बजे से तीन बजे तक, इस प्रकार घड़ी के घण्टों से नहीं करना चाहिए—बल्कि सूर्योदय से प्रारम्भ करना चाहिए। जिस दिन जिस स्थान पर विशेष कार्य करना हो उस दिन उस स्थान का सूर्योदय काल निकालना चाहिए। उदाहरण के लिए ३ जून सन् १९५७ को कोई महत्व का कार्य दिल्ली में करना है। इस दिन दिल्ली में सूर्योदय हुआ ५ बज कर २३ मिनट पर, तो प्रथम घण्टा हुआ ५-२३

अब प्रश्न यह है कि मीन राशि वाले व्यक्ति को मंगल को कोई कार्य करना है तो वह कब करे ?

मंगलवार को जब सूर्य, चन्द्र, मंगल या वृहस्पति की होरा हो तो उसे विशेष अनुकूल होगा। यह प्राचीन आर्ष सिद्धान्त पर अवलम्बित है। विशेष विवरण के लिए 'समर सार' नामक संस्कृत ग्रन्थ का वह प्रकरण देखना चाहिए जिसमें युद्धकाल में वर्जित होराओं का विवेचन किया गया है।

शुभ कार्य करने के लिए ऊपर जो चक्र दिये गए हैं कि किस व्यक्ति के लिए कौनसे घण्टे अनुकूल होंगे—उनके साथ यदि 'अमृत घटी' का योग भी कर लिया जावे तो सोने में सुगन्धि हो जावे। अमृत घटी के चक्र प्रायः पंचागों में दिए रहते हैं—यहाँ भी पृष्ठ १०५ दिये गये हैं।

नवीनमत—बहुत से विद्वान् घण्टे की संख्या को मुख्य मानते हैं। उनके मतानुसार सर्वत्र सब स्थानों के .ए १२ से एक तक एक घण्टा, १ बजे से दो बजे तक दूसरा घण्टा—इस आधार पर जो संख्या किसी व्यक्ति को अनुकूल हो उसी संख्या का घण्टा अनुकूल होगा। उनके हिसाब से जो सप्ताह का दिन हो उसकी संख्या (रवि की १ तथा ४, सोम की २ तथा ७, मंगल की ९, बुध की ५, बृहस्पति की ३, शुक्र की ६, शनि की ८) तथा घण्टे की संख्या, दोनों यदि किसी व्यक्ति के अनुकूल हों तो वह घंटा उस व्यक्ति के लिए अच्छा रहेगा।

[1]बंबई के प्रसिद्ध विद्वान् श्री बी० जी० रेले द्वारा लिखित एक

१. Practical Astro-Numerology से. श्री बी० जी० रेले।

पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसके विद्वान् लेखक के अनुसार सूर्योदय से पहला घंटा, फिर दूसरा घंटा, फिर तीसरा घंटा—इस प्रकार घंटा लेने से प्रत्येक स्थान का सूर्योदय भिन्न होने के कारण और किसी एक स्थान में भी सूर्योदय में निरन्तर अंतर पड़ते रहने के कारण 'होरा' के अनुसार अनुकूल या प्रतिकूल घंटा चुनने में बहुत असुविधा होगी। इस कारण प्रतिदिन मध्याह्न से—१२ बजे मध्याह्न से एक बजे तक—सोमवार को चन्द्रमा का घंटा, दूसरा घंटा मंगल का, तीसरा घंटा बुध का इस क्रम से मानना चाहिए। मंगलवार मध्याह्न को प्रथम घंटा मंगल का, द्वितीय घंटा बुध का इत्यादि। और जो ग्रह जिस कार्य के लिए अनुकूल हो, उसे उस कार्य के लिए चुनना चाहिए—यथा मंगल का घंटा क्रूर कर्म के लिए, शुक्र का घंटा आमोद-प्रमोद के लिए इस प्रकार से मध्याह्न से घण्टा गिनने की शैली 'सेफेरियल' नामक अंगरेज़ ज्योतिषी ने भी अपनाई है[1] परन्तु हमारे विचार से इस प्रकार–मध्याह्न से घण्टों का आरम्भ करना अवैज्ञानिक और अशास्त्रीय है। इसलिए हमारे विचार से जो 'होरा' विचार हमने इस प्रकरण के प्रारंभ में दिया है वही शास्त्र सम्मत पक्ष है। उसमें यही सिद्धान्त रक्खा गया है कि अपने राशि के स्वामी की या उसके मित्र की होरा अनुकूल, अपनी राशि के स्वामी के समग्रह (न शत्रु, न मित्र) की साधारण और अपनी राशि के स्वामी के शत्रुग्रह की होरा प्रतिकूल पड़ेगी। इस का प्राचीन शास्त्रीय आधार यही वचन है कि "........अरि-खगस्य सा वर्ज्या।"[2]

---

१. देखिए Kabala of Numbers पृष्ठ १६६।

२. समरसार पृ० ५१ श्लोक ३०।

इसके अतिरिक्त किसी शुभ कार्य के लिए अनुकूल समय चुनने का एक सहज़ तरीका है। पाठकों के लाभार्थ चौघड़िया चक्र नीचे दिया जा रहा है। दिन को ८ भागों में विभक्त कीजिए। इसी प्रकार रात्रि को ८ भागों में विभक्त कीजिए। इन अष्टमाँशों के नाम शुभ, अमृत, चर, (चंचल) रोग, काल, लाभ, उत्पात हैं जो नीचे के चक्र से स्पष्ट होगा।

प्रत्येक कार्य के लिए 'शुभ', लाभ' तथा 'अमृत' श्रेष्ठ हैं। अमृत घटी सर्वश्रेप्ठ है।

एक एक भाग करीब पौने चार घड़ी का होता है। इस कारण इसे चौघड़िया कहते हैं परन्तु वास्तव में दिन मान का अष्टमांश दिन में एक भाग होता है और रात्रि मानका अष्टमांश रात्रि का एक भाग होता है। जाड़े और गर्मी में दिन मान के अनुसार प्रत्येक भाग के मान में अंतर हो जाता है।

दिन का चौघड़िया

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का

रात्रि का चौघड़िया

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
शु	चं	का	उ	अ	रो	ल
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

७वां प्रकरण

जन्म-मास के अनुसार फलादेश

जन्म की तारीख़ से इस बात का अन्दाज़ लगाना कि कौन-कौन सा वर्ष अच्छा और महत्वपूर्ण जायगा पिछले पृष्ठों में बताया जा चुका है। किन्तु कुछ फल ऐसे होते हैं जो सूर्य जिस राशि में जन्म के समय हो उसके अनुसार घटित होते हैं। एक वर्ष के अन्दर सूर्य बारह (१२) राशियों में भ्रमण कर लेता है। और एक वर्ष के बाद बारहों राशियों में घूमकर फिर पहली राशि में आ जाता है। इसका कारण यह है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। और जैसे गोल चक्कर में घूमता हुआ मनुष्य फिर चक्कर पूरा होने पर अपने स्थान पर आ जाता है उसी प्रकार पृथ्वी भी ३६५ दिन ६ घन्टा १ मिनट १२ सैकिण्ड में घूम कर वहीं आ जाती है। वास्तव में चक्कर तो लगाती है पृथ्वी किन्तु लगता ऐसा है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगा रहा है। इस एक साल के समय को १२ हिस्सों में बाँटा गया है। पंजाब तथा बंगाल में बैसाखी या प्रथम वैशाख से वर्ष का प्रारम्भ मानते हैं। इस दिन सूर्य पहली राशि (विभाग) के प्रारम्भ बिन्दु पर होता है। फिर करीब एक-एक महीने, एक-एक हिस्से या राशि में रहता है। किन्तु ३६५ दिन ६ घन्टे १ मिनट १२ सैकिण्ड को १२ से भाग दिया जावे तो प्रत्येक राशि या हिस्से में ३० दिन से अधिक समय आवेगा। वास्तव में है भी ऐसा ही। पहला, दूसरा, तीसरा, दसवाँ, ग्यारहवाँ, बारहवाँ—सूर्य

के ये ६ महीने कुछ छोटे होते है—प्रत्येक करीव ३० दिन का। वाकी के ६ महीने कुछ वड़े होते हैं। इस सम्वन्ध में विष्णु-पुराण तथा श्रीमद्‌भागवत में द्वादश सूर्य के नाम तथा अधिकारियों का वर्णन किया गया है।[1]

पाश्चात्य ज्यौतिष में जन्म मास का वहुत विस्तृत विचार है। अमुक मास में पैदा होने वाले व्यक्तियों का गुण-कर्म, स्वभाव, ऐसा होगा—अमुक वर्ष जीवन का अच्छा जावेगा, अमुक वर्ष कष्टप्रद होगा, इस सब का वहुत अधिक विचार अंग्रेज़ी ज्योतिपियों ने किया है। पिछले ३१ वर्षों में हमने इस विषय की अनेक पुस्तकों का अवलोकन कर जव फलादेश मिलाया तो देखा कि कोई-कोई वात तो विलक्षण रूप से ठीक वैठती है—परन्तु कोई-कोई नहीं मिलती। इसका कारण यह है कि, इन सव पुस्तकों में सूर्य किस राशि में है इस आधार पर फल दिया हुआ रहता है किन्तु सूर्य के अतिरिक्त चन्द्रमा, मंगल, वुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, हर्शल, नेपच्यून—जन्म लग्न आदि के अनुसार भी गुण-कर्म स्वभाव, भाग्योदय आदि में परिवर्तन होता है। पाश्चात्य ज्योतिष तथा भारतीय ज्योतिष में एक और अन्तर है। सूर्य करीव-करीव एक महीना प्रत्येक राशि में रहता है यह मत तो दोनों में समान है—किन्तु किस तारीख से किस तारीख तक किस राशि में रहता है—इस सम्वन्ध में दोनों के पृथक्-पृथक् मत हैं—जो अगले पृष्ठ पर दिये जाते हैं।[2]

---

१. विष्णुपुराण दशम अध्याय तथा श्रीमद्‌भागवत स्कन्ध १२ अ० ११
२. देखिए You and Your Star by Cheiro तथा
Be Your Own Astrologer by Iris Vorel.

पाश्चात्य मतानुसार	भारतीय ज्योतिष के अनुसार
१. २१ मार्च से २० अप्रैल तक	१३ अप्रैल से १२ मई तक
२. २१ अप्रैल से २१ मई तक	१३ मई से १४ जून तक
३. २२ मई से २१ जून तक	१५ जून से १५ जुलाई
४. २२ जून से २३ जुलाई तक	१६ जुलाई से १६ अगस्त
५. २४ जुलाई से २३ अगस्त तक	१७ अगस्त से १६ सित०
६. २४ अगस्त से २३ सितम्बर तक	१७ सित० से १६ अक्तू०
७. २४ सितम्बर से २३ अक्तूबर तक	१७ अक्तूबर से १३ नव०
८. २४ अक्तूबर से २१ नवम्बर तक	१४ नव० से १४ दिस०
९. २२ नवम्बर से २२ दिसम्बर तक	१५ दिस० से १३ जनवरी
१०. २३ दिसम्बर से २० जनवरी तक	१४ जन० से १३ फरवरी
११. २१ जनवरी से १९ फरवरी तक	१४ फरवरी से १३ मार्च
१२. २० फरवरी से २० मार्च तक	१४ मार्च से १२ अप्रैल

पाश्चात्य तथा भारतीय ज्योतिष में भिन्नता सायन तथा निर-यन गणना के कारण है। इस कारण इस छोटी सी पुस्तक में इसकी वृहद् आलोचना सम्भव नहीं है। आगे के पृष्ठों में हमने भारतीय ज्योतिष के आधार पर फल दिया है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार सूर्य के प्रथम राशि में होने का जो फल, १३ अप्रैल से १२ मई तक जन्म लेने वालों का दिया गया है, वही पाश्चात्य मत के अनुसार उन लोगों पर लागू होना चाहिये जिनका जन्म २१ मार्च से २० अप्रैल तक हुआ हो। इसी प्रकार भारतीय तथा पाश्चात्य ज्योतिष की तारीखों का अन्तर आगे की राशियों में भी पड़ जाता है जो ऊपर दिये गये विवरण से स्पष्ट हो गया होगा।

इस सम्बन्ध में एक बात की ओर और ध्यान दिलाया जाता है।

वह यह है कि ऊपर जो तारीखें दी गई हैं वे करीब-करीब ठीक हैं। किन्तु कभी तो १३ तारीख़ को संक्रान्ति होती है कभी १४ तारीख को। इस कारण एक दिन का अन्तर कभी-कभी पड़ जाता है। इस लिये जिनकी जन्म तारीख बिलकुल संक्रान्ति (जिस दिन सूर्य बदलता है) के दिन पड़े—उन्हे उस साल के पंचांग से निश्चय करना चाहिये कि सूर्य किस राशि में है।

अंग्रेज़ ज्योतिषियों ने मास के अनुसार भी शुभ अंक आदि दिये हैं वे आगे के प्रकरण में मास फलानुसार दे दिये गये हैं किन्तु हमारे विचार से तृतीय प्रकरण में जन्म-तारीख के अनुसार जो शुभ अंक, आदि दिये गये हैं वे अधिक ठीक बैठते हैं।

यदि आप का जन्म १३ अप्रैल और १२ मई के बीच हुआ है[१]

पंजाब तथा बंगाल में जन्म की तारीख एक वैसाख से लेकर ३० वैसाख तक हो तो यह फल मिलेगा। यदि आपको अंग्रेज़ी जन्म की तारीख मालूम नहीं है तो जिस साल आपका जन्म हुआ है उस साल की जन्त्री लेकर देखिए।

ऐसे व्यक्ति में अभिमान, उदारता, साहस आदि गुण विशेष पाये जाते हैं। धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ कलात्मक प्रवृत्तियाँ, (सुन्दरता की वस्तुओं की परख, सिनेमा, राग-रंग, चित्रकारी आदि से प्रेम) भी होती हैं। चतुरता और व्यापारिक कुशलता के साथ-साथ दृढ़ता और दूसरे से मुकाबला करने का हौसला भी होता है। साहस के कामों में (यथा सैनिक या पुलिस विभाग में) ऐसे व्यक्ति बहुत शीघ्र उच्च पद प्राप्त करते हैं और खेल-कूद तथा शिकार के शौकीन होते हैं। किसी भी स्थान पर जहाँ हुकूमत करने का काम

१. अंग्रेज़ी ज्योतिष के अनुसार २१ मार्च से २० अप्रैल तक

हो या मशीन, अग्नि, भट्टी, (लोहा या अन्य धातुओं का ढालना या तपाना आदि) में उन्हे विशेष सफलता मिलती है।

इन व्यक्तियों को बहुत शीघ्र क्रोध आ जाता है और फिर शीघ्र ही शान्त हो जाता है। इन व्यक्तियों का सहसा प्रेम-सम्बन्ध हो जाता है परन्तु बहुत स्थायी नहीं रहता। इनके धार्मिक किंवा राजनैतिक विचार बड़े आवेश-युक्त होते हैं परन्तु स्थायी नहीं होते। किसी कार्य को प्रारम्भ करते समय तो यह लोग बहुत ध्यान देते हैं, परन्तु कार्य की समाप्ति तक ध्यान में कमी हो जाती है। इन लोगों की आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील होती हैं (कभी द्रव्य काफ़ी मात्रा में रहा तो कभी तंगी का सामना करना पड़ा)। ज़मीन-जायदाद का योग भी होता है। और कभी-कभी जायदाद (मकानादि) विवाह से (पति या पत्नी द्वारा) प्राप्त होती है। स्त्रियों के कृपा-पात्र होने के कारण काफ़ी लाभ होता है। और व्यापार में भी, साझेदारी के कार्यों में भाग्योदय होता है। भाई-बहनों का सुख कम होता है: बाल्यावस्था में कुटुम्ब में कुछ ऐसी कठिनाइयाँ हों जिनके कारण मार्ग में रुकावट पड़े। आधी रात के बाद और दोपहर के पहले इन १२ घण्टों में जिसका जन्म हो उसको पिता का सुख मध्यम रहे।

ऐसे जातकों को भ्रमण (सैर-सपाटे; दूसरे स्थानों पर घूमने जाना) बहुत प्रिय होता है और कभी-कभी कौटुम्बिक परिस्थितियों के कारण या शत्रुओं से बचने के लिए बाहर जाना पड़ता है। पहाड़ पर चढ़ने या हवाई-जहाज द्वारा यात्रा के भी अवसर हों। ७ (सात) १९ (उन्नीस), ३०(तीस),४४-इन वर्षों में जातक के कुटुम्ब में या स्वयं को क्लेश का अवसर हो। अपनी अदूरदर्शिता के कारण जातक अपनी आयु को अल्प करता है। अपने पति या अपनी पत्नी के साथ

झगड़े के काफ़ी अवसर आते हैं। और अपने स्वभाव की गर्मी के कारण नाइत्तफ़ाकी (असौमनस्य) हो जाती है। विवाह प्रायः कम अवस्था में होता है और सन्तानसुख साधारण होता है। ऐसे व्यक्ति उच्च पद पर पहुँचते हैं परन्तु बहुत संघर्ष का सामना करना पड़ता है। सेना विभाग, वकालत, खान (खनिज-पदार्थ), इंजीनियरिंग आदि के कामों में विशेष सफलता मिलती है। ऐसे व्यक्तियों के मित्र भी बहुत होते हैं और यदि जन्म दोपहर के बाद तथा आधी रात के पहले हुआ हो तो मित्रों की सहायता द्वारा जातक उच्च पद पर पहुँचता है। ईर्ष्या के कारण ऐसे जातक के शत्रु अवश्य उत्पन्न होंगे परन्तु विशेष हानि करने में असफल होंगे। ऐसे व्यक्तियों को सिर-दर्द, ज्वर या सिर में चोट लगने की आशंका रहती है। पेट का विकार तथा अधिक अवस्था में गुरदे की बीमारी और अधिक रक्त-चाप (ब्लड-प्रैशर) की आशंका होगी। वराह मिहिर के मतानुसार इस समय सूर्य मेष राशि में होने से जातक चतुर, अल्पवित्त, और साहसी (अस्त्र, शस्त्र धारण करने वाला) होता है, यदि २३ अप्रैल को जन्म हो तो बहुत उच्च पदवी पर पहुँचता है। सारावली के अनुसार जातक शास्त्र द्वारा, कलापटुता से किंवा अन्य उत्कृष्ट कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त करता है; युद्ध का शौकीन और प्रचंड स्वभाव का होता है। उसकी हड्डियों की काठी मजबूत होती है और भ्रमण (घूमने फिरने) का शौकीन होता है। वह श्रेष्टता को प्राप्त होता है।[१]

अंग्रेज ज्योतिषियों के अनुसार लाल रंग, मंगलवार तथा ९ की

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये

Secrets of Astrlogy by W. J. Tucker तथा Art of Synthesis by Alan Leo.

संख्या इनके लिये शुभ है। किन्तु प्रतिवर्ष जब सूर्य मेषराशि में रहता है तब अन्य ग्रहों की युति तथा दृष्टि से उपर्युक्त फलादेश में तारतम्य होना स्वाभाविक है।

यदि आपका जन्म १३ मई और १४ जून के बीच हुआ है।[१]

इस समय सूर्य वृषभ राशि में होता है और वृषभ (बैल) के गुण और अवगुण इन लोगों में पाये जाते है। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी और काम में लगे रहने वाले होते हैं। बहुत धैर्यपूर्वक लम्बे समय तक काम करने से यह लोग नहीं घबराते और ऐसे कार्यों में इन्हें प्राय: सफलता मिलती है। इन्हें क्रोध जल्दी नहीं आता, पर एक बार क्रोधित हो जाने पर महीनों और वर्षों तक क्रोध की भावना मन से नहीं जाती। ऐसे व्यक्तियों की इच्छा-शक्ति दृढ़ होती है परन्तु वह अपने मन की बात को दूसरे पर प्रकट नहीं करते और जब तक अपने लक्ष्य पर नहीं पहुँच जाते तब तक परिश्रम-पूर्वक उसमें लगे रहते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति शासन में सफल होते हैं। बहुत से जातकों को कृषिकार्य में भी रुचि होती है। और यह लोग उत्तम भोजन करने के बहुत शौकीन होते हैं। धैर्य-पूर्वक काम में लगे रहते हैं परन्तु फिर आराम भी सुभीते के साथ करते हैं।

इनके प्रेम सम्बन्ध में दृढ़ता नहीं होती और बहुत अधिक ईर्ष्या की मात्रा होती है। अत्यन्त परिश्रम या अनियमित आहार-व्यवहार के कारण रोग का डर रहता है।

स्वयं जायदाद प्राप्त करने का सुयोग होता है परन्तु मुकदमे या षड्यन्त्र के कारण हानि होने की सम्भावना रहती है और यह भी सम्भव है कि बहुमूल्य जायदाद आकस्मिक रूप से औरों द्वारा

---

१. **अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २१ अप्रैल से २१ मई तक**

प्राप्त हो। मित्रों और सम्बन्धियों के स्नेह से ऐसे व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति में वृद्धि होती है।

यदि मध्य-रात्रि के वाद और मध्याह्न के पूर्व जन्म हो तो ऐसे जातक का पिता अपने समाज में प्रतिष्ठित और उत्तराधिकारी होता है। भाई-वहनों में से किसी एक से कष्ट की सम्भावना हो और सम्भवतः किसी सम्वन्धी के कारण लम्वी यात्रा करनी पड़े। यदि मध्यरात्रि के वाद और मध्याह्न से पहले जन्म हो तो वहुत यात्राओं का योग है और किसी एक यात्रा में सांघातिक रोग का भी भय है।

सन्तान की ओर से विशेष सावधानी की आवश्यकता है। विशेषकर प्रथम सन्तान यदि लड़का हो तो वचपन में उसको काफी भय है। इसके अतिरिक्त सन्तान उन्नति करेगी और उनके द्वारा सन्तोष प्राप्त होगा। ऐसे व्यक्तियों का जीवन शान्तिमय होता है। कोई विशेष वड़ी घटनाएँ नहीं होतीं परन्तु ऐसे व्यक्ति अपनी जिद के कारण स्वयं कठिनाइयाँ पैदा कर लेते हैं।

ऐसे व्यक्ति प्रायः तिल्ली, जिगर या वायु की वीमारियों से पीड़ित होते हैं। गुरदे भी जैसे मजवूत होने चाहिए वैसे नहीं होते। ११, २३, ३५वें वर्ष में रोग की सम्भावना होती है। चौपायों से या तेज औजारों से जख्म होने का डर रहता है। किसी एक प्रेम-सम्बन्ध में घोर दुःख या निराशा का सामना करना पड़ेगा या वैवाहिक जीवन में। अन्त में अपने प्रिय (पति-पत्नी) का अन्त अपने जीवन-काल में ही होने के कारण शोक होगा।

जीवन के शुरू काल में आर्थिक हालत साधारण रहती है परन्तु अपने परिश्रम द्वारा ऐसे मनुष्य अपना भाग्योदय करते हैं।

मित्र बहुत होंगे परन्तु उनसे निराशा होगी। ऐसे मनुष्य दीर्घायु होते हैं परन्तु आहार और विहार को नियमित रखना चाहिए क्योंकि ऐसे जातक मात्रा से अधिक भोजन करने के इच्छुक रहते हैं।

'वराह-मिहिर' के मतानुसार यदि ऐसा मनुष्य वस्त्र, सुगन्धित वस्तु का व्यापार या दुकान करे तो जीविका उपार्जन करने में सफल हो। ऐसा व्यक्ति गाने बजाने में कुशल, विलासी किन्तु किसी स्त्री से शत्रुता रखने वाला भी होता है या कोई स्त्री या स्त्रियाँ भी ऐसे व्यक्ति से शत्रुता रखें। 'सारावली' के अनुसार ऐसे व्यक्ति से कोई बाँझ स्त्री शत्रुता करती है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी होता है, और उसको मुख तथा नेत्र का रोग होता है। उत्तम भोजन, कपड़े और खुशबूदार वस्तुओं का शौकीन परन्तु पानी से डरता है। ऐसा व्यक्ति व्यवहार-प्रवीण, क्रिया-कुशल होता है।

अंगरेजी ज्योतिष के मतानुसार इन्हें ६ की संख्या, शुक्रवार तथा सफ़ेद या हलका पीला रंग शुभ होगा।[१]

यदि आपका जन्म १५ जून तथा १५ जुलाई के बीच में हुआ है।[२]

पंजाब तथा बंगाल में इस महीने को आषाढ़ या असाढ़ कहते हैं। आषाढ़ की १ तारीख से ३० तारीख तक जिन लोगों का जन्म हुआ है उनको यह फलादेश लागू होगा। ऐसे व्यक्ति मिलनसार

---

१. **विशेष विवरण के लिये देखिये**

The Principles of Astrology by C. E. O. Carter. तथा Zodiacal Infiuences from Seed to Flower by E. B. Harte

२. **अंगरेजी ज्योतिष के अनसार २२ मई से २१ जन तक**

और दूसरों के साथ मिल कर काम करने वाले होते हैं। यदि क्रोधित हो जाएँ तो क्रोध शान्त होने पर फिर पश्चात्ताप प्रकट करते हैं। विद्या-प्रेम तथा अध्ययनशीलता ऐसे व्यक्तियों में पाई जाती है और व्यापारिक बुद्धि भी होती है। अपने पसन्द के विषय पर ऐसे व्यक्ति प्रायः बहुत अधिक बातचीत करते हैं अन्यथा उनकी बुद्धि अन्तर्मुखी होती है। गान-वाद्य आदि भी इन व्यक्तियों को प्रिय होते हैं।

आर्थिक स्थिति में बहुत परिवर्तन होता रहता है। कभी बहुत सम्पन्न तो कभी द्रव्य-हीनता। इनके पद में भी इसी प्रकार परिवर्तन होते रहते हैं। इनके जीवन में कौटुम्बिक रहस्य तथा अन्तर्द्वन्द्व का एक विशेष भाग होता है और पिता के निमित्त से कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। इनके सन्तान कई होंगी परन्तु उनमें आपस में या माता-पिता के प्रति विद्वेष की भावना हो जायगी। कुटुम्ब के व्यक्तियों का मातहतों तथा भृत्यों के साथ मनोमालिन्य रहेगा। निम्नलिखित रोगों से पीड़ा की सम्भावना रहेगी—जहरीले जन्तु, चौपाये या चौपायों द्वारा आघात, मलेरिया, खसरा, मोतीझरा आदि तथा मसानों की कमजोरी।

प्रेम सम्बन्ध के परिणामस्वरूप बहुत दुःख, कष्ट और निराशा होगी। सम्भव है एक से अधिक विवाह हों या विवाह के अतिरिक्त किसी से स्थायी प्रेम हो। अनेक प्रकार के तथा अनेक स्थिति के लोगों से मित्रता होगी। इनमें से कई जातक के शत्रु हो जावेंगे।

जीवन के मध्य काल में अभ्युदय के मार्ग में बहुत बाधाएँ होंगी। इसमें मुख्य कारण शत्रुओं का प्रतिबन्ध होगा और इन शत्रुताओं के लिए जातक स्वयं उत्तरदायी होगा। जातक दो प्रकार

के काम करता रहेगा। एक मुख्य और एक गौण। एक मित्र से विश्वास-घात की आशंका है। सहयोगी, पड़ौसी तथा ससुराल पक्ष में ऐसे जातक के विरुद्ध काफ़ी षड्यन्त्र चलते रहेंगे।

इन लोगों का शुभ रत्न पन्ना है। श्वास के रोग तथा ठंढ से बचना चाहिए।

'वराह मिहिर' के मतानुसार जिनका जन्म इन तारीखों के बीच में हो वह विद्वान्, ज्योतिष-शास्त्र में प्रेम रखने वाला तथा धनवान् होता है। 'सारावली' के मतानुसार ऐसा व्यक्ति मेधावी, मधुरवाणी वाला, उदार प्रकृति का, बच्चों से बहुत प्रेम करने वाला, बहुत धनी और निपुण होता है। ऐसा पुरुष विनीत तथा बोलने में चतुर और बहुत मित्र वाला होता है। सम्भव है अपनी माता के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री ने भी इसके लालन-पालन में विशेष योग दिया हो।[१]

अंग्रेज़ी ज्योतिष के अनुसार इन्हें हरा या हलका पीला रंग, बुधवार तथा ५ की संख्या शुभ है।

यदि आपका जन्म १६ जुलाई और १६ अगस्त के बीच में हुआ है[१]

ऐसे व्यक्तियों का चित्त चलायमान और उद्विग्न रहते हुए भी निरन्तर क्रियाशील रहता है। ऐसे व्यक्ति हृदय की बात को सहसा प्रकट नहीं करते और पवित्र आदर्शों पर कायम रहने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उनके विचारों में हवाई किले बाँधने

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये

Elementary Astrology by Sepharial तथा Star Dust by G. Hilda Fagan

१. अंग्रेज़ी ज्योतिष के अनुसार २२ जून से २३ जुलाई तक

की प्रवृत्ति बहुत होती है। उनकी प्रकृति और मानसिक अवस्था में इतनी चंचलता रहती है कि दूसरे के साथ एकरस व्यवहार नहीं रख सकते। एक बात को छोड़कर नई के पीछे लग जाना और उसमें सहानुभूति तथा सफलता की आशा करने का, इनका स्वभाव है। ऐसे व्यक्ति विवेकशील, स्वतन्त्र प्रकृति के तथा अनेक कार्यों में दक्ष होते हैं। ऐसे जातक व्यापार में कुशल होते हैं और धन तथा सम्मान के लिए सतृष्ण रहते हैं। इन व्यक्तियों में धार्मिक वृत्ति भी पाई जाती है। ऐसी स्त्रियाँ परिश्रम करने वाली तथा हुकूमत करने की इच्छा करने वाली होती हैं। चन्द्रमा की राशि में सूर्य होने के कारण इनकी चित्त-वृत्ति इतनी बदलती रहती है कि कभी एक स्वभाव की ओर तो कभी दूसरे स्वभाव की ओर हो जाती है। और इस कारण ऐसी स्त्रियाँ आवेश में आ जाती हैं, परन्तु थोड़ी देर में शान्त हो जाती हैं।

धनसंग्रह बड़ी कठिनता से होगा और जो होगा उसको सन्तान या सम्बन्धी बरबाद करते रहेंगे। ताश, घुड़दौड़, सट्टे या चोरी द्वारा धन हानि की काफी आशंका है परन्तु जीवन के उत्तरार्द्ध में धनी होने की सम्भावना है। युवावस्था में अपनी पसन्द के मुताबिक़ व्यवसाय करने के मार्ग में काफी रोड़े अटकाये जायेंगे। भाई या भाइयों से झगड़ा हो या मृत्यु हो। अपने कुटुम्ब के अलावा दूसरे कुटुम्ब से विशेष सम्बन्ध रहेगा। सन्तान काफ़ी चिन्ता उत्पन्न करती रहेगी। उनको अच्छी प्रकार कारोबार में लगाने में कठिनता होगी, परन्तु सबसे बड़ी सन्तान उच्च पद पर पहुँचेगी। ऐसे व्यक्ति प्रायः विवाह करना नहीं चाहते और विवाह हो जाने पर भी पति-पत्नी सम्बन्ध प्रेम मय नहीं रहता। और पति या पत्नी को जायदाद

मिलने की सम्भावना है परन्तु मुकदमे के वाद इसमें सफलता मिल सकेगी ।

यात्राएँ काफी लम्बी होंगी और उनसे लाभ भी होगा और एक बड़ी यात्रा के बाद उसको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी । स्थान परिवर्तन से धन तथा व्यवसाय दोनों को हानि होगी क्योंकि ऐसे मनुष्यों के सम्पर्क में आना होगा जिनसे १४, २६ और ३० वर्ष की आयु में क्षति की सम्भावना हैं ।

३५वें वर्ष के करीब जातक के जीवनक्रम में एक परिवर्तन आएगा, अच्छे से बुरा या बुरे से अच्छा । उसके बाद एक सा क्रम चलता रहेगा । जातक के बहुत से मित्र और सहायक होंगे । और इस समय में उत्पन्न स्त्रियों को सम्बन्धी पुरुषों द्वारा, तथा ऐसे पुरुषों को उच्च श्रेणी की स्त्रियों द्वारा लाभ की सम्भावना है परन्तु किसी ऐसे सहायक की सहसा आर्थिक क्षति हो जाने के कारण जातक के भाग्य पर नाशकारी प्रभाव पड़ेगा ।

२०, ३२तथा ४०वें वर्ष में मित्र रूप में ज्ञात होते हुए परन्तु वास्तव में गुप्त या प्रकट शत्रुओं के षड्यन्त्र से या विश्वासघात से क्षति की सम्भावना है । साधारणतया स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु फेफड़ों तथा पेट को विशेष सुरक्षित रखना चाहिए । शस्त्रों के आघात की भी आशंका है । इन जातकों पर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव रहने के कारण जल मार्ग से, समुद्र पार की वस्तुओं से तथा साहित्य आदि से इन्हें विशेष लाभ हो सकता है । इन्हें निष्कारण चिन्ता होती है इसलिए चित्त में दृढ़ता रहनी चाहिए । मोती, ओपल (Opal) तथा Moonstone (मून स्टोन) पहनना लाभदायक है ।

'वराह मिहिर' के मतानुसार ऐसे व्यक्ति तीक्ष्ण, शीघ्र कार्य करने वाले तथा दूसरों के अधीन काम करते हैं। इन्हें काफ़ी क्लेश और परिश्रम उठाना पड़ता है। 'सारावली' के मतानुसार ऐसा व्यक्ति कर्म करने में चपल, विख्यात, अपने पक्ष से भी द्वेष करने वाला, पिता आदि की आज्ञा न मानने वाला, दूसरों के कथन तथा देश के विषय में जानकारी रखने वाला होता है। इसे जीवन में काफ़ी श्रम उठाना पड़ता है। कफ तथा पित्त कुपित होने से रोग होते हैं। जिस समाज में मद्यपान प्रचलित है उस समाज के लोग मद्य-प्रिय भी होते हैं। यह स्वयं देखने में स्वरूपवान होते हैं, परन्तु इन्हें पति या पत्नी उतने सुन्दर नहीं मिलते।[१] कभी कभी अन्य ग्रहों की दृष्टि के कारण उपर्युक्त फल में अन्तर हो जाता है।[२] अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार कुछ बैंगनी या हल्का जामुनी रंग, सोमवार तथा २ की संख्या शुभ होगी।

यदि आपका जन्म १७ अगस्त से १६ सितम्बर के बीच में हुआ है।[३]

इस समय सूर्य सिंह राशि में होता है। इस कारण इस समय में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति सिंह के समान निर्भीक, उदार और अभिमानी होते हैं। उनके चित्त में दृढ़ता, साहस तथा धैर्य विशेष मात्रा में पाये जाते हैं और वह अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त करने

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये

Lyndoes' Plan with the Planets.

२. देखिये Some Principles of Horoscopic Delineation by C. E. O. Carter

३. अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार २४ जुलाई से २३ अगस्त तक

में ईमानदारी और प्रकट व्यवहारी काम में लाते हैं। ऐसे आदमी अभिमानी होने के कारण वहुत जल्दी नाराज़ हो जाते हैं परन्तु उनमें न्याय-प्रियता की मात्रा इतनी अधिक होती है कि उनके क्रोध से लोगों को अकारण हानि नहीं होती और बुराई का वदला भी भलाई से देते हैं। इनका प्रेम भी दृढ़ होता है। सिंह राशि में सूर्य अपनी राशि का होता है इसलिए इस राशि में सूर्य तथा सिंह दोनों की प्रकृति विशेष पाई जाती है। वीरता सम्पन्न होने के कारण ऐसे व्यक्ति सैनिक विभाग में शीघ्र उन्नति प्राप्त करते हैं और शासन सम्वन्धी कार्यों में विशेष सफल होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने परिश्रम से सम्पत्ति उपार्जित करते हैं परन्तु जुआ, सट्टा तथा उधार देने के कारण द्रव्य की हानि की भी सम्भावना है। द्रव्य के विषय में भाई-बहनों की ओर से उचित व्यवहार नहीं प्राप्त होगा। किसी एक निकट-सम्वन्धी की मृत्यु के कारण इनकी आर्थिक स्थिति को धक्का लगने की सम्भावना है। किसी एक यात्रा में कुछ विपद् की सम्भावना होगी। जायदाद के बँटवारे के कारण सम्भवतः सम्बन्धियों से मन-मुटाव हो। किसी एक यात्रा के समय पिता को भी विपद् की सम्भावना होगी। ऐसी स्त्रियों को कभी कभी जुडले बच्चे होते हैं अथवा प्रसव के समय या उसके बाद विशेष कष्ट होता है। पति या पत्नी के विचारों से संघर्ष के कारण सुख का अभाव होता है। वसीयत के द्वारा धन-जायदाद पाने की सम्भावना है जिसमें सम्वन्धियों द्वारा रोड़े अटकाये जायेंगे। यात्राएँ काफी करनी पड़ेंगी। और एक विशेष यात्रा के बाद भाग्योदय होगा। ऐसे व्यक्तियों को प्रायः ऐसे पद मिलते हैं जिनमें सम्मान ज़्यादा होता है परन्तु आय कम। मित्रों की संख्या

चाहे अधिक हो परन्तु उनसे लाभ की सम्भावना कम और हानि की अधिक। परन्तु शत्रु ऐसे जातक से दबे हुए रहेंगे।

निमोनिया, वातज-व्याधि तथा तिल्ली, हृदय और मसाने की बीमारियों से बचना चाहिए।

पाश्चात्य ज्योतिषियों के मतानुसार इस समय पैदा हुए व्यक्ति बहुत खुशामदपसन्द होते हैं और यदि उनकी आवश्यकता से अधिक भी चापलूसी की जाय तो भी प्रसन्न ही होते हैं। एक अंगरेज़ ज्योतिषी के मतानुसार ये प्रेम करने के शौकीन और स्वभाव से बहुत जल्दबाज़ होते हैं।

'वराह मिहिर' के मतानुसार यदि सिंह राशि में सूर्य हो तो इस समय में उत्पन्न हुए मनुष्य की वन, पहाड़ और गायों में विशेष प्रीति होती है और मनुष्य वीर्यान्वित और बुद्धिमान् होता है।

'सारावली' के मतानुसार जिसके जन्म के समय सिंह का सूर्य होता है वह व्यक्ति स्थिरसत्व, गम्भीर, विख्यात, क्षिति-पालक तथा धन-सम्पन्न होता है किन्तु वृद्धावस्था में ऊँचा सुनने लगता है। ऐसा व्यक्ति उत्साही, शूर, क्रोधी और तेजस्वी होता है। और अपने शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।[1] रविवार, १ तथा ४ की संख्या तथा पीला, सुनहरा और नारंगी का रंग इनके लिए शुभ है।

यदि आपका जन्म १७ सितम्बर से १६ अक्तूबर के बीच हुआ है[2]

कन्या का सूर्य प्रायः १७ सितम्बर से १६ अक्तूबर तक रहता में

१. विशेष विवरण के लिये देखिये
Practical Astrology by Saint Germain तथा Astrological Aspects by C. E. O. Carter.

२. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २४ अगस्त से २३ सितम्बर तक

है । पंजाब और बंगाल में प्रायः १ आश्विन से ३० आश्विन तक जो देशी तारीखें प्रयुक्त होती हैं उनमें से किसी दिन यदि जन्म हो तो यह विवरण विशेष मिलेगा ।

इस समय जो जातक पैदा होते हैं वह स्वयं अपनी योग्यता से उच्च पदों पर पहुँचते हैं । इनकी प्रकृति में न्याय-प्रियता तथा दयाशीलता रहती है और यह प्रत्येक कार्य पर ठंढ़े दिमाग से विचार करते हैं । इसका अधिष्ठता बुध है इस कारण बुध के अच्छे गुण, विचारशीलता, बुद्धिमत्ता आदि इन जातकों में विशेष मात्रा में पाए जाते हैं । परन्तु जैसा इस राशि का नाम है अर्थात् कन्या, उस राशि के अनुरूप गुण अर्थात् नम्रता तथा लज्जा का स्वभाव भी बहुत अधिक प्रभाव रखता है । शिक्षा की उन्नति तथा समाज में विशेष सम्पर्क में आने से अधिक अवस्था में लजीलेपन में कमी आ जाती है परन्तु यह इन का प्राकृतिक गुण है । इन जातकों को सहसा क्रोध नहीं आता परन्तु क्रोधित होने पर शान्त भी बहुत समय बाद होते हैं । अच्छा यह है कि इनके क्रोध से किसी को हानि नहीं होती और इनको अनुचित क्रोध पर पश्चात्ताप भी होता है । ऐसे व्यक्ति प्रायः वाग्मी होते हैं और चित्र तथा कलाओं में विशेष प्रेम होता है और पसन्द की छोटी-छोटी चीज़ों के संग्रह में विशेष रुचि होती है । अधिक शिक्षित लोगों में दार्शनिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन में रुचि तथ तत्परता पाई जाती है ।

बचपन में शारीरिक चोट लगने का विशेष अन्देशा होता है। प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक सफलता भी नहीं मिलती, बहुत परिश्रम और व्यक्तिगत योग्यता के कारण जो द्रव्य या उच्च पद प्राप्त करते हैं उसकी सहसा हानि की सम्भावना रहती है ।

यात्राएँ भाग्योदय में सहायक होती हैं। सम्बन्धियों से कोई विशेष सहायता की अपेक्षा नहीं। भाई-बहन बहुत से होंगे परन्तु उनसे सुख नहीं होगा। वैवाहिक जीवन में भी अन्य प्रेमों के कारण बाधा की सम्भावना है। ऐसे जातकों को चाहिये कि अपनी सन्तान की रक्षा में विशेष प्रयत्न-शील हों क्योंकि इन (सन्तानों) का ऊँची जगह से गिर कर या डूबने से या चौपायों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है।

इन जातकों के प्रेम-सम्बन्ध में बहुत बाधाएँ होती है और इन बातों को लेकर सम्बन्धी तथा मित्रों में या पति-पत्नी के बीच झगड़े हो जाते है। यह व्यक्ति धार्मिक विचार के होते हैं। सम्भवतः ऐसा मनुष्य दूसरी शादी करे। दूसरे विवाह से इसके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आ जायगा। विरासत में कोई विशेष सम्पत्ति नहीं प्राप्त होगी और जो मिलेगा भी वह मुकदमेबाज़ी के बाद। यात्राएँ विशेष करनी होंगी और शायद विदेश भी जाना पड़े। इन यात्राओं का सम्बन्ध या तो अपने धनोपार्जन से होगा या किसी उच्च-पदाधिकारी की आज्ञा से। ऐसे व्यक्ति बहुत परिश्रम के बाद धन-उपार्जन करते हैं और जिस कार्य को करते हैं, उसमें शारीरिक भय की भी सम्भावना रहती है। मित्र थोड़े होते हैं और उनसे कोई विशेष लाभ की सम्भावना नहीं होगी। कला जगत् तथा व्यापारिक जगत् के कुछ लोग ऐसे जातक से शत्रुता का भाव रखेंगे और नुकसान के कामों में रुपया लगवा कर आर्थिक क्षति करवायेंगे। पेट, जिगर तथा पैरों की विशेष रक्षा करनी चाहिये।

पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार ऐसे पुरुष अन्य स्त्रियों को और इस समय पैदा होने वाली स्त्रियाँ अन्य पुरुषों को अपनी ओर आक-

षित करने का विशेष गुण रखती हैं और इनके स्वभाव में स्थिरता नहीं होती। पेट की ख़रावी या स्नायु जाल की कमजोरी के कारण इन्हें रोग होते हैं।

"वराह मिहिर" के मतानुसार जिनका जन्म इस समय होता है उन पुरुषों का शरीर स्त्री के शरीर की भाँति कोमल व स्निग्ध होता है और ऐसे व्यक्ति चित्रकारी, काव्य तथा गणित में विशेष चतुर होते हैं।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे व्यक्ति लज्जालु, मेधावी, गाने-वजाने में निपुण, मृदु तथा दीन वचन वोलने वाले होते हैं। वहुत वार स्थिर-नक्षत्रों से संयोगवश, एक राशि के अन्तर्गत सूर्य-चार के फलादेश में वहुत भिन्नता हो जाती है।[१] परन्तु ऊपर सामान्य फल दिया गया है। अंग्रेज़ी ज्योतिष के अनुसार बुधवार, ५ की संख्या तथा अंगूरी या क़ाफ़ूरी रंग इन्हें शुभ होता है।

यदि आपका जन्म १७ अक्तूबर से १३ नवम्बर के बीच में हुआ है[२]

इस महीने में सूर्य नीच का होता है परन्तु तुला का स्वाभाविक गुण है समता इसलिए ऐसे जातक दयालु, प्रेम करने वाले तथा शुद्ध विचार के होते हैं। क्रोध जल्दी आता है परन्तु जल्दी ही शान्त भी हो जाता है। सूर्य प्राणी की आत्मा है इस कारण आत्मिक शक्ति

---

१. ग्रहों के प्रभाव के विशेष सैद्धान्तिक प्रतिपादन के लिये देखिए :—

The Modern Text book of Astrology by Margaret E. Hone. तथा The Fixed Stars & Constellations in Astrology by V. E. Robson.

२. अंग्रेज़ी ज्योतिष के अनुसार २४ सितम्बर से २३ अक्तूबर

वित करने का विशेष गुरण्‌ल यात्रा से सम्वन्ध या जल से चलने वाली नहीं होती। पेट की ग्होने की सम्भावना है। धन की रक्षा के लिए इन्हें रोग होते हैं।होगा, जिसमें विजय होगी परन्तु स्थायी शत्रु ता भी

"वराह ित्र अपनी पत्नी या पति से मतभेद भी हो सकता है। है उन पुरुल्वेहुत हों उनमें से कुछ सम्भवतः सौतेले हों। भाई वहनों से होता है। प्रेम मय नहीं रहे। माता-पिता से भी कुछ मन-मुटाव रहेगा, चतशष कर पिता के साथ।

यदि जातक मध्याह्न के वाद और मध्यरात्रि से पहले पैदा हुआ है तो उसको पितृसुख अल्प होगा। सन्तान थोड़ी होंगी और उनमें से एक के कारण काफी चिन्ता उठानी होगी। कौटुम्विक जीवन में समय-समय पर उथल-पुथल होती रहेगी और यह सम्भव है कि ऐसा व्यक्ति किसी को गोद ले या किसी की गोद स्वयं जाए या किसी परिवार के साथ सम्मिलित हो। मसाने तथा मलाशय कमजोर रहें। विवाह से धन की सम्भावना है और सम्भव है किसी सम्बन्धी की मृत्यु से आकस्मिक धन-लाभ हो। समुद्र-यात्रा से कोई लाभ नहीं होगा प्रत्युत् हानि की सम्भावना है। जीवन के मध्य भाग में पद-हानि की सम्भावना है और सम्भवतः साक्षात् या परोक्ष रूप से माता का इस पद-हानि से कुछ सम्वन्ध हो। ऐसे व्यक्ति के पृष्ठपोषक भी वहुत से होंगे और उनकी सहायता से अच्छी जगह विवाह तथा ऊँचे स्थान की प्राप्ति भी होगी, परन्तु उन्हीं सहायकों में से एक का ऐसा जातक महा अपकार भी करेगा। कौटुम्विक मामलों को लेकर कुछ धार्मिक क्षेत्र के व्यक्तियों से शत्रुता भी होगी तथा वकील और विद्वानों से भी ऐसे व्यक्ति की शत्रुता होगी।

ऐसे व्यक्ति स्वयं अपने लिए कष्ट पैदा करते हैं और एक प्रकार

से अपनी मृत्यु के कारण भी स्वयं ही होते हैं। इसमें पैदा होने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य तो अच्छा रहता है परन्तु शारीरिक ढाँचा बहुत मजबूत न होने के कारण वह अपने स्वास्थ्य के विषय में चिन्ता करते रहते हैं।

नीला या हल्का नीला रंग ऐसे लोगों के लिए विशेष अनुकूल होता है। शुक्रवार और ६ की संख्या भी इन्हें विशेष महत्वपूर्ण होती है। 'वराह मिहिर' के मत से ऐसे समय पैदा होने वाले मनुष्य यदि मद्य (शराब), डिस्टलरी, हाथी, पान, रास्ता चलने का काम (घूम घूम कर बेचना) इन्सपैक्टर, स्वर्ण का काम, या धन के लोभ से किसी भी हीन काम को करें (जो अच्छा नहीं समझा जाता हो) तो इन्हें अच्छा लाभ होता है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसा व्यक्ति बहुत व्यय करने वाला, विदेश में घूमने वाला, लोहे या दूकानदारी के कार्य से जीविका उपार्जन करने वाला होता है या दूसरों की नौकरी करता है।[१]

यदि आपका जन्म १४ नवम्बर से १४ दिसम्बर के बीच में हुआ हो।[२]

वृश्चिक का सूर्य प्राय: १४ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक रहता है। इस समय जो जातक पैदा होते हैं वह लोग तीक्ष्ण बुद्धि वाले परंतु चंचल स्वभाव के आदर्शवादी, अपनी धुन के तथा धार्मिक-विचार के होते हैं। इच्छाशक्ति दृढ़ होती है और धैर्य के साथ काम में लगते हैं। स्वभाव जोशीला और क्रोधीला होता है। भय के काम

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये :—

Astrology For Every One by Evangeline Adams, तथा Cheiro's "When were you born ?"

२. अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार २४ अक्तूबर से २१ नवम्बर तक

में पड़ने से ऐसे लोग झिझकते नहीं हैं। एक वार क्रोध आने पर ऐसे लोग क्षमा करना नहीं जानते। मन में क्रोधाग्नि भीतर ही भीतर धधकती रहती है और यद्यपि बाहर से यह मालूम होता है कि यह शान्त हो गये परन्तु प्रतिहिंसा की भावना उनके अन्दर और भी भयानक रूप धारण कर लेती है और विना परिणाम का विचार किये शीघ्रता-पूर्वक बदला लेने की भावना से ऐसे व्यक्ति अपने प्रतिद्वन्द्वी को निर्दयता से हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं। जिनके शरीर में कफ प्रकृति प्रधान होती है वह केवल अपने व्यक्तित्व से अपने विरोधी को दबा लेते हैं। यदि शिक्षा से ऐसे व्यक्ति सुसंस्कृत न हों तो प्राय: झगड़ालू स्वभाव के होते है और अकारण ही संघर्ष में आ जाते हैं। ऐसे जातक निपुण तथा धैर्यवान् होते हैं और ग्राम-जीवन तथा खेती के कारोबार को पसन्द करते हैं। अपने विचारों में वह इतने ज़िद्दी होते हैं कि दूसरों के समझाने से नहीं मानते। जीवन के पूर्वार्द्ध में ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय नहीं होता परन्तु उत्तरार्ध में काफी सफलता मिलती है।

पं० जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री राजगोपालाचार्य, और श्री मावलंकर आदि बहुत से लोगों के ऐसे उदाहरण हैं जिनका विशेष अभ्युदय जीवन के उत्तरार्द्ध में हुआ। वृश्चिक का अर्थ है विच्छू। इसका आगे का आधा हिस्सा मृदु तथा एक प्रकार से अप्रभावशाली है। विष की तीक्ष्णता उत्तरार्द्ध में है। इस राशि में जब सूर्य होता है, तब जो मनुष्य पैदा होते हैं उनके जीवन के पश्चिम काल में विशेष अभ्युदय का यही हेतु है।

ऐसे आदमियों को विरासत में सम्पत्ति मिलने का भी योग होता है। भाई थोड़े होंगे और उनमें से एक को ऊँचे से गिरने या

डूबने का अन्देशा होता है। यदि ऐसा जातक मध्य रात्रि के बाद और मध्याह्न के पूर्व पैदा हुआ हो तो इसके पिता का पद और भाग्य नष्ट हो जाता है। सन्तान वहुत होती हैं। ज्वर, सिर दर्द तथा स्नायु सम्वन्धी दर्द की शिकायत होती हैं। इनका हेतु अत्यन्त परिश्रम या अत्यन्त भोग होता है। एक कड़ी बीमारी होगी परन्तु उससे जातक मुक्त हो जायगा। ऐसा मनुष्य अवश्य विवाह करेगा और सम्भावना यह है कि प्रथम पत्नी का सुख अधिक न हो और दूसरा विवाह करे। पत्नी को किसी चौपाए से या दुर्घटना से चोट लगने का भी अन्देशा होता है।

यह भी सम्भावना है कि ३० वर्ष की अवस्था के पहिले किसी प्रेमी या मित्र की मृत्यु हो, जिससे हृदय को आघात लगे। काफी यात्राएँ करनी होंगी पर उन से कोई विशेष लाभ नहीं होगा। क्योंकि ऐसे जातकों को प्रौढ़ावस्था के बाद सफलता प्राप्त होगी, जीवन का पूर्व भाग भाग्योदय के लिए संघर्ष में ही बीतेगा। मित्र वहुत होंगे और उच्च पदस्थ व्यक्तियों की कृपा भी प्राप्त होगी, किन्तु किसी एक मित्र अथवा संरक्षक के कारण सफलता में या प्रेम-सम्बन्ध में वाधा होगी। शत्रुताएँ भी बहुत होंगी और प्रायः स्थायी रहेंगी। ऐसा मनुष्य समुद्रयात्रा करेगा तो विदेश में शारीरिक आघात का भय होगा। ऐसे व्यक्ति कफ-पित्त प्रधान होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में क्रोध और ईर्ष्या की मात्रा विशेष होती है। ऐसे जातकों को कमर से नीचे भाग में रोग होने की विशेष सम्भावना रहती है, इस कारण सब प्रकार के संक्रामक रोगों से वचना चाहिए। ठंढे पानी का एनीमा लेना विशेष लाभदायक है।

राजनीतिज्ञ, आलोचक, डाक्टर, इन्जीनियर, मशीन के कार्य

आदि में यह लोग विशेष सफल हो जाते हैं। मंगलवार और ६ की संख्या इनके लिए महत्त्वपूर्ण होगी। कुछ श्यामता लिए हुए लाल रंग भी लाभप्रद होगा।

ऐसे लोग दूसरों के हृदय की बात भाँप लेते हैं परन्तु इनके पेट की थाह पाना कठिन होता है[१]।

वराहमिहिर के मतानुसार ऐसे व्यक्ति साहसी, शास्त्र में पंडित तथा औषधि एवम् विष-चिकित्सा से विशेष धन उपार्जन कर सकते हैं।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे व्यक्ति क्रोधी, सत्य से विमुख, स्त्री-सुख से हीन, तथा कलह-प्रिय होते हैं।[२]

यदि आपका जन्म १५ दिसम्बर से १३ जनवरी के बीच में हुआ हो।[३]

जिन मनुष्यों का जन्म इस समय होता है उन पर बृहस्पति का शुभ-प्रभाव रहता है क्योंकि इस समय सूर्य बृहस्पति के घर में होता है। ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान, ईमानदार तथा उदारहृदय के होते हैं और बिना प्रत्युपकार की भावना के दूसरों के साथ भलाई करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को क्रोध शीघ्र आ जाता है परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर ऐसे व्यक्ति चिन्ता करते रहते हैं और भविष्य में आशंकित विपत्ति से परेशान रहते हैं। यह लोग स्वतन्त्रता के प्रेमी होते हैं। ये व्यक्ति वाग्मी होते

---

१. इस सम्बन्ध में एक अच्छी पुस्तक :—
"Character Reading Made Easy" by Frederic K. Mejer.

२. ग्रहों के प्रभाव के विशेष अध्ययन के लिये देखिये
"The Principles of Astrology" By C.E.O. Carter.

३. अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार २२ नवंबर से २२ दिसम्बर तक।

हैं, और अध्ययन-प्रिय भी। विचारों में परिवर्तन होते रहते हैं। ये कारीगरी के कामों में भी निपुण होते हैं।

बचपन में इनकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं होती और पिता को आर्थिक-क्षति की भी सम्भावना है; परन्तु अपने उद्यम से उन्नति करेंगे। भाई-बहन कम होंगे और उनमें से एक के जीवन को कम उमर में अन्देशा होगा। माता-पिता या सास-ससुर में से एक से मतभेद हो और अपनी सबसे बड़ी सन्तान के कारण काफ़ी चिन्ता होगी। अपनी सन्तान से भी कुछ अनबन रहे। सम्भवतः विवाह दो हों, उनमें से एक के कारण काफ़ी क्षति उठानी पड़े। दो प्रकार के कार्य जातक एक साथ करता रहेगा, उनके कारण कार्य में बाधा भी रहेगी। ३० वर्ष की अवस्था तक ऊपर से गिरने का या ऊँचे पद पर पहुँचकर फिर नीचे आने का काफी अन्देशा है। यात्राएँ काफी करनी पड़ेंगी और किसी एक यात्रा के मध्य में किसी सम्बन्धी की मृत्यु का समाचार मिलेगा। मित्र बहुत होंगे परन्तु एक मित्र के विश्वासघात के कारण जातक की स्थिति को काफी धक्का पहुँचेगा। व्यवसाय तथा प्रेम दोनों क्षेत्रों में शत्रुओं से संघर्ष होगा।

ऐसे व्यक्तियों को बृहस्पतिवार और ३ की संख्या शुभ होती है। गहरा नीला रंग भी इनके अनुकूल होगा।

जो व्यक्ति इस महीने में पैदा होते हैं वे खेल-कूद तथा घोड़े की सवारी के बहुत शौकीन होते हैं। यदि सेना में प्रविष्ट हों तो तीरन्दाज़ी अथवा गोली चलाने में बहुत निपुण होंगे। इनके शरीर में या तो स्नायु-मंडल की कमज़ोरी के कारण रोग की आशंका होगी या वायु-जनित पीड़ा।

'वराह मिहिर' के मतानुसार जो व्यक्ति इस समय पैदा होते हैं

वे सत्पूज्य, धनवान्, वैदिक कार्य में कुशल तथा शिल्पकला में कुशल होते हैं : किन्तु उनकी प्रकृति में तीक्ष्णता रहती है।

'सारावली' के मतानुसार भी ऐसे व्यक्ति धनी, सरकार से सम्मानित, बन्धुओं के हितकारी और अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण होते हैं।[१]

यदि आपका जन्म १४ जनवरी से १३ फ़रवरी के बीच हुआ हो।[२]

मकर का सूर्य प्रायः १३-१४ जनवरी से १३ फ़रवरी तक रहता है। मकर राशि का स्वामी शनि है इसलिए जातक में बहुत से गुण शनि के पाये जाते हैं। इस समय जो पैदा होते है वह स्वयं अपने उद्यम से अपने भाग्य का निर्माण करते हैं और जो सम्पत्ति उपार्जित करते हैं उसको नष्ट नहीं करते। शनि परिश्रमशील ग्रह है, इस कारण ऐसे जातक भी फुर्तीले और परिश्रमशील होते हैं। मध्यरात्रि के बाद और मध्याह्न के पहले यदि जातक का जन्म हो तो उसमें यह गुण विशेष मात्रा में पाये जायेंगे। परन्तु यदि इसके अतिरिक्त १२ घण्टे में जन्म हुआ तो शरीर का कोई अंग दोष-युक्त हो या आकस्मिक घटना द्वारा ऐसा दोष बाद में उत्पन्न हो जाए। स्वभाव में उत्साह के साथ-साथ झगड़ालू प्रकृति भी होती है। भीतर से मन कभी-कभी बहुत उदास हो जाता है।

ऐसे व्यक्ति द्रव्य कम खर्च करना चाहते हैं और जोड़ कर रखना चाहते हैं। व्यापारी बुद्धि इन लोगों की अच्छी होती है और एक से अधिक बातों में समान रूप से दक्ष होते हैं। इच्छा

---

१. देखिये "How to Judge Nativity" तथा "Key to Your Nativity" By Alan Leo। अंग्रेजी ज्योतिष की यह अच्छी पुस्तक हैं।

२. अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार २३ दिसम्बर से २० जनवरी तक।

शक्ति प्रबल होती है और इस कारण अपने ध्येय में सफल होते हैं। इनके व्यवहार में उतना इखलाक नहीं रहता, जितना कि रहना चाहिए; इसलिए कुछ उद्दण्डता का प्रभाव पड़ता है। क्रोध देर में होता है और शान्त भी देर से। बिना सोचे-विचारे ऐसे व्यक्ति कोई काम नहीं करते। इनके कामों में फुर्ती होती है और जन्म कुण्डली के २, १२, ६, ८ में यदि क्रूर ग्रह न बैठे हों तो दृष्टि शक्ति अच्छी होती है।

अपने उद्यम से धन प्राप्त होगा। भाई-वहन कई होंगे परन्तु सहायता की अपेक्षा हानि की सम्भावना अधिक है। छोटी-छोटी यात्रायें भी वहुत सी होंगी। पिता के किन्हीं २ व्यवहारों से खिन्नता होगी और कौटुम्विक परिस्थितियाँ भी असन्तोष का कारण होंगी। इनके वैवाहिक सुख में भी कुटुम्वियों द्वारा अड़चन डाली जायँगी। जीवन में पूर्वार्द्ध में चोट लगने का या अधिक बीमार होने का डर है। बहुत वच्चे नहीं होंगे और इनके अपने व्यवहार के कारण बच्चों का जीवन उतना सक्रिय न हो सकेगा या उनके कारण इनके स्वयं के जीवन में, सफलता में वाधा होगी। यात्रा में काफी अड़चनें रहेंगी और सम्बन्धियों के कारण परेशानियाँ उठानी पड़ेंगी।

शनि की राशि होने के कारण वात-व्याधि से ऐसे जातक पीड़ित होंगे। हाथ-पैर या जोड़ों में गठिया हो या वायु के कारण पाचन-शक्ति में गड़वड़ हो। ऊँचे से गिरकर चोट लगने का भी अन्देशा है। बिना किसी विशेष वीमारी के भी ऐसे आदमियों को कभी कभी वीमारी का वहम रहता है।

विवाहित जीवन में पूर्णसुख प्राप्त नहीं हो और एक से

अधिक विवाह भी हो सकते हैं। शत्रु बहुत होंगे और ऊँची स्थिति के तथा नीची श्रेणी के—दोनों ही प्रकार के लोग शत्रुता करेंगे। भाई-बहन—कम से कम उनमें से एक—इसका मित्र साबित नहीं होगा परन्तु अन्त में विजय जातक की होगी।

ऐसे व्यक्ति बहुत महत्वाकांक्षी होते हैं किन्तु परिश्रम-पूर्वक ऐसे कार्य द्वारा धन उपार्जन करते हैं जिनमें कोई घाटे की आशंका न हो।

शनिवार और ८ की संख्या इनके लिए विशेष महत्वपूर्ण है। हरा अथवा काला खाकी रंग इनके लिए शुभ है।

इन लोगों को रोग पाचन-शक्ति की खराबी के कारण होते हैं और वृद्धावस्था में हृदय-रोग के होने की भी सम्भावना है अथवा वायु-विकार के कारण रोगों से पीड़ा हो।

'वराह मिहिर' के मतानुसार यदि मकर में सूर्य हो तो मनुष्य अनुदार, अज्ञ, कुत्सित वाणिज्य करने वाला, अल्प धनवान होता है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे आदमी के बन्धु उसका साथ नहीं देते। वह भीरु, तृष्णासहित बहुकार्यरत तथा लोभी होता है।[१]

बहुत बार नक्षत्र विशेष से सूर्य युति होने पर उपर्युक्त सामान्य फलादेश में अन्तर भी पड़ जाता है, जो केवल जन्म कुण्डली द्वारा जाना जा सकता है।[२]

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये "You and Your Star" by Cheiro (पृष्ठ १-४०)

२. देखिये "The Fixed Stars and Your Horoscope by Dr. W. J. Tucker.

यदि आपका जन्म १४ फरवरी और १३ मार्च के बीच में हुआ हो।[1]

कुँभ का सूर्य १४ फरवरी से १३ मार्च तक रहता है। जो लोग इस समय पैदा होते हैं उनकी ललित कलाओं की ओर विशेष रुचि होती है और सफलता भी प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः दीर्घजीवी होते हैं और वक्तृत्व तथा लेखन शक्ति अच्छी पाई जाती है। इनकी प्रकृति में सादगी, मधुरता तथा ईमानदारी होती है और क्रोध आने पर भी अधिक दिनों तक ईर्ष्या का भाव मन में नहीं रखते।

इनकी कार्य-प्रणाली में तर्क की अपेक्षा इच्छा शक्ति ही अधिक रहती है। यह लोग एकान्त-प्रिय, धैर्य-शील तथा परिश्रमी होते हैं। एक बार जो राय कायम कर लेते हैं उस पर स्थिर रहते हैं। जो जायदाद ये लोग उपार्जित करेंगे वह स्थायी रूप से इनके अधिकार में नहीं रहेगी और शत्रुता का भाव रखने वाले व्यक्तियों के षड्यन्त्र के कारण जायदाद से वंचित होना पड़ेगा। ऐसे शत्रुओं में वह भी होंगे जो बाहर से मित्र मालूम होंगे।

ऐसे जातक काफ़ी यात्राएँ करेंगे। परन्तु उनसे कोई विशेष लाभ नहीं होगा प्रत्युत् धन तथा स्वास्थ्य में हानि की सम्भावना है। भाई-बहन थोड़े होंगे परन्तु उनसे कोई प्रेमपूर्ण व्यवहार नहीं प्राप्त होगा। किसी यात्रा में जल, शस्त्र या चौपाए से चोट लगने का अन्देशा है। पिता की आकस्मिक मृत्यु हो या सहसा धन का नाश हो।

ऐसे व्यक्तियों के कभी कभी जुड़ले बच्चे होते हैं और स्त्रियों

---

१. अंगरेज़ी ज्योतिष के अनुसार २१ जनवरी से १६ फरवरी तक।

को प्रसव के समय भारी कष्ट की सम्भावना रहती है। जो बच्चे होंगे उनका स्वास्थ्य बहुत दृढ़ नहीं होगा और उनके पालन-पोषण में परिश्रम उठाना होगा।

पेट और फेफड़ों की बीमारियों तथा सिर दर्दसम्बन्धी बीमारी होने का भय है। जिसका जन्म सूर्योदय के करीब होता है उनको प्रायः हृदय रोग की बीमारी होती है। इसके लिए सूर्य की आराधना करनी चाहिए। इसी कारण कुंभ राशि के अनेक नामों में से एक नाम "हृदय रोग" भी है।

इनके भाग्योदय में उतार-चढ़ाव काफी होगा और उच्च श्रेणी के व्यक्ति सहायता में तत्पर होंगे। इसी प्रकार शत्रु काफी होंगे परन्तु अन्त में सब कठिनाइयों को पार करके ऐसे व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करते हैं।

जिन व्यक्तियों का इस समय जन्म होता है उनको कंठरोग (टाँसिल आदि) की शिकायत की भी सम्भावना होती है और वात-जनित पीड़ा न हो इसके लिए रक्त को शुद्ध रखना चाहिए। यदि स्वास्थ्य का ध्यान ठीक न रखा जाय तो अधिक अवस्था में रक्त-चाप (ब्लड प्रैशर) का भय रहता है।

हल्का नीला या बैंगनी रंग इनके लिए शुभ होगा। कुछ पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार ४ की संख्या तथा शनिवार इनके लिए शुभ है।

'वराह मिहिर' के अनुसार यदि जन्म के समय कुंभ का सूर्य हो तो मनुष्य निम्न-वृत्ति का, धन-रहित, भाग्यच्युत होता है और उसे सन्तान-कष्ट सहन करना पड़ता है अर्थात् कोई सन्तान नष्ट हो या सन्तान आज्ञाकारी न हो।

'सारावली' के मतानुसार जो पुरुष इस समय पैदा होते हैं वे चुगली करने वाले, व्यर्थ बात करने वाले, शठ होते हैं। उन्हें दुःख उठाना पड़ता है, किसी से स्थायी मित्रता नहीं होती और धन-संग्रह करने में सफल नहीं होते।

यह सूर्य का राशिगत सामान्य फल है। प्राचीन अंगरेज ज्योतिषियों द्वारा जो विशेष फलादेश किया गया है उसके लिये निम्न-लिखित पुस्तक देखनी चाहिए।[१]

यदि आपका जन्म १४ मार्च और १२ अप्रेल के बीच में हुआ हो।[२]

मीन का सूर्य १४ मार्च से १२ अप्रैल तक रहता है। मीन जल-राशि है, इसका स्वामी बृहस्पति है। इस कारण जो जातक इस समय में पैदा होते हैं उनमें जल-राशि तथा बृहस्पति से प्रभावित सूर्य के गुण आ जाते हैं।

ऐसे व्यक्ति कला-विज्ञान तथा साहित्य में विशेष निपुण होते हैं और अपने गुणों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। बिना चेष्टा किये यह लोकप्रिय हो जाते हैं। इनकी प्रकृति में बेचैनी होती है, और अपने कार्य की स्वयं आलोचना किया करते हैं। इनके विचारों में परिवर्तन होता रहता है और चाहते हैं कि शीघ्र से शीघ्र अपने उद्देश्य पर पहुँचें। इनकी प्रकृति में ईमानदारी होती है, परन्तु कल्पनाशील अधिक होते हैं।

विलास प्रिय होने पर भी स्वाभिमान के कारण नीचे गिरने की

---

१. देखिये Lilly's Astrology By Zadkiel, Published by G. Bell And Sons Ltd. तथा Ptolemy's Tetrabiblos (English Translation by Ashmond)

२. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २० फरवरी से २० मार्च तक

प्रवृत्ति को रोकते हैं। इनमें अधिकारी होने की भावना विशेष होती है। लोगों से मिलनसारी और मित्रता का भाव रखते हुए भी अपने हृदय की बात नहीं बताते। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी होते हैं और दूसरों का बहुत आतिथ्य करते हैं तथा वार्तालाप में बहुत निपुण; लिखने पढ़ने में भी बहुत प्रवीणता होती है। स्वयं अच्छा भोजन करने के शौकीन होते हैं तथा दूसरों को दावत देने का भी शौक होता है।

स्वयं अपने गुणों के कारण काफ़ी धन उपार्जन करेंगे परन्तु फजूल खर्ची, सट्टा या सम्बन्धियों द्वारा धन का अपव्यय होगा। ऐसे व्यक्ति एक से अधिक काम में समान रूप से निपुण होते हैं और दोनों काम एक साथ करते रहते हैं। भाइयों की अपेक्षा बहनें अधिक होंगी और एक की मृत्यु कम अवस्था में हो ऐसी आशंका है। बचपन में इनके पिता के भाग्य का अपकर्ष हो। ऐसे लोग यात्रा भी अधिक करते हैं और साथ-साथ धन उपार्जन भी। सम्भवत: जायदाद सम्बन्धी मुक़दमा भी करना पड़े। थोड़ी अवस्था में घर छोड़ कर जाना पड़े। विवाह भी एक से अधिक हों। इन में से एक विवाह से काफ़ी परेशानी पड़े। स्थान-परिवर्तन कई बार हो। कुटुम्ब में आकस्मिक दुर्घटनाएँ भी हों।

इस समय में पैदा होने वाली स्त्रियों को गर्भाशय सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना है। पुरुषों को भी गुप्त अंगों में रोगों की सम्भावना रहती है। हृदय तथा नेत्र सम्बन्धी बीमारियों से बचते रहना चाहिए। दु:स्वप्न आवें। असली मित्र बहुत थोडे हों। किसी एक मित्र के कारण, जो शत्रु हो जाए, बड़ा भारी आघात हो। ऐसे व्यक्ति प्राय: समाज में प्रतिष्ठा लाभ करते हैं।

इस समय जो मनुष्य पैदा होते हैं उन्हें गहरा नीला रंग और

बृहस्पतिवार शुभ होता है। ३ और ७ की संख्या भी शुभ होती है।

'वराह मिहिर' के मतानुसार जिनके जन्म के समय सूर्य मीन राशि में हो वे यदि जल से निकली हुई वस्तु या समुद्रपार देशों से माल मँगाने का या भेजने का (Import and Export) काम करें तो विशेष धन-लाभ हो सकता है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे मनुष्य मीठी वाणी बोलते हैं परन्तु उनमें असत्य की मात्रा भी होती है। स्त्रियों के सम्पर्क से इन व्यक्तियों का भाग्योदय होता है। ये लोग शत्रु पर विजय पाते हैं और इनके बहुत से पुत्र तथा भृत्य होते हैं।[१]

प्राय: सूर्य के विविध राशियों में होने से प्रत्येक राशि के फलानुसार जातकों के स्वभाव, प्रभाव और भाग्योदय आदि में भी परिवर्तन होता है। इसलिए पिछले पृष्ठों में सामान्य फल दिया गया है। किन्तु अन्य ग्रह बदलते रहते हैं। और किसी एक दिन में भी बारह लग्न हो जाते हैं। इस कारण प्रत्येक मनुष्य की जन्म कुण्डली भिन्न होती है और सामाजिक स्थिति, वातावरण—देश, काल, पात्र—के भेद से भिन्न-भिन्न फल दिखाइ देते हैं, किन्तु हम अपने अनुभव के आधार पर यह अवश्य कह सकते हैं कि जो सूर्य का भिन्न २ राशि के अनुसार फल दिया गया है उसकी मुख्य-मुख्य बातें अवश्य मिलती हैं।

अंग्रेज़ी ज्योतिष के आधार पर भिन्न-भिन्न सौर (सूर्य के) मासों में पैदा होने वाले व्यक्तियों के शुभ और अशुभ अंक भी लिख दिये हैं परन्तु हमारा अपना अनुभव यह है कि अंग्रेज़ी की जन्म तारीख

---

१. **विशेष विवरण के लिये देखिए** 'Your Fate by Stella Coeli **तथा** 'The Zodiac and the Soul' by C. E. O. Carter

का जो अंक होता है उसके अनुसार शुभ अंक अधिक मिलता है। उदाहरण के लिए ऊपर यह बताया गया है कि १४ फरवरी से १३ मार्च तक जो व्यक्ति पैदा हुए हों उनके लिए ४ का अंक शुभ है, ऐसा अनेक अंग्रेज ज्योतिषियों ने लिखा है, इस कारण इस विचार को थोड़ी सी मान्यता हमने भी अपनी पुस्तक में दे दी है परन्तु यदि कोई मनुष्य २३ फरवरी को उत्पन्न हुआ हो तो २३ का मूल अंक २+३=५ होने के कारण हमारे विचार से उसे ५ का अंक ही विशेष शुभ होगा।

मेलापक-विचार

जिस प्रकार अंक-विद्या से शुभाशुभ वर्ष, मास या दिन का विचार किया जाता है, अथवा 'प्रश्न' में अंक-ज्योतिष की उपयोगिता होती है, उसी प्रकार अमुक पुरुष का विवाह अमुक स्त्री से उपयुक्त होगा या नहीं, इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने बहुत विचार किया है। एक अंग्रेज़ ज्योतिषी ने तो कई सौ पृष्ठ की—केवल इस विषय की पुस्तक[१] लिखी है कि अमुक मास में पैदा होने वाला पुरुष अमुक मास में पैदा होने वाली स्त्री से विवाह करे तो किस प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक सुख-दुःख की उपलब्धि होगी। परन्तु इस पाश्चात्य दैवज्ञ ने केवल जन्मस्थ सूर्य को ही समस्त विचार का आधार रखा है। हमारे विचार से यद्यपि सूर्य ग्रहराज है तथापि केवल सूर्य-स्थिति को आधार मान कर वर-वधू मेलापक विचार करना समीचीन नहीं। भारतीय ज्योतिष के अनुसार जन्म के समय जिस नक्षत्र में चन्द्रमा था उसी के आधार पर वर-वधू के

१. Successful Marriage by Pharos; Published by Richard Arling Ltd. 210-11 Piccadilly, London.

गुण (नाड़ी, गण, वश्य, वर्ण आदि) मिलाये जाते हैं। अंक-विद्या के पोषक अंग्रेजी की जन्म तारीख को महत्व देते हैं और यदि वर तथा वधू की जन्म की तारीखों में सहानुभूति है तो उनके विचार से वर-वधू में प्रेम रहेगा। किन-किन तारीखों के मूल अंक में सहानुभूति है यह तृतीय प्रकरण में बताया जा चुका है। नीचे सब तारीखों को ५ वर्गों में विभाजित किया गया है :

(क)	१, १०, १६, २८	(ख)	२, ११, २०, २६
	४, १३, २२, ३१		७, १६, २५,
(ग)	३, १२, २१, ३०	(घ)	५, १४, २३
	६, १५, २४		
	६, १८, २७	(ङ)	८, १७, २६

इस वर्गीकरण के अनुसार पुरुष की जन्म तारीख (क) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख (क) या (ख) के अन्तर्गत होना उत्तम है। यदि पुरुष की जन्म तारीख (ख) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख (क) या (ख) के अन्तर्गत होना उत्तम है। यदि पुरुष की जन्म तारीख (ग) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख भी (ग) में होनी चाहिये। यदि पुरुष की जन्म तारीख (घ) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख का (घ) के अन्तर्गत होना उत्तम है।

किन्तु यदि पुरुष की जन्म तारीख ८, १७ या २६ हो तो, "ऐसी कन्या से विवाह करे जिसकी जन्म तारीखका मूल अंक ८ न हो क्योंकि स्त्री तथा पुरुष दोनों का मूल अंक ८ हो यह अभिप्रेत नहीं है।

८ वाँ प्रकरण

हस्त-रेखा और अंक-ज्योतिष का सामञ्जस्य

अंक-ज्योतिप के विषय में पिछले प्रकरणों में यह बताया जा चुका है कि जन्म की तारीख़ से यह कैसे पता लगाया जाय कि कौन-कौन से वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। अब इस प्रकरण में यह बताया जाता है कि भविष्य के निर्णय में हस्त-रेखा विज्ञान तथा अंक-विद्या ज्योतिप एक दूसरे को कहाँ तक सहायता दे सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति हमको आकर अपना हाथ दिखावे और उसकी अंगरेज़ी की जन्म तारीख़ भी हमें ज्ञात हो तो दोनों की सहायता से क्या हम किसी विशेष नतीजे पर पहुँच सकते हैं।[१] अंगरेज़ी हस्त-रेखा विशारद 'कीरो' ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि हस्त-रेखा के चिह्नों से—"किस वर्ष में यह घटना "होगी", यह निश्चय करने के लिये वह आयु को सात-सात वर्ष के भागों में बाँटते थे? प्रति सातवें वर्ष में, जीवन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है, ऐसा उनका विचार था। 'कीरो' लिखते हैं कि डॉक्टरी या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार करने से भी ज्ञात होता है कि सात-सात वर्ष का समय विशेष परिवर्तन उत्पन्न करने वाला होता है। बालक के उत्पन्न होने के पहिले भी गर्भ-पिण्ड, एक के पश्चात् दूसरी, इस क्रम से सात अवस्थाओं में परिवर्तित होता हैं। मस्तिष्क के विकास में भी सात स्थिति होती हैं। मनुष्य के शरीर में प्रत्येक सात वर्ष के पश्चात्

---

१. देखिये Cheiros Language of the Hand पृष्ठ १८४ तथा १८८।

नयी त्वचा, पुरानी त्वचा का स्थान ले लेती है। कीरो के मतानुसार अनादिकाल से पृथ्वी के समस्त देशों में सात की संख्या का बहुत महत्व रहा है। पृथ्वी में सात नस्ल या जाति के लोग रहते हैं। सात ग्रह सप्ताह के सात वारों के अधिष्ठाता हैं। सात के महत्व के अन्य दृष्टान्त भी कीरो ने दिये हैं परन्तु स्थानाभाव के कारण उन्हें यहाँ स्थान नहीं दिया जा रहा है।

कीरो के मतानुसार एक सात वर्ष के जीवन के भाग के बाद, दूसरा सात वर्ष का भाग छोड़कर जो तीसरा, पाँचवा, सातवाँ, नवाँ भाग आता है, उसमें समानता होती है। इसी प्रकार जीवन का जो दूसरा, ७ वर्ष का भाग है, उसी के समान जीवन का चौथा, छठा, आठवाँ, दसवाँ व बारहवाँ भाग होगा। उदाहरण के लिये यदि कोई बालक अपने जीवन के सातवें वर्ष में बीमार और कमज़ोर रहा है तो वह अपने जीवन के २१ वें वर्ष में भी बीमार और कमज़ोर रहेगा। इसके विपरीत यदि कोई बालक बचपन में कमज़ोर और बीमार था लेकिन सातवें वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहने लगा और यदि वह आपके पास आकर बीस वर्ष की आयु में अपना हाथ दिखाता है कि स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, कब से उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी तो आप उपर्युक्त सिद्धान्त के आधार पर कह सकते हैं कि २१ वें वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। शरीर में जो अन्दरूनी माँस-पेशियाँ, रुधिर या ग्रंथियाँ हैं—जिनसे सदा रक्त-स्राव रहता है—वे प्रत्येक चौदह वर्ष में अपनी पूर्व स्थिति पर उसी प्रकार आ जाती हैं जैसे बारह घंटे बाद घड़ी की छोटी सूई अपने स्थान पर आ जाती है। जहाँ तक शारीरिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध है चौदह वर्ष की प्रणाली का प्रयोग बहुत अधिक मिलता है ऐसा कीरो का मत है
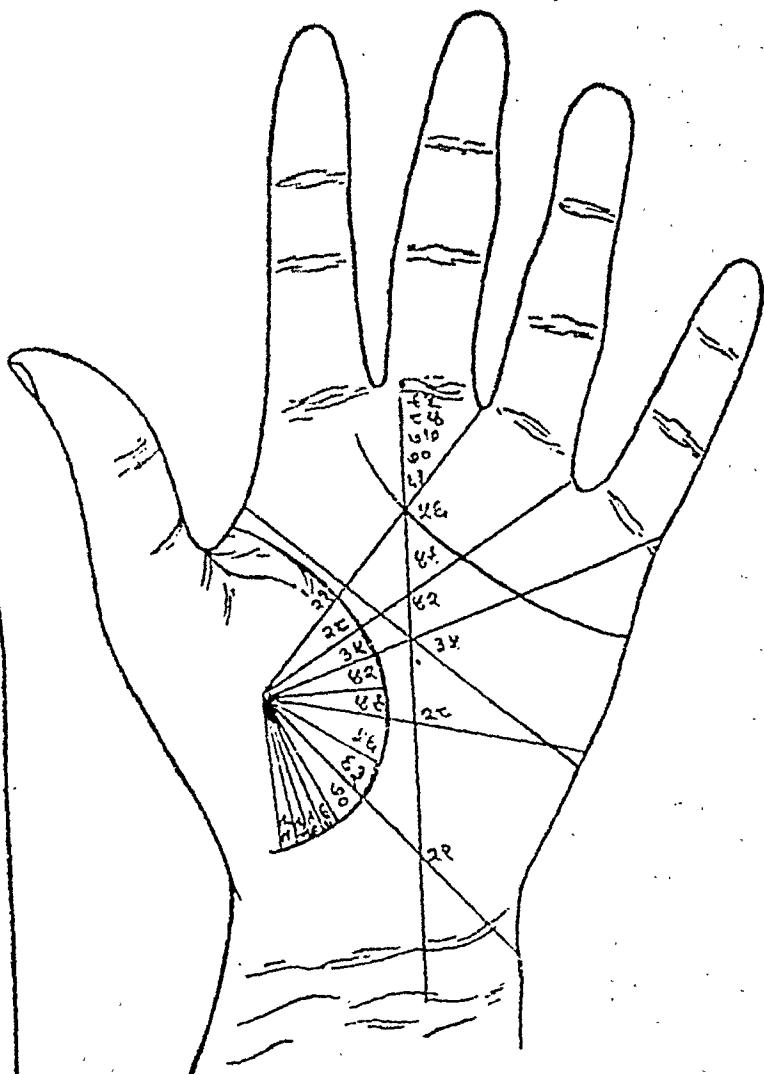
टिप्पणी—यह चित्र ''हस्तरेखा विज्ञान' 'पृष्ठ १८४ से दिया गया है। विशेष विवरण के लिये उपर्युक्त पुस्तक का अवलोकन करें।
प्राप्ति स्थान गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली-६। पृष्ठ संख्या ६०० मूल्य ८)

अंक-ज़्योतिषविद्या का हस्त-रेखा विज्ञान से सामंजस्य करने से हम बहुत कुछ ठीक-ठीक पता लगा सकते हैं। साथ के चित्र में यह दिखाया गया है कि जीवन-रेखा को हम सात-सात वर्षों के खण्डों में किस प्रकार विभाजित कर सकते हैं। साथ ही भाग्यरेखा को भी सात-सात वर्ष के खण्ड में बाँटा गया है। यह चित्र कीरो के मतानुसार यह प्रदर्शित करता है कि युवावस्था के जीवन को यदि हम दो प्रधान भागों में बाँटना चाहें तो पहला खण्ड २१ वर्ष की अवस्था से ३५ वर्ष की अवस्था तक होगा। जहाँ भाग्य-रेखा शीर्ष-रेखा को काटती है वहाँ से दूसरा खण्ड प्रारम्भ होकर ५६ वें वर्ष पर समाप्त होता है। जिस द्रव्य-उपार्जन में मनुष्य का बाहुबल और बुद्धि विशेष आधार होते हैं उसका समय इक्कीसवें वर्ष से आरम्भ होता है। भाग्य-रेखा को सात-सात वर्ष के खण्डों में बाँट कर यह बताया गया है कि कब भाग्य की स्थिति कैसी रहेगी। इसी प्रकार जीवन रेखा को भी सात-सात वर्ष के खण्डों में बाँटा गया है। हमारी "हस्त-रेखा विज्ञान" नामक पुस्तक में हमने यह अच्छी तरह समझाया है कि हाथ की रेखाओं से वर्ष कैसे निकालना चाहिये। जिनके हाथ विशेष लम्बोतरे या अधिक चौरस हों, जिनकी हृदय-रेखा या शीर्ष-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान पर न होकर अधिक ऊँची या नीची हो तो कीरो का यह पैमाना बिल्कुल ठीक नहीं बैठेगा, परन्तु हाथ की रेखाओं में कौनसी रेखा से कौनसा वर्ष समझना चाहिये, इसका अंक-ज्योतिष-विद्या से कैसे सामंजस्य करना चाहिये, यह नीचे बताया जा रहा है।

उदाहरण के लिये एक मनुष्य आपके पास आता है। आप उसका हाथ देखकर इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि ३९ से ४१वें वर्ष के

करीब जीवन-रेखा पर अशुभ चिह्न है और भाग्य रेखा पर भी करीब-करीब इसी अवस्था पर कमज़ोरी आ गयी है। आप उस मनुष्य से पूछते हैं कि इस समय उसकी अवस्था क्या है और क्या वह २५-२६ वर्ष की उम्र में बीमार हुआ था? वह आपको जवाब देता है कि इस समय उसकी उम्र ३७ साल की है; वह २६ वें वर्ष में अधिक बीमार रहा था और वर्ष भर उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहा किन्तु २८ वें वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहने लगा। आप तुरन्त मन में विचार करते हैं जिस समय को आप ३९-४०-४१ वर्ष समझ रहें थे—उसमें से कौनसा वर्ष है यह हस्त-रेखा से निश्चय नहीं कर सके थे—वह वास्तव में ४० वाँ वर्ष होना चाहिये, क्योंकि कीरो के उपर्युक्त मतानुसार चौदहवाँ वर्ष, स्वास्थ्य के दृष्टि-कोण से एक-सा जाना चाहिये। आप ताईद के लिये (अपने निर्णय की पुष्टि के लिये) उसकी हस्त-रेखा देखते हैं कि करीब ग्यारह-बारह वर्ष की उम्र में जीवन-रेखा पर कुछ गढ्ढा है। २६ वें वर्ष में वह कुछ बीमार हुआ था, यह ज्ञात होने के कारण आप उसमें से चौदह घटाकर पूछते हैं कि "बारहवें वर्ष में तो आप बीमार नहीं हुए?" वह बारहवें वर्ष में बीमार होना स्वीकार करता है। उसके जीवन में बीमारी का चौदहवें वर्ष का क्रम ठीक बैठता है, इस नतीजे पर पहुँचते ही आप निश्चयात्मक स्वर से कहते हैं "चालीसवें वर्ष में आप बीमार होंगे किन्तु ४२ वें वर्ष से पूर्ण स्वस्थ हो जावेंगे" आप से वह पुनः प्रश्न करता है कि बाद में तो कोई बीमारी नहीं है? तो आप कह सकते हैं कि ५४ वें वर्ष में पुनः बीमारी का योग है। स्मरण रहे कि भविष्य कथन इतना सरल नहीं है जितना कि बहुत से लोग समझते हैं। केवल १४ जोड़ने से बीमार होना

अवश्यम्भावी हो तो भविष्य-कथन बहुत सरल हो जावे। जब हस्त-रेखा से हम किसी निर्णय पर पहुँचें और हमें किस वर्ष में यह घटना होगी यह निश्चय करने में कठिनाई हो तो अंक ज्यौतिष-विद्या का आश्रय लेना चाहिये। इस प्रकार हस्त-रेखा-विज्ञान तथा अंक-ज्योतिष का सामंजस्य विशेष सहायक हो सकता है। दूसरा दृष्टान्त लीजिये।

प्रथम महायुद्ध के समय लार्ड किचनर भारत के प्रधान सेनापति थे। इनके हाथ को देखकर कीरो ने यह बता दिया था कि ६६ वर्ष की अवस्था में वह समुद्र में डूब कर मरेगें। हाथ को देखकर यह पता चलता था कि ६६ वर्ष की अवस्था में यात्रा-रेखा द्वारा भाग्यरेखा और अभ्युदय-रेखा खण्डित होती थी। लार्ड किचनर के गत जीवन की घटनाओं में निम्नलिखित वर्ष विशेष महत्व के थे।[१]

१८९६ = १ + ८ + ९ + ६ = २४ = २ + ४ = ६
१८९७ = १ + ८ + ९ + ७ = २५ = २ + ५ = ७
१८९८ = १ + ८ + ९ + ८ = २६ = २ + ६ = ८
१९१४ = १ + ९ + १ + ४ = १५ = १ + ५ = ६
१९१५ = १ + ९ + १ + ५ = १६ = १ + ६ = ७
१९१६ = १ + ९ + १ + ६ = १७ = १ + ७ = ८

इनसे कीरो ने यह निष्कर्ष निकाला कि जिन वर्षों का जोड़ ६, ७, ८ होता है वह लार्ड किचनर के जीवन में विशेष महत्व के थे। इस कारण ६६ वर्ष की अवस्था जब वह पूरी करेंगे तब दो बार ६ के अंक आने से उनके जीवन में विशेष घटना घटित होनी

---

१. How I foretold the Lives of Great Men पृष्ठ २७-३०।

चाहिए। यह सन् १९१६ में होता था और सन् १९१६ का योग १+९+१+६=१७=१+७=८ होता था। यह आठ की संख्या भी इनके जीवन में महत्वपूर्ण थी। कीरो ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि ज्योतिष (जन्मकुण्डली) से वह इस निर्णय पर पहुँचे कि जल में डूबकर लार्ड किचनर की मृत्यु होगी और ६६ वर्ष पूर्ण करने पर यह घटना घटित होगी। इस भविष्यवाणी का आधार अंक-ज्योतिष-विद्या थी। (६६ तथा १९१६ का महत्व ऊपर बताया जा चुका है।)

इसी प्रकार बेलजियम के बादशाह लियोपोल्ड II के विषय में कीरो ने बहुत पहले ही बता दिया था कि बादशाह की मृत्यु सन् १९०९ में होगी। हस्तरेखा तथा जन्म-दिन की ग्रह-स्थिति से कीरो जिस निश्चय पर पहुँचे थे उसकी पुष्टि अंक-ज्योतिष से होती थी। कीरो ने किस मनुष्य की जीवन घटनाओं के भविष्य कथन में, किस प्रकार अंक ज्योतिष की सहायता ली, इसका विस्तृत परिचय उनकी पुस्तकों को देखने से ही मिल सकता है। यहाँ केवल इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि कौनसी घटना किस वर्ष में होगी इसका मोटा अंदाज हाथ की रेखाओं से लगता है। किन्तु बिल्कुल ठीक वर्ष निश्चय करने में अंक-ज्योतिष सहायक होता है। उदाहरण के लिए एक स्त्री का जन्म २० अगस्त सन् १९१९ को हुआ। २० तारीख का अंक २+०=२ हुआ। जन्म-तारीख़ की संयुक्त संख्या २+०+८+१+९+१+९=३०=३+०=३ हुई। जैसा कि हमने पिछले प्रकरणों में बताया है, बहुत से व्यक्तियों के जीवन में संयुक्त अंक की बजाय केवल जन्म की तारीख़ के अंक का विशेष महत्व होता है। इस स्त्री का हाथ देखते — — किया कि इसका विवाह किस अवस्था में हुआ

तो उसने उत्तर दिया कि १३वें वर्ष में। इस उत्तर से पुष्टि हुई कि १ + ३ = ४ तथा २ की संख्याओं में सहानुभूति है। इस कारण इसके जीवन में दो की संख्या विशेष महत्व की है। फलतः २० वर्ष में इसके पुत्र होगा। यह भविष्य कथन किया जो अक्षरशः सत्य निकला और जब इसका ३८वाँ वर्ष था ३ + ८ = ११ = १ + १ = २ तव इसके पुत्र का विशेष अभ्युदय हुआ। इसका थोड़ा थोड़ा इंगित हस्तरेखा में भी था। परन्तु जिस चिह्न को हम बीसवें वर्ष का द्योतक मानते हैं उसको २१वाँ भी मान सकते हैं! जिसको ३८वां माना जाता है उसको ३७वां या ३९वाँ भी कह सकते हैं! क्योंकि जीवन-रेखा या भाग्य रेखा पर वर्ष स्थिर करना केवल दृष्टि के अन्दाज़ पर निर्भर रहता है। परन्तु अंक-विद्या के प्रभाव से जिसका जन्म २० अगस्त को हुआ है उसके लिए महत्वपूर्ण २० वाँ और ३८वां ही वर्ष होगा, २१वाँ या ३९वां नहीं। इस प्रकार अंक-ज्योतिष का सामञ्जस्य हस्तरेखा विज्ञान के करने से फलादेश का वर्ष निश्चित करना सुलभ हो जाता है।

सुप्रसिद्ध हस्तरेखा-विशारद सेंट जर्मेन की पुस्तक में एक चित्र दिया गया है जिससे हाथ की विविध रेखाओं से, किस वर्ष में अमुक घटना घटित होगी, इसका अनुमान किया जा सकता है। देखिए अग्रिम चित्र···इसमें सुगमता के लिए आयु के ६-६ वर्ष के खण्ड किए है। यदि कोई चिह्न २४ और ३० वर्ष की अवस्था के बीच में हो तो अन्दाज़ से यह निश्चय करना चाहिए कि वीच का यह काल २७, २८ या २९ है? वहुत वार ठीक वर्ष निश्चित करने में वहुत कठिनाई होती है। उस समय अंक-ज्योतिष से यह निश्चय करना चाहिए कि ९(२ + ७ = ९), १ (२८ = २ + ८ = १० = १ + ० = १) या
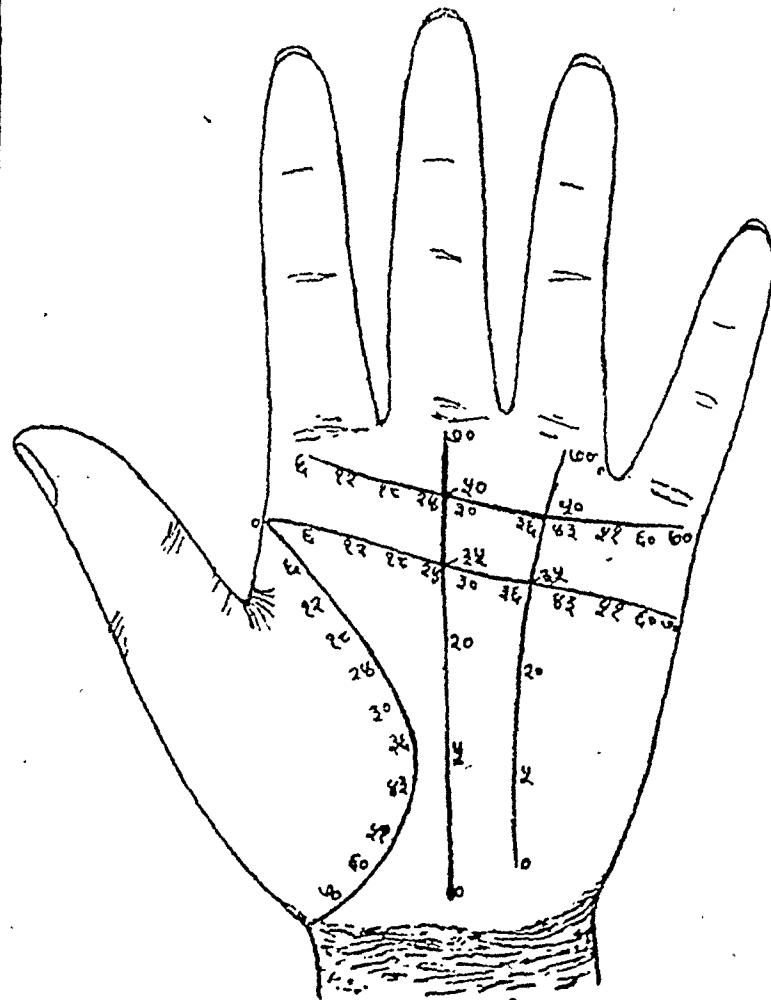
यह चित्र "हस्तरेखा-विज्ञान" पृष्ठ ३०४ से दिया गया है। उपर्युक्त पुस्तक में हस्तरेखा सम्बन्धी ३६ अंगरेजी पुस्तकों तथा ४० संस्कृत पुस्तकों का सार दिया गया है। इस विषय के विशेष जिज्ञासु उसका अवलोकन करें। अथवा देखिये The Study of Palmistry For Professional Purposes का Appendix.

२ (२९=२+९=११=१+१=२) कौनसा अंक जातक के जीवन में विशेष महत्व का है ? उसी के अनुसार २७, २८ या, २९वाँ वर्ष महत्व का होगा। यह निश्चय कर फलादेश किया जावे तो विशेष ठीक होगा।

इसी आधार पर हमने एक सज्जन के हाथ की रेखाओं से उनका फलादेश किया। उनका जन्म अंगरेज़ी ८ तारीख को हुआ था। ऐसे वर्ष जिनका योग ८ होता है सदैव उनके जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हुए। आठवें वर्ष में वह बहुत रोगी रहे; यहाँ तक कि प्राण बचने की आशा नहीं थी। १७ (१+७=८) वर्ष में उन्होंने मिडिल परीक्षा पास की। उस समय सन् १९०० में मिडिल परीक्षा का भी बहुत महत्व था और अपने निवासस्थान से करीब २०० मील दूर जा कर मिडिल की परीक्षा देनी पड़ती थी। अपने जीवन के २६ (२+६=८) वर्ष में उन्होंने बी० ए० पास किया और अपने कालेज के समस्त छात्रों में प्रथम रहे। ३५ वें वर्ष में (३+५=८) परम प्रिय पुत्रोत्पत्ति का हर्ष हुआ। ४४वें (४+४=८) वर्ष में उन्हें करीब साढ़े चार हज़ार वार्षिक की आय का ग्राम पारितोषिक रूप में प्राप्त हुआ। इसी प्रकार ५३वाँ ६२वाँ, तथा ७१वाँ वर्ष भी उनके जीवन में विशेष महत्व का हुआ है। उनके हाथ की रेखाओं को देखने से इन वर्षों का बिल्कुल ठीक अन्दाज़ नहीं हो सकता था। अंक-ज्योतिष के प्रभाव से ही यह निश्चित किया कि उपर्युक्त वर्ष विशेष महत्व के थे और वास्तव में दोनों विद्याओं के सामञ्जस्य से ही अनेक व्यक्तियों के जीवन की घटनाएँ बताने में बहुत सफलता मिली।

जन्म-कुण्डली तथा अंक-ज्योतिष का समन्वय

यह पुस्तक अंक-ज्योतिष से सम्वन्ध रखती है इस कारण जन्म कुण्डली सम्वन्धी उन वारीकियों का हवाला नहीं दिया जायगा जिनका ज्ञान केवल ज्योतिष के पंडितों को होता है। ऐसी कुछ स्थूल वातें नीचे वतायी जायेंगी जिनको जानने से मनुष्य ठीक ठीक फलादेश करने में सफल होता है।

हिन्दी में एक कहावत है कि "वारह वर्ष में घूरे के भी भाग्य फिरते हैं।" इसका अर्थ क्या है? "घूरा" कूड़े को कहते हैं। अर्थात् जो निकम्मी से निकम्मी वस्तु है उसका भी वारह वर्ष में भाग्योदय का समय आता है। इस वारह वर्ष की अवधि का क्या तात्पर्य है? सूर्य एक वर्ष में अपना भ्रमण पूर्ण कर लेता है, वास्तव में भ्रमण तो पृथ्वी सूर्य के चारों ओर करती है किन्तु लोकव्यवहार में सूर्य का भ्रमण कहलाता है। चन्द्रमा करीब २८ दिन में पृथ्वी के चारों ओर एक चक्कर पूरा कर लेता है। मंगल को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में औसत समय डेढ़ वर्ष का लगता है। बृहस्पति वारह वर्ष में पृथ्वी के चारों ओर घूमकर अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है। शुक्र और बुध प्रत्येक को पृथ्वी की परिक्रमा करने में १वर्ष का समय लगता है। बुध और शुक्रसूर्य के आगे पीछे ही रहते हैं। कभी कोई आगे कभी कोई पीछे; कभी दोनों आगे, कभी दोनों पीछे। बुध सूर्य से २८ अंश से अधिक दूर कभी नहीं रहता। शुक्रसूर्य से ४८ अंश से अधिक दूर नहीं रह सकता। शनि को प्रत्येक राशि में करीब २½ वर्ष का समय लगता है और कुल वारह राशियाँ होती हैं; इस कारण १२×२½=३० वर्ष में वह पृथ्वी के चारों ओर अपनी परिक्रमा पूरी कर लेता है। हर्शल और नैपच्यून यह दो

नवीन ग्रह हैं। इनका वर्णन हमारे प्राचीन ज्योतिषशास्त्र में नहीं मिलता। पाश्चात्य वैज्ञानिकों के अनुसार हर्शल को पृथ्वी के चारों ओर एक परिक्रमा पूर्ण करने में ८४ वर्ष का समय लगता है। नैपच्यून को १६८ वर्ष का समय लगता है। राहु और केतु दो उपग्रह हैं। राहु कोई दिखाई देने वाला ग्रह नहीं है; इसीलिए इसे छाया-ग्रह कहते हैं। पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर भ्रमण का एक मार्ग है। चन्द्रमा का पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण का एक अन्य मार्ग है। जहाँ यह दोनों मार्ग एक दूसरे को काटते हैं उस बिन्दु का नाम राहु है। राहु का स्वरूप सर्प की भाँति माना गया है। राहु को सर्प का सिर और केतु को पूँछ कहते है। यह जो पृथ्वी के मार्ग और चन्द्रमा के मार्ग का—एक दूसरे को काटने वाला "चौराहा" या "विन्दु" है वह स्थिर नहीं है। वह सरकता रहता है और १८ वर्ष में मण्डलाकार घूमकर फिर अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है। इसलिए लोक-व्यवहार में कहते है कि राहु को पृथ्वी की परिक्रमा करने में १८ वर्ष का समय लगता है।

जन्म-कुण्डली से फलादेश में मुख्य रूप से तीन सिद्धांत काम में लाये जाते हैं :—

(क) विंशोत्तरी दशा तथा अंतर्दशा के अनुसार फल-कथन।

(ख) गोचर फल कथन—कब कौन सा ग्रह किस राशि में जा रहा है, इस प्रभाव के कारण फलादेश।

(ग) वर्ष-कुण्डली अर्थात् जन्म के समय सूर्य जहाँ पर था, प्रतिवर्ष सूर्य जब वहाँ आवे उस समय की कुण्डली के अनुसार फलादेश।

उपर्युक्त तीनों प्रकारों के फलादेशों से अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध है।

महादशा, अन्तर्दशा तथा अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध

जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति से ही विंशोत्तरी महादशा तथा अन्तर्दशा का क्रम प्रारम्भ किया जाता है। उदाहरण के लिए आप किसी की जन्म-कुण्डली में यह देखते हैं कि उसका वृहस्पति तथा सूर्य दोनों शुभ हैं और वृहस्पति की महादशा में सूर्य का अंतर ९ महीने १८ दिन का चल रहा है। उस मनुष्य की आयु इस समय २४$\frac{३}{४}$ वर्ष की है और २५ वर्ष ६ महीने १८ दिन की अवस्था तक सूर्य का अंतर रहेगा। अंक-ज्योतिष से आप इस नतीजे पर पहुँचे कि २५वाँ वर्ष उसको शुभ होना चाहिए तो प्रत्यन्तर दशा आदि लगाने की आवश्यकता नहीं, न विशेष गोचर का विचार आवश्यक है, वर्ष-कुण्डली बनाने की आवश्यकता भी नहीं, आप तुरन्त कह सकते हैं कि २५वें वर्ष में कार्य हो जावेगा। मान लीजिए कि वह किसी नौकरी के लिए उत्सुक है तो आप कह सकते हैं कि २५वें वर्ष में नौकरी लग जावेगी। यहाँ जो ९ महीने १८ दिन की सूर्य की अन्तर्दशा है उसके विचार में अंक-ज्योतिष से सहायता लेने से इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि प्रथम तीन मास में ही-२५वें वर्ष में ही-कार्य हो जावेगा।

गोचर-फल तथा अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध

ज्योतिष शास्त्र में इस बात का विस्तृत विवेचन किया गया है कि जन्म के समय जिस राशि में चन्द्रमा है (संक्षेप में इसे जन्म-राशि या राशि कहते हैं) उस राशि में जब कोई ग्रह आवे तो क्या फल? उससे दूसरी राशि में आवे तो क्या? तीसरी

राशि में क्या फल ? इस प्रकार जन्म-राशि से बारहों राशि में जब गोचरवश घूमते हुए सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु आवें तो पृथक् पृथक् क्या क्या फल देते हैं ? सूर्य, बुध, शुक्र प्राय: एक वर्ष में परिक्रमा पूर्ण कर लेते हैं। इस कारण जिस राशि में शुभ फल देते हैं उस महीने को स्मरण रखना चाहिए और अपने जीवन में अनुभव करना चाहिए कि प्रतिवर्ष वह महीना कैसा बीतता है। उदाहरण के लिए सूर्य जब कर्क राशि पर आवे (यह समय प्राय: १५ जुलाई से १६ अगस्त तक प्रतिवर्ष होता है) तब यदि किसी मनुष्य को चिन्ता, व्ययाधिक्य आदि अनिष्ट फल देता है तो उसे अपने गत जीवन के प्रत्येक वर्ष में जुलाई-अगस्त का समय कैसा गया है, इसका विचार करना चाहिए। किसी वर्ष कोई घटना किसी विशेष प्रभाव के कारण हो सकती है किन्तु यदि मनुष्य अपने जीवन का बीता हुआ काल अध्ययन करके देखे कि प्रतिवर्ष जुलाई-अगस्त का समय उसे अनिष्ट और अशुभ होता है तो भविष्य के लिए भी नतीजा निकाला जा सकता है। उदाहरण के लिए एक मनुष्य अपने गत २५ वर्ष के जीवन की डायरी (जीवन का हाल या हिसाब) का अवलोकन कर इस नतीजे पर पहुँचता है कि १५ जुलाई से १६ अगस्त के समय में जो भी उसने व्यापार या सौदा किया उसमें घाटा हुआ तो उसे अवश्य सावधान हो जाना चाहिए कि यह समय उसके लिए प्रतिकूल होता है और भविष्य में कोई बड़ा काम इस समय न करे। वराह मिहिर ने लिखा है कि "सविता दशानां पाचयिता"।

इस सिद्धान्त के अनुसार जब सूर्य किसी राशि विशेष में आता है तब अन्य ग्रहों का फल भी सहसा अनुभूत होता है। वराह मिहिर

के पुत्र पृथुयशस ने भी लिखा है कि जब सूर्य किसी राशिविशेष में आता है तो उस राशि के स्वामी का रुका हुआ फल सहसा प्राप्त होता है।

बहुत से लोग अपने गत जीवन का अध्ययन नहीं करते; इस कारण भविष्य के लिये भी परिणाम नहीं निकाल सकते; परन्तु जो अपने जीवन का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन करते हैं वे भविष्य के लिये भी किसी नतीजे पर सफलता-पूर्वक पहुँच सकते हैं। अनेक विद्वानों से इस विषय में विचार विनिमय करने से हम इसी निश्चय पर पहुँचे हैं कि जिनकी जन्म-कुण्डली में कोई राशि अष्टकवर्ग में बली होती है तथा शुभ-ग्रह से युत दृष्ट होती है उनको वह महीना (जब सूर्य उस राशि में आता है) शुभ जाता है और जिनकी जन्म-कुण्डली में कोई राशि सूर्याष्टकवर्ग में निर्बल तथा पापग्रह से दृष्ट-युत या अशुभ सम्बन्ध करने वाली होती है, उस राशि में जब सूर्य आता है तब वह महीना उन्हें अशुभ जाता है। इस सम्बन्ध में हम भारतीय पार्लिमेन्ट "लोक-सभा" के अध्यक्ष स्वर्गीय श्री मावलंकर जी के एक पत्र का उल्लेख किये बिना नहीं रह सकते। इस पत्र में उन्होंने हमको लिखा था कि उन्होंने अपने गत जीवन की घटनाओं से यह अनुभव किया है कि फ़रवरी-मार्च तथा नवंबर के मास उन्हें विशेष महत्वपूर्ण होते थे।[१]

यह तो हुआ सूर्य, बुध और शुक्र के गोचर का अंकज्योतिष से सामञ्जस्य। यदि किसी मनुष्य के जीवन में २ संख्या शुभ-प्रद है तो उसको फ़रवरी (वर्ष का २रा महीना) और नवम्बर (वर्ष

१. इस पत्र के एक भाग का चित्र १८७ पृष्ठ पर दिया गया है।

का ११वां महीना १+१=२) का महीना शुभ जावेगा। ऐसा निश्चय करते समय यदि उस मनुष्य से गत जीवन की घटनाओं का विवरण पूछ कर यह निश्चय कर लिया जावे कि कौन-सा महीना कैसा जाता है तो अंक-ज्योतिष से फलादेश करते समय विशेष सही नतीजे पर पहुँच सकेंगे।

चन्द्रमा

चन्द्रमा २$\frac{1}{4}$ दिन में एक राशि का भ्रमण कर लेता है। चन्द्रमा का अष्टक वर्ग बनाने के लिये ज्योतिष के अधिक ज्ञान की आवश्यकता है। जिस राशि में चन्द्रमा अधिक शुभ रेखायुक्त हो उस राशि के लोगों से मनुष्य को लाभ होता है और गोचरवश जब चन्द्रमा भ्रमण करता हुआ उस राशि में आवे वो शुभ फल देता है। यदि किसी कार्य की जून १९५७ में होने की सम्भावना है और जिस मनुष्य के लिये शुभ फल देखना है उसको ७ का अंक शुभ जाता है तो आप कह सकते हैं कि ७ ता०, १६ ता०, (१+६=७) तथा २५ (२+५=७) तारीख शुभ हैं या शुभ जावेंगी। किन्तु यदि उस मनुष्य की जन्म-कुण्डली में चन्द्राष्टकवर्ग में कन्याराशि में ७ या ८ शुभ रेखायें हैं तो आप पंचाग में यह देखकर कि ता० ६ तथा ता० ७ जून १९५७ को कन्याराशि में चन्द्रमा रहेगा—यह निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि ७ ता० को आपका कार्य हो जावेगा। इस प्रकार ग्रह-ज्योतिष का अंक-ज्योतिष से समन्वय करने से तारीख तक निश्चित की जा सकती है। चन्द्रमा दशा का पोषयिता होता है। इसके सम्बन्ध में देखिये, वृहज्जातक सारावली, पाराशरी आदि।

वृहस्पति

पहिले बताया जा चुका है कि वृहस्पति १२ वर्ष में पृथ्वी की

परिक्रमा पूरी कर लेता है। जन्म-राशि से जब दूसरे, पाचवें, सातवें, नवें, ग्यारहवें बृहस्पति भ्रमणवश आता है तब शुभ फल देता है। इसलिये यदि किसी की जन्मराशि हमें न भी मालूम हो, किन्तु यह मालूम हो कि अमुक वर्ष अच्छा गया है तो हम इस नतीजे पर पहुँच सकते है कि १२ वर्ष बाद जब बृहस्पति भ्रमण करता हुआ उसी स्थान पर आवेगा तब अवश्य शुभ फल देगा। एक दृष्टान्त द्वारा इसे स्पष्ट किया जा रहा है।

एक व्यक्ति की जन्म-राशि 'मीन' है और उसके ७वें वर्ष में बृहस्पति राशि से प्रथम स्थान पर आया, ११वें वर्ष में पंचम स्थान पर आया १३वें वर्ष में सप्तम स्थान पर आया और १५वें वर्ष में नवम स्थान पर आया तथा १७वें वर्ष में एकादश स्थान पर आया तो उसके जीवन में निम्नलिखित वर्षों में फिर बृहस्पति गोचरवश उन्हीं स्थानों पर आवेगा।

प्रथम स्थान :—७वें, १९वें, ३१वें ४३वें,
५५वें, ६७वें, ७९वें, वर्ष में।

पंचम स्थान :—११वें, २३वें, ३५वें, ४७वें
५९वें, ७१वें, ८३वें, वर्ष में।

सप्तम स्थान :—१३वें, २५वें, ३७वें, ४९वें
६१वें, ७३वें, ८५वें, वर्ष में।

नवम स्थान :—१५वें, २७वें, ३९वें, ५१वें, ६३वें
७५वें, ८७वें वर्ष में।

एकादश स्थान :—१७वें, २९वें, ४१वें, ५३वें
६५वें, ७७वें, ८९वें, वर्ष में।

यदि जन्म की राशि मालूम न हो तो भी १२ वर्ष की परिक्रमा

के आधार पर प्रत्येक जीवन में ऐसा समय निकाला जा सकता है जब कोई शुभ घटना घटित हुई हो। यदि किसी के जीवन में जो अच्छे वर्ष गये हैं एक ओर लिखकर उनके आधार पर १२ वर्ष के परिभ्रमण काल के अनुसार शुभ वर्ष निकालने की चेष्टा करें तो सम्भवतः हम इन नतीजे पर पहुँच सकें कि किस समय को आधार मानने से उससे बाद का प्रत्येक १२वाँ वर्ष शुभ जाता है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि बृहस्पति घूमकर करीब १२ वर्ष में उसी राशि पर आता है—बिल्कुल ठीक १२ वर्ष में नहीं। वक्री होने से कभी-कभी एक वर्ष में तीन राशियों में आगे पीछे घूमता रहता है। जैसे १९५७ में मार्च तक बृहस्पति कन्या में रहा फिर वक्री होकर सिंह राशि में चला गया, २० जून १९५७ को फिर वापिस कन्या में चला आवेगा और नवम्बर में तुला में चला जावेगा। इसलिये जब ७वाँ, १९वाँ, ३१ वाँ आदि प्रत्येक १२ वर्ष के काल का निर्देश करते हैं तब इस वर्ष को न तो अपनी जन्म-तिथि से आगामी जन्म तिथि तक लेना चाहिये और न १ जनवरी से ३१ दिसम्बर तक। प्रत्येक १२वें वर्ष का एक मोटा अन्दाज़ है। अब मान लीजिये आप किसी आदमी के गत जीवन काल की घटनाओं से इस अनुमान पर पहुँचे कि उसके जीवन का १३वाँ, २५वाँ,३ ७वाँ, ४९वाँ वर्ष विशेष भाग्योदय का था और अंक-ज्योतिष से उसकी अँग्रेजी की जन्म-तारीख़ के अंकों का योग २ होता है तो ऊपर के बृहस्पति भ्रमण के विचार से ४९ में १२ जोड़े तो ६१ वां वर्ष शुभ आया और अंक-ज्योतिष के अनुसार २ अंक वाले व्यक्ति को ७ का अंक भी शुभ जाता है। यह जानने से आपके पास आये हुए व्यक्ति की आयु का यदि ६१वां वर्ष चल रहा है और वह कहता है कि ६१वें वर्ष में

अब तक कोई भाग्योदय का कार्य नहीं हुआ तो आप गुरु के भ्रमण के आधार पर—ग्रह-ज्योतिष का सामञ्जस्य कर निश्चयपूर्वक, ज़ोर देकर कह सकते हैं कि "६१ वाँ वर्ष कथमपि कथमपि ख़ाली नहीं जा सकता"।

ऊपर बृहस्पति के भ्रमण का एक आधार है। दूसरा एक कारण और है जिसके कारण प्रत्येक १२वां वर्ष एक-सा जाता है। सुदर्शन चक्र बनाकर उसको घुमाने से प्रत्येक वर्ष का फलादेश करने का ज्योतिष शास्त्र में विधान है। सुदर्शन चक्र के अनुसार प्रत्येक १२वें वर्ष का विचार उसी स्थान से किया जाता है। इसके विशेष विवरण के लिये ज्योतिष के ग्रन्थ देखने चाहिये।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक १२वाँ वर्ष किसी अंश में भाग्योदयादि के विचार से एक सा जाता है, यह सर्वाष्टक वर्ग से भी फलादेश का एक प्रकार है। जन्म पत्रिका विधान में लिखा है कि यदि सर्वाष्टक वर्ग में किसी भाव में १४ या १५ रेखा हों और उस भाव में क्रूर-ग्रह भी हों तो उस वर्ष मरण होता है[१] कुल १६ रेखा हों तो अंग पीड़ा और शरीर में महाव्याधि होती है। कुल रेखा १७ हों तो नाश। १८ हों तो धन-क्षय, १९ रेखा हों तो बान्धव पीड़ा और कुमति। २० रेखा हों तो व्यय और कलह। २१ रेखा हों तो हृदय में घोर दुःख। २२ रेखा हों तो दैन्य और पराभव—इस प्रकार २८ रेखा तक अशुभ फल लिखा है और २८ के बाद शुभ फल। २९ रेखा हों तो लोक में सम्मान वृद्धि। ३० रेखा हों तो नवीन पद-प्राप्ति और मान; ३१ रेखा हों तो द्रव्यागमन और विशेष

---

१. देखिए जन्म-पत्रिका विधान पृष्ठ ३६।

आय इत्यादि। इसके लेखक लिखते हैं कि मान लीजिए प्रथम-भाव में सर्वाष्टकवर्ग में ३१ रेखा पड़ीं तो १ ले, १३वें, २५वें, ३७वें ४९वें, ६१वें, ७३वें वर्ष में सौख्य और द्रव्यागमन होगा। जन्म-कुण्डली के १२ भावों से इस प्रकार आगामी सब वर्षों का विचार किया जाता है और प्रत्येक १२वाँ वर्ष एकसा जाना चाहिए।

एक अन्य कारण और भी है जिससे प्रत्येक १२वें वर्ष में कुछ समानता होती है। "संकेत निधि"[१] के निर्माता श्री रामदयालु जी ने तथा यवन ज्योतिष शास्त्र के आधार पर निर्मित "मनुष्य-जातक"[२] में लिखा है कि जन्म-कुण्डली के जिस भाव में क्रूर ग्रह हो उस वर्ष में पीड़ा होगी। उदाहरण के लिए किसी के नवम स्थान में शनि और राहु हैं तो इसको ९, २१, ३३, ४५ और ५७ वें वर्ष में पीड़ा होगी। पूर्व भारतीय प्रणाली यह थी कि प्रत्येक भाव को एक एक वर्ष मानकर भविष्य फल कथन किया जाता था। कुछ अंगरेज़ ज्योतिषियों[३] ने भी इस क्रम को अपनाया है। अतः अंक-ज्योतिष का और १२ वर्ष के भ्रमण काल का समन्वय करने से फलादेश बहुत कुछ ठीक बैठता है।

शनि

शनि को एक राशि में २$\frac{१}{२}$ वर्ष का समय लगता है और पृथ्वी की पूरी परिक्रमा करने में ३० वर्ष। वास्तव में यह समय २९ वर्ष और कुछ महीने होता है। जन्म-कुण्डली में जिस स्थान पर शनि

---

१. देखिए सप्तम संकेत, श्लोक ७

२. मनुष्यजातक, दशमाधिकार, श्लोक ५।

३. How To Use And Understand Astrological Predictive Systems by Dal Lee.

अशुभ फल देता है उससे जब ९०-९० अंश पर आवेगा तब भी अशुभ फल ही देगा। इस ९० अंश को चलने में उसे करीब ७½ वर्ष का समय लगता है। इसलिए गत-जीवन में जो अनिष्ट समय था, प्रायः उससे साढ़े सात वर्ष बाद, १५ वर्ष बाद, २२½ वर्ष बाद और ३० वर्ष बाद शनि कष्ट देता है। २९½वें या ३०वें वर्ष बाद तो शनि फिर घूमकर उसी बिन्दु पर आ जाता है। इस कारण अनिष्ट फल कहते समय या पीड़ा का काल-निर्देश करते समय अंक ज्योतिष का, शनिश्चर की परिक्रमा काल से सामञ्जस्य कर लेना उचित है।

एक कारण और है जिसके कारण प्रति ७वाँ वर्ष एक-सा जाता है। इस सम्बन्ध में चन्द्रमा के परिभ्रमण को 'संकेत निधि'[1] के निर्माता श्री रामदयालु जी ने महत्व दिया है और अंगरेज़ी ज्योतिष में तो चन्द्रमा के भ्रमण को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म-स्थानीय चन्द्रमा २८ दिन में १२ राशियों का घेरा पार कर अपने स्थान पर आ जाता है। मार्ग में जब वह अशुभ ग्रहों से सम्बन्ध करता है तो अशुभ फल देता है। शुभ ग्रहों से सम्बन्ध करता है तो शुभ फल देता है। अब मान लीजिए किसी स्थान पर उसने अशुभ फल किया तो ९० अंश चलने पर उस स्थान से चतुर्थ आ जावेगा। जिस प्रकार ताजिक में चतुर्थ, सप्तम, दशम अशुभ दृष्टि समझी जाती है उसी प्रकार अंगरेज़ी ज्योतिष में नियम है। इस पद्धति में चन्द्रमा के प्रथम दिन के परिभ्रमण का प्रभाव जीवन के पहिले वर्ष में होता है। दूसरे दिन के भ्रमण का प्रभाव जीवन

---

१. देखिए संकेत निधि—संकेत ७ श्लोक १०-११।

के दूसरे वर्ष पर। यह बहुत लम्बा और गहन विषय है; जिनको इसमें विशेष दिलचस्पी हो उन्हें अंगरेजी ज्योतिष की पुस्तकें पढ़नी चाहिए। यहाँ केवल यह निष्कर्ष दिया जाता है कि:—

१. जो वर्ष अशुभ गया है उसके ७-७ वर्ष के बाद का काल अशुभ जायगा। उदाहरण के लिए तीसरा वर्ष पीड़ा-कारक है तो ३रा, १०वाँ, १७वाँ, २४वाँ, ३१वाँ, ३८वाँ, ४५वाँ, ५२वाँ, ५९वाँ आदि वर्ष अशुभ जावेंगे।

२. जो वर्ष शुभ गया है उससे नवाँ शुभ जावेगा। यदि पहला वर्ष शुभ है तो १०वाँ, १९वाँ, २८वाँ, ३७वाँ, ४६वाँ—इस प्रकार प्रत्येक नवाँ वर्ष शुभ जावेगा।

राहु और केतु

राहु और केतु १८ वर्ष में पूरा परिभ्रमण कर लेते हैं। इसलिए जहाँ पर इन्होंने गोचर द्वारा शुभ फल दिया हो उससे १८वें वर्ष में यदि उसी प्रकार के फल का अनुभव तो उस आधार पर निश्चय किया जा सकता है कि भविष्य के १८वें वर्ष में भी उसी प्रकार का अनुभव होगा।।

३६ वर्ष का परिभ्रमण—ऊपर कई मतों से बताया जा चुका है कि प्रत्येक १२वाँ तथा प्रत्येक ९वां वर्ष एक-सा जाता है। १२ और ९ का लघुतम ३६ होता है इस कारण प्रत्येक ३६ वर्ष के बाद के वर्षों में समानता होनी चाहिए।

१ ला, ३७वाँ ७३वाँ एक सा
२ रा, ३८वाँ, ७४वाँ „ „
३ रा, ३९वाँ, ७५वाँ „ „
४ था, ४०वाँ, ७६वाँ „ „ इत्यादि

यदि किसी व्यक्ति की हम कुण्डली, केतु-कुराडली तथा वृहस्पति कुराडली बनावें तो उस वर्ष का शुभाशुभ निकल सकता है। पाप-संयोग होने से उस वर्ष वहुत कष्ट होता है। लिखा है:—

"पताकी कुराडली केतो: कुण्डली च वृहस्पते:।
सर्वत्र पापसंयोगे संशयो जायते महान्॥[1]

इसके अनुसार ३६ वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्ति का भविष्य निश्चित करना हो तो ३६ वर्ष पहले कैसा समय बीता था इसका अन्वेषरा करना चाहिए। उदाहरण के लिए एक मनुष्य की जन्म-तारीख़, जन्म-महीना आदि कुछ भी मालूम नहीं हैं। उसके जीवन का ४८वाँ वर्ष जा रहा है, वह बड़े कष्ट में है, भविष्य जानना चाहता है। आप उससे पूछते हैं कि ४८—३६=१२, उसके जीवन का १२वाँ वर्ष कैसा गया है? वह कहता है कि १२वाँ वर्ष तो बड़े कष्ट का बीता किन्तु १३वें वर्ष में सब कष्ट दूर हो गए और भाग्योदय हो गया, तो आप विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ४९वाँ वर्ष अच्छा जावेगा।

ताजिक द्वारा वर्षफल तथा अंक-ज्योतिष का सामञ्जस्य

यदि किसी का वर्ष प्रवेश जून या जुलाई में होता है तो 'वर्ष प्रवेश कुराडली' का फल आगामी जून या जुलाई तक रहेगा। किन्तु अंक-विद्या के सामञ्जस्य से यह निश्चय किया जा सकता है कि १९५७ अच्छा होगा या १९५८?

ऊपर जो अनेक प्रकार से ग्रह-ज्योतिष और अंक-ज्योतिष का सामञ्जस्य बताया गया है इससे ज्योतिष के विद्वान् तो विशेष लाभ उठावेंगे ही किन्तु साधारण पाठक भी अपने गत जीवन की घटनाओं के आधार पर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

---

१. जन्म पत्रिका विधान—पृष्ठ १८८।

९वाँ प्रकरण

'अंकों' से प्रश्न विचार

भारतीय मत

प्रश्न के विषय में यद्यपि ज्यौतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथ हैं[१] तथापि 'अंकों' या 'संख्या' से प्रश्न विचार, केरल देश में अधिक प्रचलित होने के कारण, इस शास्त्र को 'केरलीय' भी कहते हैं।

केरल प्रश्न संग्रह में लिखा है कि प्रश्न सम्बन्धी जिस वाक्य का प्रश्नकर्त्ता उच्चारण करे—उस वाक्य में जो-जो अक्षर आवें उनकी संख्या को जोड़ले। किन्तु यदि वाक्य वहुत लम्वा हो अथवा अस्पष्ट हो तो, प्रश्नकर्त्ता यदि व्राह्मण हो तो उससे किसी पुष्प का नाम, क्षत्रिय हो तो किसी नदी का नाम, वैश्य हो तो किसी देवता का नाम और यदि शूद्र हो तो उससे किसी 'फल' का नाम लेने को कहे। किन्तु 'प्रश्न चूड़ामणि' में लिखा है कि कोई भी प्रातः काल प्रश्न करे तो किसी वालक से कहे कि किसी 'वृक्ष' का नाम लो। यदि मध्याह्न काल हो तो किसी युवा पुरुष से किसी 'पुष्प' का नाम ग्रहण करने को कहे। यदि तीसरे पहर कोई प्रश्न करे तो किसी वृद्ध से किसी 'फल' का नाम लेने को कहे। अस्तु। हमारे विचार से प्रश्नकर्त्ता से ही कहना चाहिये कि अपना प्रश्न हिन्दी में थोड़े अक्षरों में लिख दीजिये या किसी पुष्प या फल का नाम लिख

१. केरल प्रश्न संग्रह, केरलीय प्रश्नरत्न, प्रश्न चूड़ामणि। आदि।

दीजिये। जिन अक्षरों को प्रश्नकर्त्ता लिखे उनकी संख्या निम्नलिखित नियमानुसार बनाना चाहिये :

अ	१२	ए	१८
आ	२१	ऐ	३२
इ	११	ओ	२५
ई	१८	औ	१९
उ	१५	अं	२५
ऊ	२२		

यह तो स्वरों की संख्या हुई। यदि 'ऋ' का प्रयोग करे तो उसे 'रि' की भाँति (र्+इ) माने। लृ लृ तथा अः का प्रयोग भाषा में नहीं होता इस कारण उन अंक्षरों की संख्या नहीं लिखी गई है।

अब व्यंजनों की संख्या लिखी जाती है :—

क्	१३	ट्	१०	प्	२७	ष्	३५
ख्	११	ठ्	१३	फ्	१८	स्	३५
ग्	२१	ड्	२२	ब्	२६	ह्	१२
घ्	३०	ढ्	३५	भ्	२७		
ङ्	१०	ण्	४५	म्	८६		
च्	१५	त्	१४	य्	१६		
छ्	२१	थ्	१८	र्	१३		
ज्	२३	द्	१७	ल्	१३		
झ्	२६	ध्	१३	व्	३५		
ञ्	२६	न्	३५	श्	२६		

मान लीजिये किसी ने लिखा 'गुलाब', तो पहिले इस शब्द के स्वर और व्यञ्जन अलग-अलग कर लिखें।

टिप्पणी : एक मतानुसार 'प' की संख्या २८ है।

ग् + उ + ल् + आ + ब् + अ

२१ + १५ + १३ + २१ + २६ + १२ = १०८

इन प्रत्येक स्वर तथा व्यञ्जन के नीचे उस स्वर या व्यञ्जन की जो संख्या दी गई है वह लिखनी चाहिये और सब संख्याओं को जोड़कर उस शब्द (यथा 'गुलाब') का पिंड बनाना चाहिये। ऊपर सब संख्याओं का योग १०८ आया। अब इस संख्या पिंड से प्रश्न का उत्तर कैसे देना यह बताया जाता है।

शास्त्रकारों ने प्रश्नों को अनेक भागों में विभाजित किया है। यहाँ केवल मुख्य-मुख्य विषय के प्रश्नों के सम्बन्ध में कुछ नियम बताये जाते हैं।

(१) लाभ-अलाभ प्रश्न (द्रव्य का लाभ या हानि)

(२) जय-पराजय प्रश्न (हार या जीत)

(३) सुख दुःख प्रश्न

(४) गमन प्रश्न (जाने के विषय में प्रश्न)

(५) जीवन मरण प्रश्न

(६) गर्भ विचार (गर्भ है या नहीं)

(७) तेजी-मन्दी प्रश्न

(८) विवाह प्रश्न

(९) पुत्र कन्या जन्म प्रश्न

अब क्रमशः इनका उत्तर देने की विधि बतलाई जाती है। हम नीचे उदाहरणों में 'गुलाब' का उदाहरण दे रहे हैं।[1]

१. वास्तव में जब प्रश्न कर्त्ता प्रश्न [illegible] तब प्रश्न के अक्षरों का जो संख्या पिंड आवे या जिस फल या ;०१ की नाम ले उसका जो संख्या-पिंड आवे—उसके आधार पर उत्तर कहना उत्तये।

(१) मान लीजिये किसी ने लाभ या हानि सम्बन्धी प्रश्न किया और 'गुलाब' का नाम लिखा। तो, १०८ प्रश्न का संख्या-पिंड हुआ। इसमें ४२ जोड़ कर ३ से भाग देना चाहिये। यदि १ बचे तो लाभ, २ बचे तो थोड़ा लाभ। यदि शून्य बचे तो हानि।

उपर्युक्त 'गुलाब' के उदाहरण में १०८ में ४२ जोड़े तो हुए १५०। तीन भाग देने से शेष ० बचा। इसलिये उत्तर देना चाहिये कि इस कार्य में लाभ नहीं होगा वल्कि हानि होगी।

(२) यदि कोई हार-जीत सम्वन्धी प्रश्न करे तो प्रश्न का जो संख्यापिंड हो उसमें ३४ जोड़ कर ३ का भाग देना चाहिये। यदि १ शेष वचे तो 'जय'। यदि २ शेष बचे तो संधि। यदि ० शेष बचे तो पराजय।

उदाहरण के लिये प्रश्नपिंड १०८ है। इसमें ३४ जोड़ने से १४२ हुए। इसमें ३ का भाग दिया तो १ शेष बचा। इसलिये उत्तर हुआ 'जीत' होगी।

(३) यदि सुख-दुःख-विषयक प्रश्न हो तो प्रश्न का जो संख्या-पिंड हो उसमें ३८ जोड़कर २ से भाग देना चाहिये। यदि शेष १ बचे तो सुख। यदि ० बचे तो दुःख।

उदाहरण—प्रश्नकर्त्ता यह जानना चाहता है कि उसके जीवन के आगे के २ वर्ष दुःखमय जावेंगे या सुखमय। उससे किसी पुष्प का नाम लेने को कहिये। उसने कहा 'चमेली'। अब 'चमेली' का संख्या-पिंड बनाया—

च्+अ+म्+ए+ल्+ई

१५+१२+८६+[illegible]+१३+१८=१६२

इस '१६२' के संख्या-पिंड में [illegible]ड़ने से २०० हुए। इस

२०० में २ का भाग दिया तो शेष ० बचा। इस कारण उत्तर देना चाहिये कि अग्रिम २ वर्ष दुःखमय वीतेंगे।

(४) यदि गमन (जाऊंगा या नहीं ?) प्रश्न हो तो प्रश्न-पिंड में ३३ जोड़कर ३ से भाग देना चाहिये। १ शेष बचे तो 'जाना' होगा। २ शेष हो तो 'जाना' नहीं होगा। ० शेष हो तो यात्रा तो होगी परन्तु बीच से ही लौट आना होगा।

उदाहरण : किसी का प्रश्न है कि कलकत्ता जावेगा या नहीं ? उससे किसी पुष्प का नाम लेने को कहिये। उसने कहा 'चमेली'। ऊपर वताया जा चुका है कि 'चमेली के अक्षरों का संख्या-पिंड १६२ होता है। इसमें ३३ जोड़े तो १९५ हुए। इसमें ३ का भाग दिया तो ० शेष वचा। इस कारण उत्तर देना चाहिये कि असफलयात्राहोगी

(५) यदि कोई व्यक्ति बीमार हो या मृत्यु की सम्भावना हो और प्रश्न किया जावे कि जीवन रहेगा या नहीं तो प्रश्न पिंड में ४० जोड़कर उसे भाग देना चाहिये। शेष १ बचे तो जीवन रहेगा। २ शेष रहे तो कष्टसाध्य जीवन रहेगा—अर्थात् वहुत कष्ट होगा किंतु जीवन वच जावेगा। यदि ० शेष रहे तो मृत्यु हो जावेगी।

[illegible] के लिये यदि जीवन-मरण सम्बन्धी प्रश्न हो और किसी पुष्प का न[illegible] लेने के लिये कहा तो उसने कहा 'चम्पा'। 'चम्पा' के अक्षरों का संख्या-पिंड निम्नलिखित प्रकार से बनाया तो संख्या पिंड १६१ हुआ।

च्+अ+म्+प्+आ

१५+१२+८६+७+२१=१६१

इसमें ४० जोड़ने से २०१ की संख्या हुई। ३ से भाग देने से ० शेष रहा। इस कारण उत्तर देना चाहिए कि जीवित रहने की

वहुत कम आशा है। वास्तव में ० शेष रहने से उत्तर तो मृत्यु हुआ। परन्तु ज्यौतिषी को उचित है कि अशुभ वाणी न निकाले। प्रकारान्तर से उत्तर दे।

(६) गर्भसम्वन्धी प्रश्न हो कि गर्भ है या नहीं तो किसी फल या पुष्प का नाम लेने को कहे। उसका जो संख्यापिंड हो उसमें २६ जोड़कर ३ से भाग दे। १ शेष रहे तो गर्भ है। २ शेष रहे तो सन्देह है—ऐसा कहे। तीन शेष रहे तो गर्भ नहीं है यह कहना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी ने कहा 'चम्पा'। चम्पा का संख्यापिंड १६१ है। इसमें २६ जोड़ने से १८७ हुए। ३ का भाग देने से १ शेष रहा। इस कारण उत्तर हुआ कि गर्भ है।

यहाँ पर शंका हो सकती है कि चम्पा की संख्यापिंड वनाते समय यदि,

च्+अ+म्+प्+आ इस प्रकार लिखते हैं तो

संख्या पिंड १६१ होता है किन्तु यदि, ...किस

च्+अं+प्+आ यही है कि

१५+२५+२७+२१=८८

इस प्रकार लिखा जावे तो संख्यापिंड ८८ दे। 'चंपा' या 'चम्पा'

प्रकार संख्यापिंड बनाना उचित है। इस प्रश्नपिंड बनाना उचित है।

प्रश्नकर्ता से कहे कि कागज़ पर वह लि... प्रश्न हो तो किसी फल या

जैसा वह लिखे उसी के आधार पर इसके बाद उपर्युक्त नियमानुसार

(७) यदि तेज़ी-मन्दी सम्बन्धी फल का संख्यापिंड बनावे। उस

पुष्प का नाम लेने को कहे। १ बचे तो मन्दी (माल सस्ता होगा

प्रश्नकर्ता के कहे हुए पुष्प या

...पिंड में ३ का भाग दे।

दाम गिरेंगे)। २ शेष बचे तो भाव करीब-करीब उतने ही रहेंगे। यदि ० शेष बचे तो तेज़ी अर्थात बाज़ार ऊँचा जावेगा—दाम बढ़ेंगे। उदाहरण के लिए प्रश्नकर्ता ने कहा 'गुलाब'। 'गुलाब' का संख्या-पिंड १०८ होता है, यह ऊपर बताया जा चुका है। इस १०८ में ३ का भाग देने से ० शेष रहा। इस कारण उत्तर देना चाहिए कि तेज़ी होगी—बाज़ार ऊँचा जावेगा।

(८) यदि पुत्र होगा या कन्या—इस विषय का प्रश्न हो तो प्रश्न पिंड में ३ का भाग देना। शेष १ बचे तो पुत्र। २ शेष बचे तो कन्या। ० बचे तो गर्भस्राव होगा।

उदाहरण के लिए किसी ने इस विषय का प्रश्न किया। उससे कहा कि 'आप किसी पुष्प का नाम लिखिए तो उसने लिखा 'चंपा'—ऊपर बताया जा चुका है कि 'चंपा' का संख्या पिंड ८८ हुआ। इसमें तीन का भाग देने से १ शेष बचा। इस कारण उत्तर हुआ—'पुत्र' होगा।

(९) अक्षरों से संख्यापिंड बनाना एक प्रकार है। दूसरा प्रकार है कि किसी कागज़ पर संख्या ही लिखवा लीजावे और उसी संख्या-पिंड से विचार किया जावे। विशेष जिज्ञासु पाठकों को इस विषय के विस्तृत ग्रंथ केरलीय प्रश्न रत्न आदि देखने चाहिए[1]।

पाश्चात्य मत

वैसे तो पाश्चात्य मत बहुत प्रकार के हैं और मूक प्रश्न आदि के नियम आगे पृथक् दिये गये हैं किन्तु साधारण नियम यह है कि प्रश्न-कर्ता से कहे कि वह कोई एक शब्द कागज़ पर लिख दे उस शब्द में जो अंगरेज़ी वर्णमाला के अक्षर आवें उनका

---

१. केरलीय प्रश्नरत्नम् पृष्ठ ४५-१३८

'संयुक्तांक' बनालें। जैसे नाम का संयुक्तांक बनाने की पद्धति ५वें प्रकरण में दी गई है उसी प्रकार जो शब्द प्रश्नकर्ता लिखे उस शब्द का संयुक्तांक बनालें और जो शब्दपिंड (संख्या) आवे उसके शुभाशुभ फलानुसार (देखिए ५वाँ प्रकरण जहाँ १० से लेकर ७० तक के संख्यापिंड का विवरण दिया गया है) उत्तर दें।

अंकों से मूक प्रश्न ज्ञान

"सेफ़ेरियल" नामक प्रसिद्ध अंगरेज़ ज्यौतिषी ने अपनी अंक ज्योतिष की पुस्तक[१] में अंकों से मूक प्रश्न बनाने का ज़िक्र किया है और जिस दसवें प्रकरण में इसका विवेचन किया है, उस प्रकरण का नाम रक्खा है "अंक विद्या से मूक प्रश्न बताना—हिन्दू शास्त्रानुसार।" स्वभावतः हमें जिज्ञासा हुई कि 'सेफ़ेरियल' ने हिन्दू-ज्योतिष के किस ग्रंथ में से उपर्युक्त विषय लिया है। किन्तु बहुत अनुसंधान करने पर भी हमें अपने संस्कृत साहित्य में उस ग्रन्थ रत्न का पता न लग सका। विदेशियों के निरन्तर आक्रमणों से हमारी संस्कृति जर्जरित हो गई और हमारे कितने ही अमूल्य ग्रंथ सर्वदा को काल कवलित हो गये। अब भी जर्मन और इंगलैण्ड के संग्रहालयों में तथा नैपाल और तिब्बत में प्राचीन भारतीय संस्कृति और विद्या समृद्धि के परिचायक कितने ही ऐसे ग्रंथ मिलते हैं—जो भारत में उपलब्ध नहीं। अतः पाठकों के लाभार्थ अंक-ज्यौतिष द्वारा मूक प्रश्न बताने की विधि दी जाती है।

परन्तु "मूक प्रश्न" के सम्बन्ध में एक विशेष बात ध्यान में

---

१. The Kabala of Numbers by Sepharial Published by Rider & Co. London.

रखनी चाहिए। मूक प्रश्न एक प्रकार से दूसरे के विचार को जान लेना है। इसके लिए स्वयं अपनी मानसिक शक्ति और आत्मिक शक्ति बहुत प्रबल होना आवश्यक है। सूई से कपड़ा सिलता है। परन्तु सीना भी तो आना चाहिए। अग्नि से भोजन बनता है। किन्तु जो भोजन बनाने की कला से अनभिज्ञ है वह क्या करेगा ? प्रश्न में—मानसिक शक्ति की तीव्रता और चित्त की सात्विकता—यह दो गुण परमावश्यक हैं। जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य अच्छा गायक नहीं हो सकता—वाणी का सौष्ठव और गले की मिठास ईश्वरीय देन होते हैं उसी प्रकार मूक-प्रश्न आदि विद्या में सब सफल नहीं हो सकते। जिनमें 'अतीन्द्रिय ज्ञान' विशेष मात्रा में होता है वे ही मूक प्रश्न बताने में सफल हो सकते हैं।

प्रश्न करने वाले से कहिये कि नौ अंक लिख दे। इनको जोड़िये और योग में सदैव ३ जोड़ दीजिये।

उदाहरण के लिए प्रश्नकर्ता ने लिखा—

९८५६२७१४२=४४
सदैव जोड़िए ३
योग— ४७

इस '४७' संख्या के अनुसार नीचे जो उत्तर आवेगा—मूक प्रश्न का उत्तर होगा। यदि कोई ९ बार केवल ० लिखे तो

०००००००००=०
सदैव जोड़िए= ३
योग ३

योग ३ होगा। सबसे बड़ी संख्या तब बनेगी जब कोई ९ बार ९ लिखदे।

९९९९९९९९९=८१
सदैव जोड़िए ३

योग ८४

इसलिए सबसे बड़ी संख्या ८४ होगी। इसलिए ३ से लेकर ८४ तक की संख्याओं का फल नीचे दिया जाता है।

(३) आप किसी बीमारी, बुख़ार, रोग या क्रोध की व्यक्तिगत बात सोच रहे हैं।

(४) किसी कौटुम्बिक विषय में—प्रेम या आनन्ददायक विषय में जिससे हृदय का बहुत सम्बन्ध है—या जिसकी तीव्र इच्छा आपके मन में हैं।

(५) विवाह के विषय में—या किसी इकरारनामे या साझेदारी के विषय में या किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों के मिलने के विषय में।

(६) किसी समाचार या ख़बर के विषय में, यात्रा भाई या किसी सवारी या डाक से आने वाली वस्तु के विषय में।

(७) मकान या ज़मीन के विषय में या भूमि के नीचे की वस्तु के विषय में, समुद्र, जलराशि, परिवर्तन या स्थानपरिवर्तन आदि के विषय में।

(८) विदेशी या प्राचीन वस्तु के विषय में।

(९) मृत्यु से सम्बन्धित या घाटे के विषय में। कोई ग़लत इकरारनामा हो गया है और वह कैसे ठीक हो?

(१०) कोई कष्टदायक सम्बन्ध हो गया है या कोई ऐसा इकरारनामा जिससे हानि की संभावना है या झगड़े के विषय में।

(११) किसी खान, जायदाद या उसके मूल्य के विषय में।

(१२) खुशनुमा वातावरण, कोई जलसा या उत्सव, आराम की चीजें बढ़िया कपड़े।

(१३) द्रव्य के सम्बन्ध में, सट्टे या लाभ के विषय में।

(१४) किसी स्त्री-सम्बन्धी के विषय में (लड़की, बहिन आदि) नदी या समुद्र के उस पार से जाने वाले किसी संवाद के विषय में या किसी यात्रा के विषय में।

(१५) किसी मृत्यु या दुःखदायी समाचार के सम्बन्ध में या किसी अन्य कष्ट के समाचार या घाटे के विषय में।

(१६) किसी अच्छे या शुभ समाचार के विषय में, किसी लाभदायक सम्पर्क, पत्नी या किसी अच्छे इकरारनामे या बातचीत के विषय में।

(१७) किसी रोग, तकलीफ़ या नौकर या अपने समीप की किसी वस्तु के विषय में।

(१८) किसी हर्षदायक यात्रा के विषय में, प्रेम, हर्ष, भाई या इच्छित सन्देश प्राप्ति किंवा सुवर्ण या कौटुम्बिक बात के विषय में।

(१९) किसी चीज की रुकावट, जेल, एकान्तवास, अस्पताल में रहना अथवा बच्चे के विषय में।

(२०) किसी यात्रा या पत्र के विषय में, किसी से पत्र-व्यवहार या वस्तु के लाने-ले जाने के विषय में—रास्ते से सम्बन्धित प्रश्न।

(२१) लाभ के विषय में—कुछ आर्थिक लाभ, जो वस्तु कब्जे में हो सफ़ेद या चाँदी की चीज।

(२२) किसी ऐसे विवाह के विषय में जो इच्छा के प्रतिकूल या दुष्परिणामयुक्त हो—किसी बीमार साझीदार या पति या

पत्नी के विषय में—किसी शत्रु या प्रतियोगी की बाबत अथवा कठिनाइयों या प्रतिकूल इकरारनामे के सम्बन्ध में।

(२३) सुसम्पन्न स्थिति में रहने के विषय में, अच्छे कपड़े, उत्तम भोजन, स्वामिभक्त नौकरों के विषय में, अच्छे पद, स्वास्थ्य तथा आराम के सम्बन्ध में।

(२४) किसी स्थिति की डाँवाडोल हालत के विषय में—किसी कौटुम्बिक कलह की बाबत—किसी ऐसे नवीन कार्य की आयोजना के विषय में जिसमें बहुत कठिनाइयाँ तथा विषमता उपस्थित हो रही हों—बच्चों के विषय में या गुप्त प्रेम के सम्बन्ध में।

(२५) बहुत लाभ के विषय में, बहुत धन, सोना, सूर्य या किसी चमकीली वस्तु की बाबत।

(२६) शान्तिपूर्ण अधिकार के विषय में, अच्छी जायदाद, मकान, बुनियाद या समतल भूमि की बाबत।

(२७) किसी बन्द कमरे या जगह की बाबत—नाव द्वारा छोटी यात्रा। भाई या किसी सम्बन्धी के विषय में, किसी पत्र या सन्देशा लाने वाले की बाबत।

(२८) अपनी कल्पना के विषय में—सफ़ेद कपड़ा, प्याला या चाँदी की चीज़—नवीन (शुक्लपक्ष की प्रारम्भिक तिथियों के) चन्द्रमा के विषय में।

(२९) अस्वास्थ्य के विषय में—गरीबी और कठिनाइयों की परिस्थिति के विषय में, खून फ़साद या बीमारी की बाबत।

(३०) प्रसन्न बच्चों के विषय में, आनन्ददायक अनुभव, संयोग, किसी विरासत या दहेज द्वारा प्राप्त धन के विषय में।

(३१) जमीन के नीचे (भूगर्भ में स्थिति) वस्तु के विषय में, मकान में स्थित सर्प, बिच्छू या अन्य जानवर या विदेश की बावत।

(३२) किसी बादशाह या सरकार या सुवर्ण सम्बन्धित या अपने स्वयं के व्यक्तित्व या कार्य के बारे में।

(३३) एक प्रसन्न दायक समाचार के विषय में, अच्छा पद या स्थिति भाई या किसी अन्य विशिष्ट उपलब्धि की बावत।

(३४) आर्थिक लाभ से सम्बन्धित, भोजन या अन्य आवश्यक पदार्थ, अन्न या अन्य लाभ।

(३५) किसी स्त्री के विषय में, जन्म की बावत—किसी गुप्तयोजना या कार्यवाही से सम्बन्धित—अपनी किसी गुप्त बात की या एकान्तवास की बावत।

(३६) सट्टे या रोज़गार में हानि, बीमार बच्चा, दुःखदायक कौटुम्बिक स्थिति दुःख और कष्ट की बावत।

(३७) किसी ऐसे इकरारनामे के विषय में जिसका परिणाम अच्छा न हुआ हो—किसी विवाह के विषय में जिससे ख़ुशी हासिल न हुई हो—मकान, जायदाद या अस्तबल की बावत।

(३८) बुख़ार—मलेरिया या मोतीभरा से सम्बन्धित शारीरिक कष्ट या मृत्यु—यात्रा अथवा संवाद—किसी समीप के तालाब या जलाशय की बावत, वह्नि के विषय में।

(३९) किसी बन्द जगह या मन्दिर के विषय में—राजभवन या चमकीले मकान (सिनेमा) आदि से सम्बन्धित किंवा बाहर जाने—निष्कासन आदि के विषय में।

(४०) अन्न के मूल्य, बहुमूल्य वस्तु, जवाहरात, ज़ेवर, पहिनने के वस्त्र या द्रव्य विषयक।

(४१) अपने स्वयं के या अपनी पोशाक, भोजन, स्थिति, नेकनामी, वदनामी, साख या प्रतिष्ठा के वारे में ।

(४२) किसी मित्र या उच्च पद की स्त्री के विषय में, किसी उच्च पदाधिकारिणी की कृपा के सम्वन्ध में—किसी जन समूह की वावत ।

(४३) मौरूसी जायदाद के विषय में, पुरानी इमारत, श्मशान, खान की वस्तुओं की वावत या किसी वृद्ध के विषय में ।

(४४) भाई के विषय में, स्वास्थ्य, आराम की वस्तु, शौकीनी, धार्मिक ग्रंथ, शास्त्र सम्बन्धी या समुद्र पार अथवा दूर से आने वाले पत्र के विषय में ।

(४५) विवाह के विषय में—लाभ या हानि सम्वन्धी प्रश्न । धोखा, पक्षपात, असमानता या किसी छोटे मूल्य की वस्तु के विषय में ।

(४६) किसी मित्र या उच्च पदाधिकारी के विषय में—सोने की वस्तु, अंगूठी, जवाहरात या वहुमूल्य वस्तु के विषय में ।

(४७) स्वयं के विषय में न्याय-इन्साफ़-मुकदमें के वारे में, नाप तोल, संतोष, आराम, शांति, मृत्यु के विषय में ।

(४८) पोशाक-गृह, मकान की किसी अन्दरूनी जगह की बावत । किसी छिपे हुए नौकर के विषय में—किसी स्त्री के स्वास्थ्य के विषय में या दूर से आने वाले संवाद के विषय में ।

(४९) पद-परिवर्तन के विषय में, अपनी माता या किसी विशिष्ट वस्तु की बावत—किसी रानी या उच्च पदाधिकारिणी महिला के विषय में ।

(५०) किसी कष्टदायक यात्रा के विषय में—कष्ट में पड़ी हुई किसी

बहिन के विषय में—किसी बुलाहट या दुःखद समाचार के विषय में ।

(५१) लाभ या आर्थिक प्रचुरता के विषय में । किसी शर्त, सट्टा, लॉटरी, किसी रोज़गार, बच्चों, या दूर से आने वाले द्रव्य के विषय में ।

(५२) शारीरिक रोग या मृत्यु के विषय में—खोई हुई, छिपी हुई वस्तु की बाबत, नौकर, लाल कपड़ा, गरम भोजन, डाक्टर वैद्य 'यमराज' या सर्प विषयक प्रश्न ।

(५३) किसी उच्च पद के विषय में—राजा या तत्सदृश पदाधिकारी, मृत सिंह या खोये हुए सोने के विषय में ।

(५४) सांघातिक भयानक रोग के विषय में, कष्ट की परिस्थिति में, किसी स्त्री के विषय में—पत्नी, कन्या, किसी वादे या इकरार नामे की बाबत—चहारदीवारी सम्बन्धी प्रश्न ।

(५५) मृत्यु के विषय में, किसी खोये हुए कागज या गलत जगह न पहुँचे हुए सन्देश के विषय में—किसी नयी उम्र की लड़की जन समूह या मित्र के विषय में ।

(५६) समुद्र पार विदेश सम्बन्धी-समुद्र यात्रा के विषय में, धार्मिक सम्मेलन, प्रकाशन, जहाज़ या भूत के विषय में ।

(५७) किसी खज़ाने, भंडार या प्राप्त धन-राशि के विषय में किसी विरासत, पेंशन या पुरुष-सम्बन्धी की बाबत ।

(५८) वकील, जज, गुरु, पुरोहित, शास्त्र, वेद, ब्राह्मण, व्यक्तिगत जायदाद, व्यक्तिगत प्रभाव या प्राप्ति के विषय में ।

(५९) मृत्यु-गृह, अस्पताल, रोगी का कमरा, बच्चा, घर में जलती

(६०) किसी पारसी के विषय में, धार्मिक संस्कार–विदेशी नृप, ऋषि, समाधि, ब्रह्म, आकाशस्थित सूर्य, ईश्वर तथा काल विषयक प्रश्न ।

((६१) भोजन या खाद्य विषयक प्रश्न; व्यापार, उत्तम वस्त्र, पुरुष-मित्र, व्यापार स्थान या बाज़ार नौकर या वैष्णव ब्राह्मण विषयक प्रश्न ।

(६२) किसी लेख या इकरारनामे के सम्बन्ध में—किसी वादे कार्य भार या माहिदे की बाबत-कानूनी कार्यवाही, पद, मिल्कियत या पिता विषयक प्रश्न ।

(६३) मृत स्त्री से सम्बन्वित-खोई हुई जायदाद या वस्तु के बारे में । कफ़न का वस्त्र—क्षीणचन्द्र—स्त्री का दहेज (स्त्रीधन), स्नान सम्बन्धी प्रश्न ।

(६४) अपनी पद—स्थिति सम्बन्धी प्रश्न । प्राप्त जायदाद के विषय में, विरासत, वृद्ध मनुष्य, सौदा या वस्तु-परिवर्तन, समय की अवधि सम्बन्धी प्रश्न ।

(६५) छोटी यात्रा और उससे लौट आने के विषय का प्रश्न—जाना और आना—पैदल यात्रा—बन्दकमरा—सुखद कमरे में रहना वहिन, अथवा मंत्र के विषय में ।

(६६) श्मशान—पर्वतीय स्थल या स्थान—खनिज पदार्थ, वैद्य, मृत मित्र, जलता हुआ घर, सूखी भूमि या रेत विषयक प्रश्न ।

टिप्पणी : 'सेफ़ेरियल' ने मंत्र, ईश्वर, ऋषि, ब्रह्म, वैष्णव ब्राह्मण, समाधि, गुरु, पुरोहित, यम, वेद, शास्त्र आदि शब्दों का प्रयोग किया है—जिस से यह निस्सन्देह प्रमाणित होता है कि इस प्रकरण का विषय शुद्ध संस्कृत शास्त्रों से संकलित है ।

(६७) मृत राजा, खोया हुआ सोना, स्त्री का दहेज, करधनी, वीमार वच्चे से सम्वन्धित प्रश्न ।

(६८) छोटी (कम उम्र की) कन्या के सम्बन्ध में—कुटुम्ब सम्बन्धी, विश्वास योग्य पद या ज़मानत सम्बन्धी प्रश्न ।

(६९) वस्त्र, नौका, जहाज़ सौदागरी का सामान, भोजन की वस्तुएँ, व्यापार, वेदांग या व्यापार सम्वन्धी ।

(७०) पत्नी सम्वन्धी प्रश्न, इकरारनामा, जनता के एकत्रित होने का स्थान, पूर्णचन्द्र सम्वन्धी प्रश्न ।

(७१) जलपात्र या 'कुम्भ' विषयक प्रश्न । किसी पुराने परिचित जन या स्थान, या मित्र के सम्वन्ध में । अन्य लोगों से अपने सम्पर्क के विषय में ।

(७२) धन के विषय में—किसी रईस मित्र, ब्राह्मण, धार्मिक सम्मेलन खड़ाऊँ या अन्य जोड़े (दो वस्तु मिलाकर पूर्ण होने) वाले पदार्थ के विषय में ।

(७३) भाई, पद, किसी शासक की मृत्यु, शीघ्रयात्रा, क्रोधयुक्त सन्दे सम्मान-प्रतिष्ठा, उत्तराधिकार अथवा लिखने के विषय में

(७४) चमकते हुए सूर्य के विषय में; गर्विता पत्नी, शक्ति सम्प... शत्रु, आखेट, नेत्र ज्योति, या किसी चमकीले पदार्थ के विषय में ।

(७५) खुशनुमा स्थान, सम्पन्न जमींदारी, मोक्ष, दफ़ीना (पृथ्वी के अन्दर द्रव्य राशि), गाय-भैंस आदि जानवरों के विषय में ।

(७६) पुत्र, विद्यास्थान, पाठशाला स्कूल, नव परिणीता वधू या

सेफ़ेरियल ने 'वेदांग' 'कुंभ, मोक्ष, ब्रह्मचारी, धोती आदि शब्दों का प्रयोग किया है ।

(६०) किसी पारसी के विषय में, धार्मिक संस्कार–विदेशी नृप, ऋषि, समाधि, ब्रह्म, आकाशस्थित सूर्य, ईश्वर तथा काल विषयक प्रश्न ।

(६१) भोजन या खाद्य विषयक प्रश्न; व्यापार, उत्तम वस्त्र, पुरुष-मित्र, व्यापार स्थान या बाज़ार नौकर या वैष्णव ब्राह्मण विषयक प्रश्न ।

(६२) किसी लेख या इकरारनामे के सम्बन्ध में—किसी वादे कार्य भार या माहिदे की बावत-कानूनी कार्यवाही, पद, मिल्कियत या पिता विषयक प्रश्न ।

(६३) मृत स्त्री से सम्बन्धित-खोई हुई जायदाद या वस्तु के बारे में । कफ़न का वस्त्र—क्षीणचन्द्र—स्त्री का दहेज (स्त्रीधन), स्नान सम्बन्धी प्रश्न ।

(६४) अपनी पद—स्थिति सम्बन्धी प्रश्न । प्राप्त जायदाद के विषय में, विरासत, वृद्ध मनुष्य, सौदा या वस्तु-परिवर्तन, समय की अवधि सम्बन्धी प्रश्न ।

(६५) छोटी यात्रा और उससे लौट आने के विषय का प्रश्न—जाना और आना—पैदल यात्रा—वन्दकमरा—सुखद कमरे में रहना बहिन, अथवा मंत्र के विषय में ।

(६६) श्मशान—पर्वतीय स्थल या स्थान—खनिज पदार्थ/ वैद्य, मृत मित्र, जलता हुआ घर, सूखी भूमि या रेत विषयक प्रश्न ।

टिप्पणी : 'सेफ़ेरियल' ने मंत्र, ईश्वर, ऋषि, ब्रह्म, वैष्णव ब्राह्मण, समाधि, गुरु, पुरोहित, यम, वेद, शास्त्र आदि शब्दों का प्रयोग किया है—जिस से यह निस्सन्देह प्रमाणित होता है कि इस प्रकरण का विषय शुद्ध संस्कृत शास्त्रों से संकलित है ।

(६७) मृत राजा, खोया हुआ सोना, स्त्री का दहेज, करधनी, वीमार वच्चे से सम्वन्धित प्रश्न ।

(६८) छोटी (कम उम्र की) कन्या के सम्वन्ध में—कुटुम्व सम्वन्धी, विश्वास योग्य पद या ज़मानत सम्वन्धी प्रश्न ।

(६९) वस्त्र, नौका, जहाज़ सौदागरी का सामान, भोजन की वस्तुएँ, व्यापार, वेदांग या व्यापार सम्वन्धी ।

(७०) पत्नी सम्वन्धी प्रश्न, इकरारनामा, जनता के एकत्रित होने का स्थान, पूर्णचन्द्र सम्वन्धी प्रश्न ।

(७१) जलपात्र या 'कुम्भ' विपयक प्रश्न । किसी पुराने परिचित जन या स्थान, या मित्र के सम्वन्ध में । अन्य लोगों से अपने सम्पर्क के विषय में ।

(७२) धन के विषय में—किसी रईस मित्र, ब्राह्मण, धार्मिक सम्मेलन खड़ाऊँ या अन्य जोड़े (दो वस्तु मिलाकर पूर्ण होने) वाले पदार्थ के विषय में ।

(७३) भाई, पद, किसी शासक की मृत्यु, शीघ्रयात्रा, क्रोधयुक्त सन्दे सम्मान-प्रतिष्ठा, उत्तराधिकार अथवा लिखने के विषय में

(७४) चमकते हुए सूर्य के विषय में; गर्विता पत्नी, शक्ति सम्प... शत्रु, आखेट, नेत्र ज्योति, या किसी चमकीले पदार्थ के विषय में ।

(७५) खुशनुमा स्थान, सम्पन्न जमींदारी, मोक्ष, दफ़ीना (पृथ्वी के अन्दर द्रव्य राशि), गाय-भैंस आदि जानवरों के विषय में ।

(७६) पुत्र, विद्यास्थान, पाठशाला स्कूल, नव परिणीता वधू या

सेफ़ेरियल ने 'वेदांग' 'कुंभ, मोक्ष, ब्रह्मचारी, धोती आदि शब्दों का प्रयोग किया है ।

हस्त-
दन का

ब्रह्मचारी विषयक प्रश्न।

(७७) सफ़ेद पगड़ी या साफ़ा, नौकरानी, औषधि, जल या पीने के सम्बन्ध में।

(७८) किसी वृद्ध मित्र, संस्था, प्रचीन सम्बन्ध, अस्पताल या कारागार स्थित मनुष्य के विषय में।

(७९) अपने विषय में—वृद्धि और समृद्धि विषयक प्रश्न—पद, शक्ति पैर, खड़ाऊँ। किसी वस्तु की अति सीमा विषयक या जज, वकील या समझ के विषय में।

(८०) लाभ, हानि की आशंका, अग्नि से हानि, विदेश की भूमि—दूर स्थान से मृत्यु, प्रलय,[1] यात्रा सम्बन्धी प्रश्न।

(८१) किसी धनिक सम्बन्धी के विषय में, उत्तम वस्त्र, सुनहरी आभूषण, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, पके फल के सम्बन्ध में।

(८२) शांतिमय मृत्यु, बहुमूल्य दहेज, हर्ष समाचार, हाथी की सवारी, लाभ के लिये यात्रा या वहिन के विषय में।

(८३) व्यापार सम्बन्धी। सन्धि या इक़रारनामा सम्बन्धी प्रश्न, जायदाद का ठेका या किराये पर देना—रास्ता या फाटक, नव विवाहित वधू या सगाई के सम्बन्ध में।

(८४) कन्या के विषय में। तालाब या स्नान स्थान, जनमहोत्सव, दुर्गा, छुट्टी, साफ़ वस्त्र, प्रिय पात्र के विषय में।

नाम के अक्षरों से जय—पराजय ज्ञान

प्रत्येक नाम की संख्या वनाकर यह निश्चित करना कि दो व्यक्तियों में से किसकी हार और किसकी जीत होगी—इस विषय

---

१. सेफ़ेरियल ने 'प्रलय' 'दुर्गा' आदि संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है The Kabala of Numbers पृ० १४६

में कई प्राचीन विद्वानों ने नाम के अक्षरों से जय-पराजय चक्र बनाने का प्रकार बताया है। "समरसार" नामक संस्कृत ग्रंथ के आधार पर कुछ चक्र नीचे दिये जाते हैं।

१. जय पराजय चक्र

५	५	३	३	३	६	६	८	८	८	९
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०

जिन दो व्यक्तियों के विषय में विचार करना है—उनके नामाक्षरों की संख्या बनानी चाहिए।

(क) उदाहरण के लिए—

राम = र्+आ+म्+अ = ३+५+५+५ = १८

रावण = र्+आ+व्+अ्+ण्+अ = ३+५+३+५+५ = २६

इस प्रकार दोनों नामों की संख्या बना लेने पर २ से देना। यदि दो का भाग देने पर दोनों में ० शेष आवे—अर्थात् कु. नहीं बचे तो या दोनों में '१' एक शेष आवे तो समझना कि दोनों पक्ष प्रायः समान बली हैं। अन्तिम विजय किसकी होगी यह विचार करने के लिए अन्य प्रकार बताए जावेंगे। यदि २ का भाग देने से एक नाम के अक्षर की संख्या में १ बचे और दूसरे नाम की संख्या में ० बचे तो 'जिसके नामाक्षर-संख्या में '१' बचे उसकी विजय (जीत) होगी।

उपर्युक्त उदाहरण में संख्या १८ तथा २६ आई है। २ से भाग

देने से दोनों में ही ० बचा। इस कारण दोनों पक्ष बली हैं। काफ़ी ठन कर लड़ाई होगी, यह निष्कर्ष निकालना चाहिए।

(ख) जब इस प्रकार से कोई निर्णय न हो सके तो दोनों संख्याओं में ८ का भाग दे। जिस संख्या में अधिक शेष बचे उस संख्या वाले व्यक्ति की विजय होगी।

उदाहरण के लिए १८ तथा २६ इन दोनों में ८ का भाग दिया दोनों में '२' शेष बचा। इस प्रकार से भी यही निर्णय आया कि दोनों पक्ष समान बली हैं। अन्तिम विजय के निर्णय के लिए आगे के चक्रों से सहायता लेनी चाहिए।

२. जय पराजय चक्र

६	३	२	४	८	६	९	४	३	०	१
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०

जासर्व प्रथम नं० १ के चक्र से जय—पराजय का विचार करना ह्हिए। उससे कोई निर्णय स्पष्ट न आवे तब इस द्वितीय चक्र की सहायता लेना उचित है।

राम = र् + आ + म् + अ = २ + ३ + ६ + ६ = १७

रावण = र् + आ + व् + अ + ण् + अ = २ + ३ + ८ + ६ + ३ + ६ = २८

यदि दोनों संख्या १२ से अधिक हों तो दोनों में से बारह बारह घटावे और शेष में आठ का भाग दे। जिसका शेष अधिक हो उसी की विजय होती है। उपर्युक्त उदाहरण में राम की संख्या

बनी १७ और रावण की २८। दोनों में १२ घटाये तो संख्या रही ५ तथा १६। इनमें पृथक् पृथक् ८ का भाग दिया तो शेष रहा ५ तथा ०। राम की संख्या में शेष '५' रावण की संख्या में शेष ० से अधिक है, इस कारण राम की विजय हुई।

३. जय पराजय चक्र

८	४	६	५	७	१	३	२
अ आ इ ई	क	च	ट	त	प	य	श
उ ऊ ऋ ॠ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
लृ लॄ ए ऐ	ग	ज	०	द	ब	ल	स
ओ औ अं	घ	झ	०	ध	भ	व	ह
अः	ङ	ञ	ण	न	म	०	०

यदि उपर्युक्त प्रथम तथा द्वितीय चक्रों में वर्णित प्रकारों कोई निर्णयात्मक उत्तर न आवे तो इस तृतीय चक्र से विचार करना चाहिए।

दोनों नामों में अक्षरों की संख्या बनाकर पृथक पृथक ७ भाग देना चाहिए। जिसके नाम की संख्या में शेष अधिक रहे उसी की विजय होगी।

उदाहरण के लिए राम=र्+आ+म्+अ
=३+८+१+८=२०
रावण=र्+आ+व्+अ=ण्+अ
=३+ ८+३+८+४+८=३४

दोनों में ७ का भाग दिया। शेष दोनों में ही ६ बचा। इसका अर्थ है कि दोनों में युद्ध-बल बराबर है।

इस प्रकरण में राम और रावण दो प्रसिद्ध योद्धाओं के नाम उदाहरण के लिए ले लिये गए हैं। प्राचीन ऐतिहासिक पुरुषों पर

इन्हें नहीं आज़माना चाहिए। जब कोई समस्या सामने हो तब शुद्ध और निर्मल चित्त से निर्णय के लिए इन चक्रों का प्रयोग उचित है।

यदि प्रश्न करने वाला शुद्ध चित्त से ज्योतिषी के पास जाकर आदर पूर्वक प्रश्न करे कि "अमुक स्त्री के पुत्र होगा या कन्या होगी" तब तो प्रश्न का फल मिलेगा। यदि किसी ६० वर्ष की वृद्धा स्त्री का नाम लिखकर पूछे 'इसे' कन्या होगी या पुत्र तो फलादेश नहीं मिलेगा। किसी भी प्रश्न के लिए जब नाम, राशि या कुण्डली का विचार हो या संख्या या अंक-ज्योतिष से विचार करना हो, तो मनमें ास्तिक बुद्धि आवश्यक है। भूतकाल के, उपहास (हँसी मजाक) या ीक्षा के लिए किए हुए प्रश्न ठीक नहीं बैठते। केवल भविष्य-ावषयक प्रश्नों के लिए ही उपर्युक्त चक्र काम में लाने चाहिए।

टिप्पणी—सेफ़ेरियल नामक अंग्रेज ज्योतिषी ने अपनी पुस्तक, (The सर्व .bala of Numbers) के पृष्ठ १४८—१५३ में खोयी हुई वस्तुओं का ... लगाने के लिये १ से ८४ तक के अंकों का फलादेश दिया है।

प्रश्नविषयक विशेष ज्ञान के लिए निम्नलिखित ग्रंथ देखने चाहिए : १. प्रश्न वैष्णव २. प्रश्न भैरव ३. केरल प्रश्न संग्रह ४. केरलीय प्रश्न रत्नम् ५. प्रश्न पयोनिधि ६. प्रश्न भूषण ७. प्रश्न कौमुदी ८. ताजिक नीलकंठी (प्रश्न तंत्र) ९. प्रश्न चूड़ामणि। १०. केवल ज्ञान प्रश्न चूड़ामणि। ११. प्रश्न मार्ग, १२. प्रश्न चंडेश्वर, १३. षट् पंचाशिका, १४. भुवनदीपक, १५. उत्तर कालामृत आदि। ये पुस्तकें गोयल एण्ड कम्पनी दरीबाँ, दिल्ली से प्राप्त की जा सकती हैं।

अंक-ज्योतिष विज्ञान का सार बहुत से ग्रन्थों से लेकर ऊपर दिया गया है। जो शुद्ध ज्योतिष का विषय है वह इन ग्रंथों के अवलोकन से ज्योतिषियों को विशेष उपयोगी होगा।

No. D—2635/50

20 Akbar Road,
New Delhi. the 1st August. 1950

Dear Mr. Ojha.

* * * *

I have jotted such important events as may help you in your astrological research. You will note that the most important events of my life have occurred in the months of February or March, and also in the month of November.

Thanking you,

Yours sincerely,

(G. V. Mavalankar).

To/
Shri Gopesh Kumar Ojha, M.A., LL.B.,

उपर्युक्त पत्र में ४३ से अधिक पंक्तियां है। केवल अंतिम ४ पंक्ति दी गई हैं। (देखिये पृष्ठ १५६)

स्वर्गीय मुखम चेटी (फाइनेंस मिनिस्टर गवर्नमेण्ट ऑफ इंडिया) का एक नीचे दिया जाता है।

5 QUEEN VICTORIA
NEW DELHI
7th October 19

* * * *

I must thank you for the
that you have taken in my career.

Yours sincerely,

(R.K. Shanmukham Chetty)

Mr. Gopesh Kumar Ojha.

उपर्युक्त पत्र लम्बा है। केवल अंतिम अंश दिया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट पुरुषों की जीवनी का उल्लेख किया जा सकता है। परन्तु बहुत से सज्जन नहीं चाहते कि उनके जीवन की घटनाओं पर, मुद्रित पुस्तक में प्रकाश डाला जावे।

ज्योतिष कला-निधि पं० गोपेशकुमार ओझा

एम० ए०, एल-एल० बी० की अनुपम कृति

हस्तरेखा विज्ञान

[शरीर लक्षण सहित]

आयु, स्वास्थ्य, धन-संपत्ति, प्रेम, विवाह, स्वभाव, चरित्र आदि जीवन से ी हुई, प्रिय एवं अप्रिय घटनाओं के सम्बन्ध में जानने की उत्सुकता एवं ना प्रत्येक व्यक्ति में होती है—प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि उसे निरन्तर ाता मिलती चली जाय।

ज्योतिष शास्त्र मनुष्य की इसी जिज्ञासा की पूर्ति करता है तथा उसे ा प्राप्त करने का मार्ग दिखाता है। ज्योतिष के प्रधान अंग, हस्तरेखा- की उपयोगिता भी इस दिशा में सर्वविदित है। इसीलिए योरुप आदि भी इसका आदर हुआ है और इसके सम्बन्ध में कितने ही ग्रन्थ लिखे परन्तु भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस विषय में पूर्ण एवं प्रामाणिक ा अभाव था। प्राच्य और पाश्चात्य विद्याओं के समान पंडित, ज्योतिष परम पारंगत ओझा जी ने अपने इस अनुपम ग्रन्थ द्वारा उस अभाव ा पूर्ति कर दी है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों और आधुनिक पाश्चात्य साहित्य के विशाल भण्डार का पूर्ण अनुशीलन करने के बाद उसका तत्व निकाल कर रख दिया गया है जिसे देखकर विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से कहा है कि हिन्दी में हस्तरेखा विज्ञान पर ऐसा प्रामाणिक, विस्तृत और सचित्र ग्रन्थ आज तक प्रकाशित नहीं हुआ।

ग्रन्थ का आद्योपांत मनन कर लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति की हथेली में उसका भूत, भविष्य और वर्तमान देख लेगा और अपनी शक्ति से लोगों को चौंका देगा।

६०० पृष्ठों और १५० चित्रों वाले प्रत्येक दृष्टि से विशिष्ट ग्रन्थ का मूल्य केवल ८) रखा गया है। डाक व्यय १।।) पृथक् होगा।

प्रकाशक—गोयल एण्ड कंपनी दरीबा, दिल्ली।

वायदे और तैयारी दोनों काम में सहायक

व्यापार रत्न

जिसमें सोना, चाँदी, रुई, गुड़, ग्वार, मटर, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, शेयर, ताँबा,लोहा, घी, गेहूँ और वारदाना आदि के सदैव के लिये तेजी-मन्दी के शास्त्रीय नियम व कुछ विशेष उपाय और अपने तमाम जीवन के अनुभव सरल भाषा में लिखे हैं।

पाठकों के ज्ञान के लिए कुछ संकेतमात्र नीचे दिये जाते हैं :—

(१) प्रत्येक वस्तु की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक टकेवार तेजी-म रीत्र निकालने की विधि व प्रति, युति, शर आदि का जिन-जिन पर विशेष कथ पड़ता है—उसका उल्लेख।

(२) कुछ विशेष व्यक्तियों के इस लाइन पर अनुभव और किस प्रव अंकों लोग सफल हुये!

(३) जन्मपत्री व राशिज्ञान से वायदे और तैयारी के काम में ल या नहीं, यदि होगा तो किस वस्तु से?

(४) वार-वार असफल रहने वालों के लिये हमारी सलाह।

(५) लक्ष्मी-प्राप्ति और परेशानी दूर करने के लिये कुछ अनु यंत्र,मंत्र, जप और सिद्धियाँ।

(६) गृह-स्थिति के अनुसार १२ संक्रान्तियों का विस्तृत व स्पष्ट फलादेश।

(७) किसी व्यक्ति को किस व्यवसाय से लाभ हो सकता है—इस पर वैज्ञानिक प्रकाश।

ऐसी ही और भी अनेक बातें हैं जो स्थान की कमी के कारण नहीं दी जा रही हैं।

पुस्तक की विशेषता है कि जहाँ यह ज्योतिषियों व ज्योतिष प्रेमियों के लिये उपयोगी है वहाँ साधारण पढ़े-लिखे व्यापारी भी स्वयं पढ़कर सावधान रहते हुये लाभ उठा सकते हैं।

पुस्तक को देखकर कहना उचित होगा कि अपने विषय पर यह सचमुच में रत्न कहलाने योग्य है।

मूल्य ८) डाक खर्च १॥) अलग

प्रकाशक—गोयल एण्ड कम्पनी दरीबा, दिल्ली।

वेदान्त ज्ञान का अनुपम ग्रन्थ

श्री पंचदशी

सटीक पीताम्बरी भाष्य

विजय नगर राज्य के संस्थापक श्री विद्यारण्य मुनि को आदि जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के बाद वेदान्त-विज्ञान का आचार्य माना गया है। आपका होगा हुआ "श्री पंचदशी" बहुत उच्च कोटि का वेदान्त ग्रन्थ है। इसके पन्द्रह ...णों में से एक प्रकरण का भी गुरु द्वारा श्रवण और मनन करने वाला मिले मुक्ति का मार्ग पा जाता है।

...ान्त के ऐसे अनुपम ग्रन्थ पंचदशी पर अनेक टीकाएँ हुई हैं परन्तु उन ...ह्मनिष्ठ पं० पीताम्बर जी की तत्व प्रकाशिका हिन्दी व्याख्या का अत्य- ...रर हुआ है। यह व्याख्या बहुत पहले हुई थी और उसकी भाषा बदले ...ीक्षा की दृष्टि से पुरानी पड़ गई थी तथा बाजार में बहुत प्रयत्न करने ...प्राप्त न होती थी। इसलिए समय की पुकार को समझते हुए, पुरानी ...ा समुचित संस्कार कर दिया है जिससे यह उपयोगी ग्रन्थ सर्वजन ... गया है।

...वेदान्त शिरोमणि श्री १००८ जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज ने पंचदशी के इस नवीन संस्करण पर विस्तृत भूमिका लिखकर सोने में सुगन्ध भर दी है।

संस्कृत शास्त्रों के मर्मज्ञ, लोक सभा के अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम् आयंगर जी ने भी इतने व्यस्त रहते हुए अपना अमूल्य समय लगाकर इस ग्रन्थ को देखकर प्रसन्नता प्रकट की और अमूल्य निधि बतलाया। उनका यह लेख पुस्तक परिचय के नाम से ग्रन्थ में मौजूद है।

प्रचार की दृष्टि से ८०० आठ सौ पृष्ठ के ऐसे सर्वाङ्ग सुन्दर ग्रन्थ का मूल्य केवल आठ रुपये व डाक खर्च १।।) रखा गया है। कपड़े की पक्की जिल्द और मनोहर कवर से सजी ऐसी पंचदशी के लिए यह मूल्य न्यौछावरमात्र है।

मँगाने का पता—

गोयल एण्ड कम्पनी बुकसेलर, दरीबा दिल्ली—६